# श्रीदुर्गासप्तशती

( मूल पाण्डुलिपि सहित )

पाण्डुलिपिकार - प० भवनाथ मिश्र

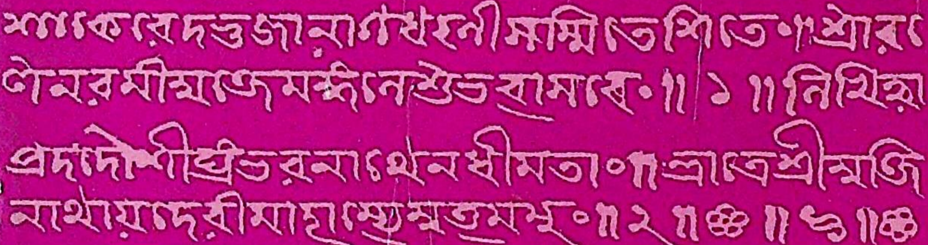

मिश्रबन्धु प्रकाशन, जमुथरि, मधुबनी

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

स्व॰ प॰ भवनाथ मिश्र

जन्म - 1879 ई॰

स्वर्गमन- अग्रहण शुक्ल चतुर्थी, 1933 ई॰

ग्राम - जमुथरि, पो॰-हटाढ़ रुपौली, झंझारपुर, मधुबनी ( बिहार )

पित्र [illegible] मिश्र

मूल - हरिअम्म बलिराजपुर

गोत्र [illegible]

गुरु [illegible] श्रीकृष्ण सिंह ठाकुर।

रचना -

त्रैभाषिक शब्दकोष 'मिथिला-शब्दप्रकाश' जाहिमे मैथिली, हिन्दी एवं संस्कृत पर्याय लिंग निर्णय आ प्रमाणक संग देल गेल अछि। एकर प्रथम खण्ड ( अ सँ अः धरि )क प्रकाशन 1914 ई॰ मे बनारस सँ भेल।

हस्तलेख -

हरिवंश-पुराण, दुर्गासप्तशती आदि अनेक लेख उपलब्ध अछि। सुन्दर अक्षरक लेल सामयिक पण्डित मण्डलीमे प्रसिद्ध रहथि।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

मिश्रबन्धु प्रकाशनमालाक एगारहम पुष्प

मैथिल-परम्पराक प्रमाणिक प्रस्तुति

# श्रीदुर्गासप्तशती

(मूल पाण्डुलिपि सहित)

पाण्डुलिपिकार

## प० भवनाथ मिश्र

मिश्रबन्धु प्रकाशन, जमुथरि,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

The Maithil-verson of the holy book of Shakt-cult, the ***SHRIDURGASAPTASHATI*** also known as ***SHRI SHRI CHANDI*** published with the manuscript written in Tirahuta i.e. Mithilakshar, (the script of mithila) by Pt. Bhavanath Mishra (1879-1933 A.D.), the prominent traditional scholar of Sanskrit and Maithily language, inhabitant of village Jamuthari, Madhubani, Bihar.

---

प्रकाशक :

**मिश्रबन्धु प्रकाशन,**

जमुथरि, पत्रा०- हटाढ़-रुपौली,
द्वारा-झंझारपुर, जिला- मधुबनी,
बिहार।

सम्पर्क : डा0 मोहनाथ मिश्र
दूरभाष 9431025567

सर्वाधिकार - दामोदरेश्वरी दुर्गामन्दिर, जमुथरि

प्रथम संस्करण 2008 ई०
1000 प्रतियाँ

मूल्य - सजिल्द 41.00 रु०
साधारण 21.00 रु०

मुद्रक :
मे० सरस्वती प्रेस,
पूर्वी बोरिंग कनाल रोड,
पटना।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

# सन्दर्भ

प्रस्तुत दुर्गापोथीक हस्तलेख प0 भवनाथ मिश्र, ग्राम- जमुथरि, पो0- हटाढ़ - रुपौली, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, बिहारक अछि। एहि मादे पोथीक अन्तमे स्वयं प0 भवनाथ मिश्र लिखै छथि जे ओ एकर प्रति अपन जेठ भाई श्री मुक्तिनाथ मिश्र हेतु तिथि शक संवत् 1824 के श्रावण मासक नवमी तिथि मंगल दिन के अर्थात् इस्वी सन् 1902, दि0 12 अगस्त के लिखब सम्पन्न कएलनि। उत्तम हस्तलेखमे धार्मिक ग्रन्थक प्रति करबाक मिथिलामे परम्परा छल। एहि सँ उक्त परम्पराक निर्वाह ओ रक्षा दुनू होइत रहल अछि। प0 भवनाथ मिश्रक अनेक हस्तलेख एहि तथ्यक पोषक अछि। कारण जे प0 मिश्रक हस्तलेखमे हुनक सन्तति सब लऽग अखनो श्री श्री हरिवंश-पुराण, 'मिथिलाशब्दप्रकाश' (त्रिभाषा - मैथिली - हिन्दी - संस्कृत शब्दकोश), विषयावली (तन्त्र-मन्त्र साधना) ओ अनेक अन्य ग्रन्थ सुरक्षित अछि, जकर प्रकाशन हेतु प्रयास भऽ रहल अछि आगू भगवतीक इच्छा।

एहि पोथीक प्रकाशन सन्दर्भमे विनीत भावसँ किछु तथ्य प्रस्तुत करबाक अछि जे प0 भवनाथ मिश्रक चारि पुत्र दस गोटे पौत्रलोकनि एवं पन्द्रह प्रपौत्रमे सँ कतिपय व्यक्तिक उत्साह एवं अदम्य इच्छाशक्तिसँ ई प्रकाशित भऽ उपलब्ध भऽ रहल अछि। हुनका लोकनिकें ई निर्णय लेबाक छलनि जे पारिवारिक परम्पराक वस्तुके सार्वजनिक कएल जाय तऽ कोन रूपे। अद्यावधि उपलब्ध दुर्गापोथीक प्रतिरूपमे अथवा उपलब्ध सामग्रीके आधार कऽ के। अखन धरि एकर उपयोग पारिवारिक दुर्गामन्दिरमे कएल जाइत रहल छल। पूर्व में प0 तेजनाथ मिश्र एहि प्रति सं.. पाठ करैत छलाह। प0 भवनाथ मिश्रक पिता प0 दामोदर मिश्र 1855 ई0मे दुर्गामन्दिर बनौने छलाह। भगवतीक इच्छानुकूल एकर पुनर्निर्माण 1995 ई0 मे भेल आ स्थानक नाम पड़ल 'माँ दामोदरेश्वरी दुर्गा मंदिर'।

प0 भवनाथ मिश्रक पौत्र सबमे पैघ आ कमौआ सब अर्थ उपलब्ध कराओल आ अन्य समांगे लागल रहलाह। एहि उत्साहक क्रममे ई निर्णय भेल जे प0 मिश्रक हस्तलेखके प्रकाशित कएल जाए। परञ्च भगवतीक आदेशसँ एकर प्रकाशन विलम्बित भऽ 2008 मे भऽ सकल अछि।

प्रस्तुत दुर्गापोथीमे वामकात मिथिलाक्षरमे मूल लेखके फोटोशॉपमे कएल गेल स्कैन कॉपीके कोरल ड्रा पर ट्रेसिंग कऽ राखल गेल अछि आ तदनुरूप ओकर देवनागरीमे अनुवाद दहिना कात राखल गेल अछि, जे पेजमेकर

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

पर कएल गेल अछि। एहिमे कएक गारक काज छलै। मूल हस्तलेखके पठनीय स्तरक बनाकऽ छापब। पंक्ति सँ पंक्ति मिला कऽ ओकर देवनागरी अनुवादमे शुद्धता संग क्रमबद्ध करब। अलग-अलग वस्तुके एकसंग छापब। मिश्रबन्धु परिवारक अधिकांश सदस्य वैचारिक एवं व्यावहारिक स्तर पर एहिकाजमे तत्पर छलाह परञ्च परिवार सँ निकलि समाजक समक्ष एहि मिथिला परम्पराक दुर्गापोथीक धरोहरके समर्पित करैक एहि अवसर पर हटाढ़-रुपौलीक प0 भवनाथ झा, जे वर्त्तमानमे महावीर मंदिर, पटनामे प्रकाशन प्रभारी छथि, कें साधुवाद देब आवश्यक अछि। एहि निर्णयके बाद जे एहि पोथीके समाज हेतु छापल जाय एकर प्रकाशन क्रममे कोनो अवसर एहन नहि छल जाहिमे ओ संग नहि रहलाह। विशेषकऽ कम्प्यूटर पर हस्तलेखक प्रकाशनस्वरूप निर्धारण ओ शब्द समूह अनुवादमे। संगहि संगणक श्री रश्मिरथीक योगदान सराहनीय रहल आ मुद्रक तत्पर छलाह से तथ्य थीक।

प0 भवनाथ मिश्रक वंशज लोकनि एकर प्रकाशन हेतु प्रतिदिन भगवती सँ प्रार्थना आ अर्थ-समांगे प्रयास करैत रहला। प्रकाशन पूर्व सँ समाजक लोक एकर प्रति उपलब्ध करेबाक हेतु तगेदा करैत रहलाह अछि।

माँ दामोदरेश्वरीक चरणमे एहि पुस्तकके समर्पित करैत अपने लोकनिसँ ई निवेदन अछि जे मिथिला परम्पराक एहि दुर्गापोथीसँ पाठ करी। थोड़बे दिनमे मिथिलाक्षर सेहो स्पष्ट हुअऽ लागत। मोन लागे तऽ अप्पन लिपिके, 'मिथिलाक्षर' के अभ्यास करी। भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित भऽ गेलाक उपरान्त प्रत्येक मैथिल के ई कर्त्तव्य छनि जे एहि दिशामे प्रयास करथि। सुलभ सन्दर्भ हेतु भारतीय भाषा सर्वेक्षण (1911 ई0)के अनुसार मैथिलीभाषी क्षेत्रक मानचित्र एवं मिथिलाक्षरक वर्त्तमान वर्णमाला अलगसँ पुस्तकमे देल अछि।

एहि दुर्गापोथीमे प0 मिश्रक हस्तलेख उपलब्ध कराओल गेल अछि। दुर्गा-पोथी क एहि सस्करणमे कतिपय विषयवस्तुक समावेश एही कारणें नहि कएल गेल अछि जे ओकर हस्तलेख उपलब्ध नहि भेल। विद्वान् लोकनि सँ निवेदन अछि जे दुर्गापोथीमे पाठक्रम, श्लोकक्रम, अध्याय प्रारम्भ-अन्त ओ अन्य पूजा-अर्चनामे सँ कोन-कोन वस्तुक समावेश कोन क्रममे हेबाक चाही ताहि पर अपन अभिमत ओ निर्णय यथाशीघ्र पठाबथि जाहिसँ तत्परतापूर्वक एहि दुर्गापोथीक संशोधित, परिवर्द्धित आ परिपूर्ण संस्करण समाज के तत्काल उपलब्ध करेबाक प्रयत्न कएल जाय।

माँ दामोदरेश्वरीक कृपा सदिखन सब पर बनल रहै, एहि कामनाक संग ई पोथी हुनके चरणमे समर्पित अछि।

डा0 मोहनाथ मिश्र

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

# ज्ञापन

दुर्गासप्तशती क सम्पादनमे ई एकटा नव प्रयोग थिक; अपन प्राचीन परम्पराक प्रामाणिक दर्शन थिक।

रामायण, महाभारत, पुराण आदि लौकिक आर्षग्रन्थक क्षेत्रीय परम्परा रहलैक अछि। पण्डित लोकनि आदर्श पाण्डुलिपि सँ उतारैत ग्रन्थ सभक संरक्षण आ प्रचार-प्रसारमे लागल रहलाह। 'लेखकस्य पाठकस्य च शुभं भूयात्' अर्थात् लिपिकार आ ओकर पाठक दुनूक शुभकामनाक धार्मिक अवधारणा एहि प्रवृत्ति के आर उदात्त बनओलक। ''यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितम्मया। यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयताम्'' अर्थात् ''जो देख्या सो लेख्या'' क घोषणाक वादो किछु रचनात्मक प्रवृत्तिक श्रेष्ठ विद्वान् प्रतिलिपिकार लोकनि अपन सांस्कृतिक धारासँ प्रभावित भए प्राचीन काल सँ आर्षग्रन्थमे पाठान्तर करैत रहलाह, श्लोक बनाक' जोड़ैत रहलाह। ओना तँ पाठान्तर आ 'प्रक्षेप' शब्द अपकृष्ट वस्तुक बोध करबैत अछि, मुदा आर्षग्रन्थक सन्दर्भमे ओ अंश क्षेत्रीय सांस्कृतिक इतिहासक एकटा महत्त्वपूर्ण स्रोत बनि जाइछ तें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। उपासना-साधना सँ सम्बद्ध आर्षग्रन्थमे तँ ओ परिवर्त्तन, परिवर्द्धन आ स्वरूप-निर्धारण आर महत्त्वपूर्ण भए जाइत अछि। कारण जे उपासना आ साधनामे गुरुक अवधारणा सभसँ प्रबल होइत छैक। ई मान्यता अछि जे गुरुक परम्परा सँ हटि क' कोनो उपासना सफल नहि होइछ। एहि कारणें क्षेत्रीय पाठ गुरु-वचन जकाँ प्रतिष्ठा पाबि ओहि परिवेशक साधक लोकनिक मार्गदर्शक बनैत अछि।

जा धरि छापाखाना नहि छल ओ परम्परा अक्षुण्ण रहल। प्रतिलिपिकार लोकनि प्राचीन आदर्श ग्रन्थ सँ उतारैत रहलाह। उनैसम शताब्दीमे जखनि छापाखाना भारतमे खोलल गेल तँ पाण्डुलिपिक आधार पर पुस्तकक सम्पादन भेल आ ओकरा व्यापक रूप देबाक लेल प्रकाशन संस्था सभ अपन अपन किछु सिद्धान्त निर्धारित कएल। संस्कृतक वर्त्तनी पर आ तज्जन्य उच्चारण पर एकर प्रभाव सभ सँ बेसी पड़ल। ओहि कालक

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

विद्वान् सम्पादक लोकनि किछु तँ छापाखानाक सीमाक कारणें मन मसोड़ि क', तँ किछु सर्वजनसुलभ बनएबाक फेरमे उत्साहित भए वर्तनीमे परिवर्तन कएलनि। द्वित्व कें वैकल्पिक बूझि बहुत सीमा तक ओतए एके वर्ण लिखाए लागल जाहि सँ ओकर 'वोल्यूम' घटि गेल। 'क' एवं 'ख' वर्णसँ पूर्व विसर्गक स्थानमे जिह्वामूलीय आ 'प' एवं 'फ' सँ पूर्व ऊपध्मानीय विलुप्त भए गेल। जिह्वामूल आ ओष्ठ सँ उच्चरित वर्णक स्थानमे कण्ठ्य विसर्ग रहि गेल, जकर प्रभाव उच्चारण पर पड़ल। काव्यादिमे तँ कोनो बात नहि, मुदा ध्वनि-प्रधान मन्त्रादिमे एकर दुष्प्रभाव पड़ल। एहिना सम्पादक लोकनि पदके अलग-अलग लिखवा पर जोर देलनि। जेना ''यथान्यायय्यँथार्हन्तेन'' क स्थानमे ''यथान्यायं यथार्हं तेन'' लिखल जाए लागल। इहो उच्चारणके प्रभावित कएलक। आधुनिक भारतीय भाषाक तर्ज पर 'शंकर', 'चंचल' आदि जकाँ अनुस्वारक स्थानापन्न परसवर्ण विलुप्त भए गेल।

संगहि विभिन्न क्षेत्रक पाठ जखनि सुलभ भेल तँ सम्पादक लोकनि पाठान्तर ग्रहण कए 'खिच्चड़ि' बनएबाक लोभ संवरण नहि कए सकलाह। राष्ट्रीयता क व्यापकता सँ क्षेत्रीय सूक्ष्मता प्रभावित भेल। एहि सँ मिथिलाक अपन परम्पराके हानि पहुँचलैक।

आइ एक दिस आधुनिक जगत् मन्त्रक ध्वन्यात्मक प्रभाव पर शोध कए रहल अछि, आ ओकर उच्चारण द्वारा उत्पन्न तरंगक प्रभावके रेखांकित कए रहल अछि, दोसर दिस संस्कृतके सर्वजनसुलभ बनएबाक लेल ओकर उच्चारण आइ सय वर्षमे परिवर्तित भए गेल अछि।

आइ शिक्षाक व्यापक प्रचार प्रसार भए रहल अछि। भाषाक अपन ध्वनिके सुरक्षित रखबाक लेल रोमन लिपिमे सेहो Unicode बनि गेल अछि। कम्प्यूटरक अपरिमित विकास सँ आइ प्रकाशन क्षेत्रमे कोनो कार्य कठिन नै रहि गेलैए; सीमाबद्ध नहि रहि गेलैए। पाठकोक शैक्षणिक स्तर विकसित भए रहल छनि। एहि स्थितिमे अपन क्षेत्रीय धरोहरके मूल रूपमे प्रकाशित करबाक आवश्यकता अनुभव कएल गेल आ एहि प्रकारक संस्करण आइ अहाँ सभक हाथमे अछि। एहि पाण्डुलिपिक पुष्पिका सँ एकर लेखन काल क सूचना भेटैत अछि। एहि मे कहल गेल अछि जे शक संवत् वेद[4] भुजा[2] नाग[8] धरणी[1] अर्थात् 1824 तदनुसार 1902 ई0 मे श्रावण मासक (शुक्ल पक्ष) नवमी तिथि मंगल दिन प0 भवनाथ मिश्र एकर लेखन कए अपन भ्राता मुक्तिनाथ मिश्रकें ई देवी माहात्म्य देलनि। गणनाक अनुसार ई दि0 12-08-1902ई0 होइत अछि।

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ई वस्तुत: पाण्डुलिपिक प्रकाशन थिक। दहिना पृष्ठ पर एकर देवनागरी लिप्यन्तरण देल गेल अछि। एक पंक्तिमे जतेक अक्षर मूलमे अछि, ओतबे देवनागरियोमे। एहिसँ पाण्डुलिपि शास्त्र, मिथिलाक्षर लिपि आ गैरिक-सूत्र एहि तीनूक संरक्षण होएत। कोनो उत्साही पाठक एहि सँ मिथिलाक्षरो आसानी सँ सीखि सकैत छथि। देवनागरीमे वर्तनी मूल मिथिलाक्षरक अनुरूप अछि। ऊपध्मानीय आ जिह्वामूलीयक यथास्थान प्रयोग अछि जकर उच्चारण एना होएत -

| | | |
|---|---|---|
| क | - | ह्क (hk) |
| ख | - | ह्ख (hkh) |
| प | - | ह्प (hp) |
| फ | - | ह्फ (hph) |

पाण्डुलिपि लेखनशैलीक अनुरूप एतहु मूलमे सभटा पद एक शिरोरेखामे बिना अन्तरालक लिखल जा सकैत छल। देवनागरियोमे किछु पुराण-साहित्य एहि रूप सँ छपल अछि। मुदा एतए पाठकक सुविधा लेल एहने स्थल पर अन्तराल देल गेल अछि, जतए उच्चारणक स्तर पर अथवा अर्थक स्तर पर एक पद दोसरसँ सर्वथा पृथक् अछि। जतए मूललिपिकार परसवर्णक प्रयोग करैत छथि ओतए ओहिना एक शिरोरेखामे राखल गेल अछि। कतहु कतहु मूल पाण्डुलिपिमे वर्तनीमे सामान्य प्रमाद सेहो छैक, जेना, तृतीय अध्यायक तेरहम श्लोकमे मूलमे साक्षिनत् अछि जतए 'साच्छिनत्' हेबाक चाही। एहिना ओही पृष्ठ पर 21म श्लोकमे 'स' स्थान पर 'श' अछि। एतए देवनागरीमे शुद्ध पाठ देल गेल अछि। कतहु कतहु उच्चारणक अनुरोधें एहनो प्रयोग भेल अछि जे व्याकरणक दृष्टि सँ अमान्य अछि, जेना- 'ढ़' एवं 'ड़' वर्णक प्रयोग, यकारक स्थानमे जकारक प्रयोग, वकारक पूर्ववर्ती अनुस्वारक स्थानमे मकार, पूर्वरूप एवं पररूप सन्धिमे अवग्रहक अभाव आदि। ई सभटा प्रयोग पाण्डुलिपि-लेखनक सामान्य वस्तु थिक, जे हमरा जनैत उच्चारणक अनुरोधें लिखल जाइत छल होएत। 'ढ़' एवं 'ड़' वर्णक प्रयोग क्रमश: वैदिक स्वर 'ळ' एवं 'ळ्ह'क अवशेष थिक। एहि सभ स्थल पर यथावत् देवनागरीमे देल गेल अछि।

गीताप्रेस, गोरखपुर सँ प्रकाशित दुर्गासप्तशती सँ पाठ कएनिहार के अर्गला, कीलक आ कवचक ई क्रम अनसोहाँत लगतनि। मुदा जनबाक चाही जे मिथिला, बंगाल, आसाम, नेपाल आ काश्मीरमे इएह क्रम प्रचलित अछि। तें एतए कोनो ऊहापोह नहि करबाक चाही।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

एहि पाण्डुलिपिमे नवार्ण मन्त्र, न्यास आ ध्यान मूल लिपिकारक लिखल नहि थिक। ओ हुनक ज्येष्ठ पुत्र वैयाकरण प0 तेजनाथ मिश्रक अक्षरमे अछि। एकर अक्षर बड़ महीन अछि, तें एहि तीन पृष्ठके क्षैतिज रूपमे व्यवस्थित करए पड़लैक,, नहिं तँ पाण्डुलिपिक अक्षर पठनीय नहि रहैत।

दुर्गासप्तशतीक दूटा रूप प्रचलित अछि - पाठात्मक आ मन्त्रात्मक। पाठात्मक सप्तशतीमे अध्यायक आ चरितक विभाजन अछि। प्रत्येक अध्यायक पृथक् मन्त्र-संख्या छैक। तथापि मिथिलामे सत्यनारायण कथा जकाँ अखण्ड पाठक परम्परा रहल अछि। बिना कोनो विरामक अखण्ड पाठ श्रेष्ठ कल्प थिक। प्रत्येक अध्यायक अन्तमे **''महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः''** एहि सँ प्रणाम कए जल देबाक सर्वाधिक प्रचलित परम्परा रहल अछि।

सप्तशतीक अंगक रूपमे विभिन्न संस्करणमे सप्तश्लोकी दुर्गा, दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला, ऋग्वेदोक्त रात्रिसूक्त, मूर्तिरहस्य, प्राधानिकरहस्य, वैकृतिकरहस्य आ अन्यान्य स्तोत्र सभ भेटैत अछि। मुदा एतए केवल अर्गला, कीलक, कवच, शापोद्धार, नर्वाणमन्त्र, न्यास, ध्यान आ अन्तमे ऋग्वेदोक्त देवीसूक्त अछि। एतेक सप्तशती पाठक न्यूनतम अंग थिक। विशेषक अन्त नहि छैक।

एकरा प्रकाशित करबाक श्रेय श्री मोहनाथ मिश्र कें छनि। एकरा प्रति हुनक अनुराग स्मरणीय रहत। हम यथामति एकर मूलके देवनागरीक माध्यमसँ पठनीय बनाओल। सुधी पाठकसँ निवेदन जे जँ कतहु त्रुटि रहि गेल हो तँ मार्ग दर्शन करथि, जाहि सँ दोसर संस्करणमे सुधार कएल जा सकए।

विदुषां वशँव्वदः
भवनाथ झा

शारदीय नवरात्र, 2065

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

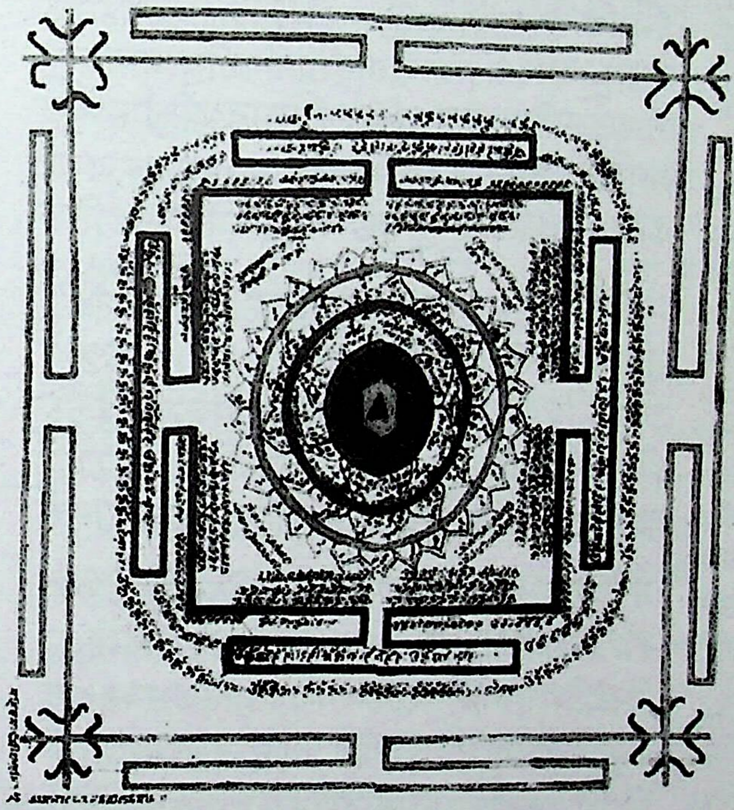

महिषासुरमर्द्दिनी यन्त्र

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ওঁনমশ্চণ্ডিকায়ৈ॥ চণ্ডিকাসপ্তশতিকাপ্রথমচরিত
স্যব্রহ্মাঋষির্মহাকালীদেবতাগায়ত্রীছন্দোনন্দাশ
ক্তীরক্তদন্তিকাবীজমগ্নিস্তত্ত্বং মহালক্ষ্মীপ্রীত্যর্থে জ
পেবিনিয়োগঃ॥ মার্কণ্ডেয়উবাচ॥ ব্রহ্মন্কেনপ্র
কারেণভক্তিমাহাত্ম্যমুত্তমম্॥ শীঘ্রংসিদ্ধ্যতিত

ন্মেব্রূহিকথয়স্বমহামতে॥ ব্রহ্মোবাচ॥ শৃণ্বন্কী
নকথাদৌজপিত্বাকরঠজাপিতে॥ জাপাসপ্তশ
তীপাঠাৎক্রমতএবশিরোদিতঃ॥ শৃণ্বন্স্মরতিহৃ
ন্নিক্ষীনকফনদন্তথা॥ করঠরক্ষাতেনিতচণ্ডি
কাত্রিতয়ন্তথা॥ শৃণ্বন্হৃদয়যস্যতথানন্দ

নরাগমো॥ ভবিষ্যতীতিনিশ্চিন্তাপিরেনবাচিতীর্থ
বা॥ কীনকহৃদয়যস্যমকীনকমনোরথঃ॥ ভ
বিষ্যতিনসন্দেহোনান্যথাশিবভাষিতম্॥ কর
ঠহৃদয়যস্যমরন্ত্রকবচঃখলু॥ ভবিষ্যতীতি
নিশ্চিন্তত্রশালানির্মিতৈর্বা॥ মার্কণ্ডেয়উবাচ॥

জয়ত্বন্দেবিচামুণ্ডেজয়ভূতাপহারিণি॥ জয়সর্ব্বগ
তেদেবিকালরাত্রিনমোঽস্তুতে॥ জয়ন্তীমঙ্গ
লাকালীভদ্রকালীকপালিনি॥ দুর্গাক্ষমাশিবা
ধাত্রীস্বাধাস্বাহানমোঽস্তুতে॥ মধুকৈটভবিদ্রাবি
বিধাত্রিবরদেনমঃ॥ রূপংদেহিযশোদেহিজ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

# अथ अर्गलास्तोत्रम्

ॐ नमश्चण्डिकायै॥ चण्डिकासप्तशतिकाप्रथमचरितस्य ब्रह्मात्रृषिर्म्महाकालीदेवता गायत्रीच्छन्दो नन्दाशक्तीरक्तदन्तिकाबीजमग्निस्तत्त्वं महालक्ष्मीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥ मार्क्कण्डेय उवाच॥ ब्रह्मन् केन प्रकारेण दुर्गामाहात्म्यमुत्तमम्। शीघ्रं सिद्ध्यति तत्सर्व्वं कथयस्व महामते॥ ब्रह्मोवाच॥ अर्गलं कीलकञ्चादौ जपित्वा कवचं जपेत्। जपेत्सप्तशतीं पश्चात्क्रम एष शिवोदितः। अर्गलं दुरितं हन्ति कीलकं फलदन्तथा। कवचं रक्षते नित्यं चण्डिका त्रितयन्तथा। अर्गलं हृदये यस्य तथानर्गलवागसौ। भविष्यतीति निश्चित्य शिवेन रचितं पुरा। कीलकं हृदये यस्य स कीलकमनोरथः। भविष्यति न सन्देहो नान्यथा शिवभाषितम्। कवचं हृदये यस्य स वज्रकवचः खलु। भविष्यतीति निश्चित्य ब्रह्मणा निर्म्मितं पुरा। मार्क्कण्डेय उवाच ॥

जय त्वन्देवि चामुण्डे जय भूतापहारिणि। जय सर्व्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तुते ॥ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनि। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तुते ॥ मधुकैटभविद्रावविधात्रि वरदे नमः ॥ रूपन्देहि यशोदेहि ज

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

যন্দেহি দ্বিষোজহি॥ মহিষাসুরসৈন্যান্তবিধাত্রিবুর
দেনমঃ॥ রূপংদেহিজয়ংদেহি যশোদেহি দ্বিষোজহি
মহিষাসুরশীঘ্রবিধাত্রিবুরদেনমঃ॥ রূপংমূ০॥ ধূ
ম্রনোচনদর্পান্তবিধাত্রিবুরদেনমঃ॥ রূপংমূ০॥ চ
ণ্ডমুণ্ডপ্রমথনবিধাত্রিবুরদেনমঃ॥ রূপংমূ০॥ রক্ত
বীজজনভঞ্জনবিধাত্রিবুরদেনমঃ॥ রূপংমূ০॥ নি
শুম্ভপ্রাণসংহারবিধাত্রিবুরদেনমঃ॥ রূপংমূ০॥ শু
ম্ভরাক্ষসনির্নাশবিধাত্রিবুরদেনমঃ॥ রূপংমূ০॥ ব
ন্দিতাঙ্ঘ্রিযুগেশ্রীদেবিসৌভাগ্যদায়িনি০॥ রূপংমূ
অচিন্ত্যরূপচরিতেসর্বশত্রুবিনাশিনি০॥ রূপংদে

নতেভ্যঃসর্বদাভক্ত্যাচণ্ডিকেদুরিতাপহে০॥ রূপংমূ০॥
স্তুবদ্ভ্যোভক্তিপূর্বংত্বাংচণ্ডিকেব্যাধিনাশিনি০॥ রূ
পংমূ০॥ চণ্ডিকেসততংযেত্বামর্চয়ন্তীহভক্তিতঃ॥
রূপংমূ॥ দেহিসৌভাগ্যমারোগ্যংদেহিদেবিপরংপ
দম্০॥ রূপংদেহি০॥ বিধেহি দ্বিষতাংনাশং বিধেহি

বলমুচ্চকৈঃ॥ রূপংদেহি০॥ বিধেহিদেবিকল্যাণংশ্রি
ধেহিবিপুলাংশ্রিয়ম্০॥ রূপংদেহি০॥ সুরাসুরশিরোর
ত্ননিঘৃষ্টচরণেম্বিকে০॥ রূপংদেহি০॥ চতুর্ভুজেচতু
র্বক্ত্রসংস্তুতপরমেশ্বরি০॥ রূপংদেহি০॥ প্রচণ্ডদৈত্য
দর্পঘ্নেচণ্ডিকেপ্রণতায়মে০॥ রূপংদেহি০॥ কৃষ্ণে

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

यन्देहि द्विषोजहि।। महिषासुरसैन्यान्तविधात्रि वर
दे नमः।। रूपन्देहि जयन्देहि यशोदेहि द्विषो जहि
।। महिषासुरसंहारविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०। धू
म्रलोचनदर्प्पान्तविधात्रि वरदे नमः ।। रूपम्०।। च
ण्डमुण्डप्रमथनविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०।। रक्त
बीजकुलच्छेदविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०।। नि
शुम्भप्राणसंहारविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०।। शु
म्भराक्षसनिर्णाशविधात्रि वरदे नमः।। रूपम्०।। व
न्दितांघ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनी।। रूपम्०।।
अचिन्त्यरूपचरिते सर्व्वशत्रुविनाशिनि। रूपन्दे०।।
नतेभ्यः सर्व्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।। रूपम्०।।
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वन्त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि। रू
पम्०। चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।।
रूपम्०।। देहि सौभाग्यमारोग्यन्देहि देवि परं प
दम् ।। रूपन्देहि०।। विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि
बलमुच्चकैः ।। रूपन्देहि०।। विधेहि देवि कल्याणम्वि
धेहि विपुलां श्रियम् ।। रूपन्देहि० ।। सुरासुरशिरोर
त्ननिघृष्टचरणाम्बुजे ।। रूपन्देहि०।। चतुर्भुजे चतु
र्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि। रूपन्देहि० ।। प्रचण्डदैत्य
दर्पघ्ने चण्डिके प्रणता वयम्।। रूपन्देहि० ।। कृष्णे

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

নমস্তুতোদাৰিশেখৰোজ্জ্বামদাম্বিকে॥ ৰূপংদেহি॥
হিমাচলসুতানাথসংস্তুতেপৰমেশ্বৰি॥ ৰূপংদেহি॥
ইন্দ্ৰাণীপতিসদ্ভাৱপূজিতেপৰমেশ্বৰি॥ ৰূপংদেহি॥
ৰিস্যাৰন্তুযশোসুন্তিনক্ষমীৰন্তুস্থউসীক্ষকু॥ ৰূপংদে॥
তাৰিণীন্দুৰ্গসংসাৰসাগৰস্যকুলোদ্ভৱাম্॥ ৰূপংদে॥

পত্নীংমনোৰমাংদেহিমনোবৃত্তানুসাৰিণীম্॥ ৰূপংমু॥
দেৱিভক্তজনোদ্দামদত্তানন্দোদয়েম্বিকে॥ ৰূপংমু॥
ইদংস্তোত্ৰংপঠিত্বাতুমহাস্তোত্ৰংপঠেন্নৰঃ॥ সতুসপ্ত
শতীসংখ্যাংপ্ৰতিশ্লোকমৱাপ্নুয়াত্॥ অৰ্গলাপাঠ
জাতস্যদাবিক্ৰম্যতথাৰ্গলম্॥ গদমাদৌপাঠ

হাত্বপশ্চাদ্বীচণ্ডিকাংজপেত্॥ ॥ ইত্যৰ্গলাস্তোত্ৰ
ম্॥ ॥ সম্পূৰ্ণম্॥ ॥ ওঁযদক্ষৰমাদি॥ ॥
ওঁ ওঁ ওঁ ওঁ ওঁ ওঁ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

न संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके। रूपन्देहि०।।
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि। रूपन्देहि०।।
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि। रूपन्देहि०।।
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तञ्च मां कुरु।। रूपन्दे०।।
तारिणीन्दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।। रूपन्दे०।।

पत्नीम्मनोरमां देहि मनोवृत्यनुसारिणीम्।। रूपम्०।।
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेम्बिके। रूपम्०।।
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रम्पठेन्नरः। स तु सप्त शतीं सख्यां प्रतिश्लोकमवाप्नुयात्।। अर्गलं पाप जातस्य दारिद्र्यस्य तथार्गलं।। इदमादौ पठि

त्वा तु पश्चाच्छ्रीचण्डिकां जपेत्।। ।। इत्यर्गलास्तोत्रम्।। ।। सम्पूर्णम्।। ।।ॐ यदक्षरेत्यादि[1]।। ।।

१.यदक्षरपदभ्रष्टम्मात्राहीनञ्च यद्भवेत्।
तत्सर्व्वं क्षम्यतान्देवि कस्य वै निश्चलम्मनः।।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ওঁনমশ্চণ্ডিকায়ৈ॥ মার্কণ্ডেয়উবাচ॥ বিশুদ্ধজ্ঞানদেহায়
ত্রিবেদীদিব্যচক্ষুষে। শ্রেয়ঃপ্রাপ্তিনিমিত্তায়নমঃসোমা
র্দ্ধধারিণে॥ সর্ব্বমেতদ্বিজানীয়ান্মন্ত্রাণামপিকীলকং॥
সোপিক্ষেমমবাপ্নোতিসততংজপ্যতৎপরঃ॥ সিদ্ধ্যন্ত্যু
চ্চাটনাদীনিবস্তূনিসকলান্যপি॥ এতেনস্তুবতাংদেবী

স্তোত্রমাত্রেণসিদ্ধ্যতি॥ নমন্ত্রোনৌষধংতত্রনকিঞ্চি
দপিবিদ্যতে॥ বিনাজাপ্যেনসিদ্ধ্যন্তিসর্ব্বমু
চ্চাটনাদিকং॥ সমগ্রাণ্যপিসিদ্ধ্যন্তিলোকশঙ্কা
মিমাংহরঃ॥ কৃত্বানিমন্ত্রয়ামাসসর্ব্বমেবমিদংশুভং
স্তোত্রংবৈচণ্ডিকায়াস্তুতচ্চগুপ্তংচকারসঃ॥ সমাপ্তি

র্ন্নপুণ্যেনতাংযথাবন্নিমন্ত্রণাং॥ সোপিক্ষেমমবাপ্নো
তিসর্ব্বমেবনসংশয়ঃ॥ কৃষ্ণায়াংবাচতুর্দ্দশ্যামষ্টম্যাং
বাসমাহিতঃ॥ দদাতিপ্রতিগৃহ্লাতিনান্যথৈষাপ্রসীদ
তি॥ ইত্থংরূপেণকীলেনমহাদেবেনকীলিতং॥
মথরাক্ষমমাপ্নোতিসদাজপ্যেনসংশয়ঃ॥ যোনি

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

# अथ कीलकम्

ॐ नमश्चण्डिकायै॥ मार्कण्डेय उवाच॥ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे। श्रेय प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे। सर्व्वदा तु पठेद्यस्तु मन्त्रणामपि कीलकम्। सोपि क्षेममवाप्नोति सततञ्जपतत्परः॥ सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि। एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रवृन्देन सिद्ध्यति॥ न मन्त्रो नौषध्ञ्चापि न किञ्चिदपि विद्यते। विना जाप्येन सिद्ध्यन्ति सर्व्वमुच्चाटनादिकम्॥ समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः॥ कृत्वा नियन्त्रयामास सर्व्वमेवमिदं शुभम् स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुह्यं चकार सः॥ समाप्नोति सुपुण्येन तां यथावन्निमन्त्रणम्॥ सोपि क्षेममवाप्नोति सर्व्वमेव न संशयः॥ कृष्णायाम्वा चतुर्द्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसिद्ध्यति॥ इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्॥ स एव क्षेममाप्नोति सदा जप्त्वा न संशयः॥ यो नि

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

কীলাং বিধায় যেনাং নিত্যং জপতি সংস্ফুটম্ ॥ স সিদ্ধঃ স গণঃ
সোঽপি গন্ধর্ব্বো জায়তে নরঃ ॥ ন চৈবাপ্যটতস্তস্য ভয়ং ক্বা
পি হি জায়তে ॥ নাপমৃত্যুবশং যাতি মৃতো মোক্ষমবাপ্নুয়াৎ ॥
জ্ঞাত্বা প্রারভ্য কুর্ব্বীত হ্যকুর্ব্বাণো বিনশ্যতি ॥ ততো জ্ঞাত্বৈ
ব সম্পন্নমিদং প্রারভ্যতে বুধৈঃ ॥ সৌভাগ্যাদি চ যৎকিঞ্চি

দ্দৃশ্যতে ললনাজনে ॥ তৎসর্ব্বং তৎপ্রসাদেন তেন জা
প্যমিদং শুভম্ ॥ শনৈস্তু জপ্যমানেঽস্মিন্ স্তোত্রে সম্প
ত্তিরুচ্চকৈঃ ॥ ভবত্যেব সমগ্রাপি ততঃ প্রারভ্যমেব ত
ৎ ॥ ঐশ্বর্য্যং তৎপ্রসাদেন সৌভাগ্যারোগ্যসম্পদঃ ॥
শত্রুহানিঃ পরো মোক্ষঃ স্তূয়তে সা ন কিং জনৈঃ ॥ প্রথমং

পঠেত্তদ্দেব্যায়ে প্রস্তুতায় শুচিঃ স্মৃতঃ ॥ কীলকেয়ং
সমাখ্যাতা পশ্চাৎ সপ্তশতীস্তুতিঃ ॥ নিষ্কীলনকৃ
তঃ সংখ্যাতা নিষ্কীলনকারণাৎ ॥ দেব্যাস্তৈব স
হ্যাতন্নাভীষ্টফলং লভেৎ ॥ যঃ স্তোত্রমেতদন্য
ব্রাসবমস্মিকায়াঃ শ্রেয়স্করং পঠতি ব্রাহ্মণাদিবাহিষ্ঠঃ

ণোতি ॥ মাত্যে হি কিং ফলমবাপ্য বিরাজতে সো জ্ঞা
য়েত তৎপ্রিয়তমো মাদি লক্ষণানাম্ ॥ ❀ ॥ ৩ ॥
ইতি সপ্তশতীকীলকম্ ॥ ❀ ॥ সম্পূর্ণম্ ॥ ❀ ॥
ওঁ যদক্ষরেত্যাদি ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ৩ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ৩ ॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्। ससिद्धःसगणः सोपि गन्धर्व्वो जायते वने।। न चैवापदमाप्नोति भयं क्वापि न जायते। नापमृत्युभयम्वापि मृतो मोक्षमवाप्नुयात्।। ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्व्वीत अकुर्वाणो विनश्यति। ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदम्प्रारभ्यते बुधैः।। सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद्दृश्यते ललनाजने। तत्सर्व्वं त्वत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्।। शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः। भवत्येव समग्रापि तत प्रारभ्यमेव तत् ।। ऐश्वर्य्यं त्वत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः।। शत्रुहानिः परो मोक्षस्तूयते सा न किं जनैः।। प्रथमं पठते देव्याह्यग्रे भूत्वा शुचिः स्थितः।। कीलकेयं समाख्याता पश्चात्सप्तशतीस्तुतिः।। निष्कीलकं ततः कृत्वा ख्याता निष्कीलकारणात्।। देव्याश्चैव महाभक्त्या तेनाभीष्टफला भवेत्।। यः स्तोत्रमेतदनुवासरमम्बिकायाः श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति।। स ह्यैहिकं फलमवाप्य विराजतेऽसौ जायेत च प्रियतमो मदिरेक्षणानाम्।। ।। ।।

इति सप्तशतीकीलकम्।। ।। सम्पूर्णम्।। ।।

ॐ यदक्षरेत्यादि[१]।। ।। ।। ।। ।। ।। ।।

१. यदक्षरपदभ्रष्टम्मात्राहीनञ्च यद्भवेत्।
तत्सर्व्वं क्षम्यतान्देवि कस्य वै निश्चलम्मनः।।

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ওঁনমশ্চণ্ড্যৈ॥ চণ্ডিকাসপ্তশতিকাস্তৱস্যমাৰ্কণ্ডেয়ঋষিৰনু
ষ্টুপ্ছন্দঃ সৰস্বতীদেৱতা ঋষিঃ শক্তিঃ ভ্ৰামৰী বীজং সূৰ্য্য
স্তত্বং কৰস্য পাঠে বিনিয়োগঃ ॥ মাৰ্কণ্ডেয় উৱাচ ॥
যদ্গুহ্যং পৰমং লোকে সৰ্ব্বৰক্ষাকৰং নৃণাং ॥ যন্ন কস্য
চিদাখ্যাতং তন্মে ব্ৰূহি পিতামহ ॥ ব্ৰহ্মোৱাচ ॥ অস্তি

গুহ্যতমং বিপ্ৰ সৰ্ব্বভূতোপকাৰকং ॥ দেৱ্যাস্তু কৱচং
দিব্যং তচ্ছৃণুষ্ব মহামতে ॥ প্ৰথমং শৈলপুত্ৰীতি দ্বিতী:
য়ং ব্ৰহ্মচাৰিণী ॥ তৃতীয়ং চন্দ্ৰঘণ্টেতি কুষ্মাণ্ডেতি চ
তুৰ্থকং ॥ পঞ্চমং স্কন্দমাতেতি ষষ্ঠং কাত্যায়নীতি চ ॥
সপ্তমং কালৰাত্ৰীতি মহাগৌৰীতি চাষ্টমং ॥ নৱমং সি

দ্ধিদাত্ৰী চ নৱদুৰ্গাঃ প্ৰকীৰ্ত্তিতাঃ ॥ উক্তান্যেতা
নি নামানি ব্ৰহ্মণৈৱ মহাত্মনা ॥ অগ্নিনা দহ্যমানস্তু
শত্ৰুমধ্যে গতো ৰণে ॥ বিষমে দুৰ্গমে চৈৱ ভয়াৰ্ত্তাঃ
শৰণং গতাঃ ॥ ন তেষাং জায়তে কিঞ্চিদশুভং ৰণসঙ্ক
টে ॥ নাপদন্তস্য পশ্যামি শোকদুঃখভয়ং নহি ॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

# अथ कवचम्

ॐ नमस्तस्यै॥ चण्डिकासप्तशतिकास्तवस्य नारायणऋषिरनु ष्टुप् छन्दः सरस्वतीदेवता अहिःशक्तिर्भ्रामरीबीजं सूर्य्य स्तत्त्वं कवचस्य पाठे विनियोगः॥ मार्क्कण्डेय उवाच॥ यदगुह्यं परमं लोके सर्व्वरक्षाकरं नृणाम्॥ यन्न कस्य चिदाख्यातन्तन्मे ब्रूहि पितामह॥ ब्रह्मोवाच॥ अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्व्वभूतोपकारकम्। देव्यास्तु कवचं दिव्यं तच्छृणुष्व महामते॥ प्रथमं शैलपुत्री च द्विती यं ब्रह्मवादिनी। तृतीयं चण्डघण्टेति कूष्माण्डेति च तुर्थकम्॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च॥ सप्तमं कालरात्री च महागौरीति चाष्टमम्॥ नवमं सि द्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः। उक्तान्येता नि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना। अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे। विषमे दुर्गमे घोरे भया र्ताशरणं गताः॥ न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसङ्क टे। नापदस्तस्य पश्यामि शोकदुःखभयन्नहि॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

যেস্তুভক্ত্যাস্মৃতানূনংতেষাংসিদ্ধিঃপ্ৰজায়তে॥প্ৰেত
সংস্থাতুচামুণ্ডাবাৰাহীমহিষাসনা॥ঐন্দ্ৰীগজসমাৰূ
ঢ়াবৈষ্ণৱীগৰুড়াসনা॥মাহেশ্বৰীবৃষাৰূঢ়াকৌমাৰী
শিখিবাহনা॥ব্ৰাহ্মীহংসসমাৰূঢ়াসৰ্ব্বাভৰণভূষিতা॥
লক্ষ্মীঃপদ্মাসনাদেবীপদ্মহস্তাহৰিপ্ৰিয়া॥শ্বেতৰূপ
ধৰাদেবীঈশ্বৰীবৃষবাহনা॥ইত্যেতামাতৰঃসৰ্ব্বাঃসৰ্ব্বযোগ
সমন্বিতাঃ॥নানাভৰণশোভাঢ্যানানাৰত্নোপশোভিতাঃ
শ্ৰেষ্ঠৈশ্চমৌক্তিকৈঃসৰ্ব্বাদিব্যহাৰপ্ৰলম্বিভিঃ॥ইন্দ্ৰনী
লৈৰ্ম্মহানীলৈঃপদ্মৰাগৈঃসুশোভনৈঃ॥দৃশ্যন্তেৰথমা
ৰূঢ়াদেব্যঃক্ৰোধসমাকুলাঃ॥কুন্তায়ুধঞ্চখড়্গঞ্চশাৰ্ঙ্গ
মায়ুধমুত্তমম্॥কনিশঞ্চত্ৰিশূলঞ্চপট্টিশংমুদ্গৰন্তথা॥
শঙ্খংচক্ৰংগদাংশক্তিংহলঞ্চমুষলায়ুধম্॥খেটকন্তোমৰঞ্চ
পৰশুংপাশমেৱচ॥দৈত্যানাংদেহনাশায়ভক্তানামভ
য়ায়চ॥ধাৰয়ন্ত্যায়ুধানীত্থংদেৱানাঞ্চহিতায়বৈ॥নমস্
তেস্তুমহাৰৌদ্ৰেমহাঘোৰপৰাক্ৰমে॥মহাবলেমহাকা
য়েমহাভয়বিনাশিনি॥ত্ৰাহিমাংদেবিদুষ্প্ৰেক্ষ্যেশত্ৰূণাংভয়ব
ৰ্দ্ধিনি॥প্ৰাচ্যাংৰক্ষতুমামৈন্দ্ৰীআগ্নেয্যামগ্নিদেৱতা॥দ
ক্ষিণেৱতুবাৰাহীনৈৰ্ঋতীখড়্গধাৰিণী॥প্ৰতীচ্যাংবাৰু
ণীৰক্ষেদ্বায়ব্যাংমৃগবাহিনী॥উদীচ্যাংৰক্ষকৌমাৰী
ঐশান্যাংশূলধাৰিণী॥ঊৰ্দ্ধ্বংৰক্ষতুব্ৰহ্মাণীঅধস্তাদ্বৈষ্ণৱী

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां सिद्धि प्रजायते।। प्रेत संस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।। ऐन्द्री गजसमारूढ़ा वैष्णवी गरुड़ासना।। माहेष्वरी वृषारूढ़ा कौमारी शिखिवाहना। ब्राह्मी हंससमारूढा सर्व्वाभरणभूषिता।। लक्ष्मी पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया।। श्वेतरूप

धरा देवी ईश्वरी वृषवाहना। इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोग समन्विताः। नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः। श्रेष्ठैश्च मौक्तिकैस्सर्व्वा दिव्यहारप्रलम्बिभिः।। इन्द्रनीलैर्म्महानीलै पद्मरागैः सुशोभनैः।। दृश्यन्ते रथमारूढ़ा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।। कुन्तायुधं च खड्गञ्च शार्ङ्ग

मायुधमुत्तमम्।। कुलिशञ्च त्रिशूलञ्च पट्टिशं मुद्गरन्तथा।। शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलञ्च मुसलायुधम्।। खेटकं तोमरञ्चैव परशुं पाशमेव च।। दैत्यानान्देहनाशाय भक्तानामभयाय च। धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां तु हिताय वै।। नमस्तेस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।। महाबले महाकाये

ये महाभयविनाशिनि।। त्रहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि। प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता।। दक्षिणे रक्ष वाराहि नैर्ऋत्यां खड्गधारिणि।। प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी। उदीच्यां रक्ष कौमारि ऐशान्यां शूलधारिणी।। ऊर्ध्वं रक्षतु ब्रह्माणी अधस्ताद्वैष्णवी

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

তথা॰।।এৱংদশোদিশোৰক্ষেচ্চামুণ্ডাশৱবাহনা॰।।জয়া
মেচাগ্রতঃপাতুৰিজয়াপাতুপৃষ্ঠতঃ।।অজিতাৱামপা
র্শ্বেতুদক্ষিণেচাপৰাজিতা॰।।শিখামুদ্যোতিনীৰক্ষেদুমা
মূর্দ্ধ্নিৱ্যৱস্থিতা॰।।মালাধৰীললাটেচভ্রুৱৌৰক্ষেদ্যশ
স্বিনী॰।।ত্রিনেত্রাচভ্রুৱোৰ্মধ্যেযমঘণ্টাচনাসিকে॰।।

শঙ্খিনীচক্ষুষোৰ্মধ্যেশ্রোত্রয়োৰ্দ্বাৰৱাসিনী॰।।কপো
লৌকালিকাৰক্ষেৎকৰ্ণমূলেতুশাঙ্কৰী॰।।নাসিকায়াংসু
গন্ধাচউত্তৰোষ্ঠেচচৰ্চ্চিকা॰।।অধৰেচামৃতকলাজিহ্বা
য়াঞ্চসৰস্বতী॰।।দন্তান্ৰক্ষতুকৌমাৰীকণ্ঠমধ্যেতুচণ্ডি
কা॰।।ঘণ্টিকাঞ্চিত্ৰঘণ্টাচমহামায়াচতালুকে॰ ।।

কামাক্ষীচিবুকংৰক্ষেদ্বাচংমেসৰ্ব্বমঙ্গলা॰।।গ্রীৱায়াংভ
দ্ৰকালীচপৃষ্ঠৱংশেধনুৰ্দ্ধৰী॰।হস্তয়োৰ্দণ্ডিনীৰক্ষেদ
ম্বিকাচাঙ্গুলীষুচ॰।।নখাঞ্ছূলেশ্বৰীৰক্ষেৎকুক্ষৌৰ
ক্ষেৎকুলেশ্বৰী॰।।নীলগ্রীৱাবহিঃকণ্ঠেনলিকাংনলকূ
বৰী॰।।খড়্গধাৰিণ্যুভৌস্কন্ধৌবাহূমেৱজ্রধাৰিণী॰।।

স্তনৌৰক্ষেন্মহাদেৱীমনঃশোকৱিনাশিনী॰।।হৃদয়েললি
তাদেৱীউদৰেশূলধাৰিণী॰।।নাভৌচকামিনীৰক্ষেদ্গুহ্যং
গুহ্যেশ্বৰীতথা॰।।পূতনাকামিকামেঢ্রংগুদেমহিষৱাহি
কট্যাংভগৱতীৰক্ষেজ্জানুনীৱিন্ধ্যৱাসিনী॰।।জঙ্ঘেমহা
বলাৰক্ষেৎসৰ্ব্বকামপ্ৰদায়িনী॰।।গুল্ফয়োৰ্নাৰসিংহীচ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

तथा॥ एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना॥ जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥ अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता॥ शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता । मालाधरी ललाटे च भ्रूवोर्म्मध्ये यशस्विनी॥ त्रिनेत्रा च भ्रुवौ रक्षेद्यमघण्टा च नासिके॥

शङ्खिनी चक्षुषोर्म्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी॥ कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी। नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका॥ अधरे चामृतकला जिह्वायान्तु सरस्वती। दन्तान्रक्षतु कौमारी कण्ठमध्ये तु चण्डिका॥ घण्टिकाञ्चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।

कामाक्षा चिबुकं रक्षेद्वाचम्मे सर्व्वमङ्गला॥ ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्द्धरी । हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च॥ नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेन्नरेश्वरी । नीलग्रीवा बहिष्कण्ठे नलिकां नलकूवरी॥ खड्गधारिण्युभौ स्कन्धौ बाहू मे वज्रधारिणी।

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी॥ हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी। नाभौ च कामिनी रक्षेद्गुह्यं गुह्येश्वरी तथा॥ पूतना कामिका मेढ्रे उरू महिषवाहिनी। कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी॥ जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्व्वकामप्रदायिनी॥ गुल्फयोर्न्नारसिंही च

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

𑒣𑒰𑒠𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚𑒹𑒔𑒞𑒹𑒖𑒮𑒲 ॥ 𑒣𑒰𑒠𑒰𑒓𑓂𑒑𑒳𑒪𑒲𑓁𑒬𑓂𑒩𑒲𑒡𑒩𑒲𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹
𑒞𑓂𑒣𑒰𑒠𑒰𑒡𑒮𑓂𑒞𑒪𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 ॥ 𑒢𑒐𑒰𑒢𑓂𑒠𑓀𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒰𑒏𑒩𑒰𑒪𑒲𑒔𑒏𑒹
𑒬𑒰𑓀𑒬𑓂𑒔𑒻𑒫𑒼𑒩𑓂𑒡𑓂𑒫𑒏𑒹𑒬𑒱𑒢𑒲 ॥ 𑒩𑒼𑒧𑒏𑒴𑒣𑒹𑒭𑒳𑒏𑒾𑒧𑒰𑒩𑒲𑒞𑓂𑒫
𑒔𑓀𑒫𑒰𑒑𑒲𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲𑒞𑒟𑒰 ॥ 𑒩𑒏𑓂𑒞𑒧𑒖𑓂𑒖𑒰𑒫𑒮𑒰𑒧𑒰𑓀𑒮𑒰𑒢𑓂𑒨𑒮𑓂𑒟𑒱𑒧𑒹
𑒠𑒰𑓀𑒮𑒱𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲 ॥ 𑒁𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒰𑒝𑒱𑒏𑒰𑒪𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱𑒬𑓂𑒔𑒣𑒱𑒞𑓂𑒞𑒘𑓂𑒔𑒧𑒳

𑒏𑒳𑒙𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲 ॥ 𑒣𑒠𑓂𑒧𑒰𑒫𑒞𑒲𑒣𑒠𑓂𑒧𑒏𑒼𑒬𑒹𑒏𑒤𑒹𑒔𑒴𑒛𑒰𑒧𑒝𑒱𑒮𑓂𑒞𑒟𑒰 ॥
𑒖𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰𑒧𑒳𑒐𑒲𑒢𑒐𑒖𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰𑒧𑒦𑒹𑒠𑓂𑒨𑒰𑒮𑒩𑓂𑒫𑒮𑒢𑓂𑒡𑒱𑒭𑒳 ॥ 𑒬𑒳𑒏𑓂𑒩𑓀𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒰
𑒝𑒱𑒧𑒹𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹𑒔𑓂𑒕𑒰𑒨𑒰𑓀𑒕𑒞𑓂𑒩𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲𑒞𑒟𑒰 ॥ 𑒁𑒯𑓀𑒏𑒰𑒩𑓀𑒧𑒢𑒼𑒥𑒳
𑒠𑓂𑒡𑒱𑓀𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹𑒢𑓂𑒧𑒹𑒡𑒩𑓂𑒧𑒡𑒰𑒩𑒱𑒝𑒲 ॥ 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒰𑒣𑒰𑒢𑒾𑒞𑒟𑒰𑒫𑓂𑒨𑒰𑒢𑒧𑒳
𑒠𑒰𑒢𑒘𑓂𑒔𑒮𑒧𑒰𑒢𑒏𑒧𑓂 ॥ 𑒫𑒖𑓂𑒩𑒯𑒮𑓂𑒞𑒰𑒔𑒧𑒹𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒓𑓂𑒏

𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝𑒬𑒼𑒦𑒱𑒢𑒲 ॥ 𑒩𑒮𑒹𑒩𑒴𑒣𑒹𑒔𑒑𑒢𑓂𑒡𑒹𑒔𑒬𑒥𑓂𑒠𑒹𑒮𑓂𑒣𑒩𑓂𑒬𑒹𑒔
𑒨𑒼𑒑𑒱𑒢𑒲 ॥ 𑒮𑒞𑓂𑒫𑓀𑒩𑒖𑒮𑓂𑒞𑒧𑒬𑓂𑒔𑒻𑒫𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹𑒢𑓂𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝𑒲𑒮𑒠𑒰 ॥
𑒂𑒨𑒴𑒩𑒏𑓂𑒭𑒞𑒳𑒫𑒰𑒩𑒰𑒯𑒲𑒡𑒩𑓂𑒧𑓀𑒩𑒏𑓂𑒭𑒞𑒳𑒫𑒻𑒭𑓂𑒝𑒫𑒲 ॥ 𑒨𑒬𑓁𑒏𑒲
𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒱𑒘𑓂𑒔𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒘𑓂𑒔𑒮𑒠𑒰𑒩𑒏𑓂𑒭𑒢𑓂𑒞𑒳𑒧𑒰𑒞𑒩𑓁 ॥ 𑒑𑒼𑒞𑓂𑒩𑒧𑒱𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒰𑒝𑒱
𑒧𑒹𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒣𑒬𑒴𑒢𑓂𑒧𑒹𑒩𑒏𑓂𑒭𑒔𑒝𑓂𑒛𑒱𑒏𑒹 ॥ 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹𑒢𑓂𑒧𑒯𑒰

𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒩𑓂𑒦𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑓀𑒩𑒏𑓂𑒭𑒞𑒳𑒦𑒻𑒩𑒫𑒲 ॥ 𑒡𑒢𑓀𑒡𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒏𑒾𑒧𑒰
𑒩𑒲𑒏𑒢𑓂𑒨𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒟𑒰 ॥ 𑒣𑒢𑓂𑒟𑒰𑒢𑓀𑒮𑒳𑒣𑒟𑒰𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹𑒢𑓂𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑𑓀𑒏𑓂𑒭𑒹𑒧𑒓𑓂𑒏
𑒩𑒲𑒞𑒟𑒰 ॥ 𑒩𑒰𑒖𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒹𑒧𑒯𑒰𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒫𑒱𑒖𑒨𑒰𑒮𑒩𑓂𑒫𑒞𑓁𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒰 ॥
𑒩𑒏𑓂𑒭𑒧𑒧𑒮𑒩𑓂𑒫𑒑𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒝𑒱 [illegible]𑒡𑒰𑒩𑒱𑒝𑒲 ॥ 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰𑒯𑒲
𑒢𑒢𑓂𑒞𑒳𑒨𑒞𑓂𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑓀𑒫𑒩𑓂𑒖𑒱𑒞𑓀𑒏𑒫𑒔𑒹𑒢𑒞𑒳 ॥ 𑒮𑒩𑓂𑒫𑓀𑒩𑒏𑓂𑒭𑒞𑒳𑒧𑒹𑒠𑒹

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

पादपृष्ठे च तेजसी।। पादाङ्गुलीः श्रीधरी रक्षे
त्पादाधस्तलवासिनी। नखान् दंष्ट्राकराली च के
शाँश्चैवोर्द्ध्वकेशिनी।। रोमकूपेषु कौमारी त्व
चं वागेश्वरी तथा । रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमे
दांसि पार्व्वती।। अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकु
टेश्वरी। पद्मावती पद्मकोषे कफे चूडामणिस्तथा।।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु। शुक्रं ब्रह्मा
णि मे रक्षेच्छायाक्षेत्रेश्वरी तथा।। अहङ्कारं मनोबु
द्धिं रक्षेन्मे धर्म्मधारिणी। प्राणापानौ तथा व्यानमु
दानञ्च समानकम्।। वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणङ्क
ल्याणशोभिनी। रसे रूपे च गन्धे च शब्दस्पर्शे च
योगिनी।। सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा।।
आयुर्म्मे रक्ष वाराही धर्म्मं रक्षतु वैष्णवी।। यशः की
र्त्तिञ्च लक्ष्मीञ्च सदा रक्षन्तु मातरः। गोत्रमिन्द्राणि
मे रक्षेत्पशून्रक्षतु चण्डिका।। पुत्रान्रक्षेन्महाल
क्ष्मीर्भार्य्यां रक्षतु भैरवी। धनं धनेश्वरी रक्षेत्कौमा
री कन्यकास्तथा।। पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमङ्क
री तथा।। राजद्वारे महालक्ष्मीर्व्विजया सर्व्वतः स्थिता।
रक्षेन्मे सर्व्वगात्राणि दुर्गा दुर्गापहारिणी।। रक्षाही
नञ्च यत्स्थानं वर्ज्जितं कवचेन च। सर्व्वं रक्षतु मे दे

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

বীজয়ন্তীপাপনাশিনী।।পদমেকমগচ্ছেত্তু যদী
চ্ছেচ্ছুভমাত্মনঃ।।কবচেনাবৃতোনিত্যং যত্রযত্রৈ
বগচ্ছতি।।তত্রতত্রার্থলাভশ্চবিজয়ঃসর্বকামি
কঃ।।যংযংচিন্তয়তেকামংতন্তম্প্রাপ্নোতিনিশ্চয়া
পরমৈশ্বর্যমতুলংপ্রাপ্স্যতেভূতলেপুমান্।।নি
র্ভয়োজায়তেমর্ত্যঃসংগ্রামেষ্বপরাজিতঃ।।ত্রৈলোক্যেতুভ
বেৎপূজ্যঃকবচেনাবৃতঃপুমান্।।ইদন্তুদেব্যাঃকব
চংদেবানামপিদুর্লভম্।।যোদ্ধুকামস্তুসংগ্রামংপ্রবি
শেন্নরঃ।।জিত্বাসর্বরিপূন্সর্বান্কল্যাণীস্বগৃহমাপ্নু
য়াৎ।।যঃপঠেৎপ্রয়তোনিত্যংত্রিসন্ধ্যংশ্রদ্ধয়ান্বিতঃ।।
দৈবীকলাভবেত্তস্যত্রৈলোক্যেষ্বপরাজিতঃ।।জীবেদ্ব
র্ষশতংসাগ্রমপমৃত্যুবিবর্জিতঃ।।নশ্যন্তিব্যাধয়ঃসর্বে
লূতাবিস্ফোটকাদয়ঃ।।স্থাবরংজঙ্গমঞ্চাপিকৃ
ত্রিমঞ্চাপিযদ্বিষম্।।অভিচারাণিসর্বাণিমন্ত্রয
ন্ত্রাণিভূতলে।।ভূচরাঃখেচরাশ্চৈবজলজাশ্চোপ
দেশিকাঃ।।সহজাঃকুলজামালাডাকিনীশাকিনী
তথা।।অন্তরীক্ষচরাঘোরাডাকিন্যশ্চমহাবলাঃ
গ্রহভূতপিশাচাশ্চযক্ষগন্ধর্বরাক্ষসাঃ।।ব্রহ্মরা
ক্ষসবেতালাঃকুষ্মাণ্ডাভৈরবাদয়ঃ।।নশ্যন্তিদ
র্শনাত্তস্যকবচেহৃদিসংস্থিতে।।মানোন্নতির্ভ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

वी जयन्तीं पापनाशिनी॥ पदमेकन्न गच्छेत्तु यदी
च्छेच्छुभमात्मनः। कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रै
व गच्छति॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सर्व्वकामि
कः॥ यं यं चिन्तयते कामं तन्तम्प्राप्नोति लीलया॥
परमैश्वर्य्यमतुलं प्राप्नोत्यविकलः पुमान्। नि
र्भयो जायते मर्त्यः स ामेष्वपराजितः॥ त्रैलोक्ये स भ
वेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्। इदन्तु देव्या कव
चं देवानामपि दुर्ल्लभम्॥ य इदं कवचं कृत्वा स ामं प्रवि
शेन्नरः॥ जित्वा च स रिपून् सर्व्वान् कल्याणी गृहमाप्नु
यात्॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्ये चापराजितः॥ जीवेद्व
र्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्ज्जितः ॥ नश्यन्ति व्याधयः स
र्व्वे लूताविस्फोटकादयः॥ स्थावरं जङ्गमञ्चापि कृ
त्रिमञ्चापि यद्विषम्। अभिचाराणि सर्व्वाणि मन्त्रज
न्त्राणि भूतले॥ भूचराःखेचराश्चैव सर्व्वजाश्चोप
देशिकाः। सहजा कुलजा दोषा डाकिनी शाकिनी
तथा॥ अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः॥
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्व्वराक्षसाः॥ ब्रह्मरा
क्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः। नश्यन्ति द
र्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते॥ मानोन्नतिर्भ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

রপ্রাপ্তুন্তেজাহহ্নি:পবাভরেত॥যশোমারহিতে
মাপিকীর্তিমভিতহৃত্রানে॥তস্মাজ্জপেন্মেদাচণ্ডা
করণ্ঠকামদীস্থানে॥জপেন্মেপ্তশতীচণ্ডীকৃত্বাকরন্ম
স্রুত:॥আবিপ্নুনভারণেমি হিংষ্টাজপসম্ভরা॥
যারত্ন্যমণ্ডিনীযাত্রেমশোন রনকানমমু॥তারত্রিষ্ঠ

তিমোদিন্যামন্তাতি:প্রত্রপৌত্রিকী॥দেহান্তেপরমংস্থা
নংযাস্মবৈরপিস্থলভম্॥প্রাপ্নোতিপ্রকাষানির্ম মম্
মায়াপ্রমাদত:॥ ❀ ॥ইতিশ্রীহরিহরব্রহ্মবিরচিতংদেব্যা
চকরণ্ঠমস্ত্রস্তোত্রম্॥ ❀ ॥ ৭ ॥ওঁযদক্ষরমেলাদি॥:॥

वेत्प्राज्ञस्तेजोवृद्धिः परा भवेत्।। यशसा वर्धते सोपि कीर्त्यामण्डितभूतले।। तस्माज्जपेत्सदा भक्त्या कवचं कामदं मुने।। जपेत्सप्तशतीञ्चण्डीं कृत्वा कवचम ग्रतः। अविघ्नेन भवेत्सिद्धिश्चण्डीजपसमुद्भवा।। यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्। तावत्तिष्ठ

ति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी।। देहान्ते परमं स्था नं यत्सुरैरपि दुर्ल्लभम्। प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महा मायाप्रसादतः।। ।। इति हरिहरब्रह्मविरचितं देव्या ष्कवचं सम्पूर्णम्।। ।। ।। ॐ यदक्षरेत्यादि।।

प० भवनाथ मिश्रकृता

## कालीस्तुतिः

कालीं सम्मुक्तकेशीं रुचिरचयलसन्मुण्डमालां दधानां
दिग्वस्त्रां कृष्णवर्णां दनुजकरलसत्सप्तकोशोऽभिमध्याम्।
भालेन्दुद्योतिताङ्गीमभयवरयुतां खड्गमुण्डप्रसन्नां
भक्ताभीष्टप्रदात्रीं दुरितसमुदयध्वंसकर्त्रीं भजामः।।

('मिथिलाशब्दप्रकाश'क मंगलाचरणमे)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

देवीकवचपाठान्तरं                नवार्णमन्त्रजपः।

अस्य श्री नवार्णमन्त्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि, श्री महाकाली महा
लक्ष्मी महा सरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम् ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् श्री महाकाली महालक्ष्मी -
महासरस्वती प्रीत्यर्थे श्री दुर्गा सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ ब्रह्म विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नमः, शिरसि, ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः मुखे
ॐ महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः, हृदि, ॐ ऐं बीजाय नमः, गुह्ये ॐ ह्रीं
शक्तये नमः, पादयोः, ॐ क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ, इति ऋष्यादिन्यासं षडङ्गन्यासं
ॐ ऐं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुं ॐ
विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्, एवमेव करन्यासमनु
ष्ठाय यथा - ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां-
वषट्, ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां हुं, ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। स्वस्थाने कवचार्गलास्तवं पाठयेत्।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

## अथ देवीकवचपाठोत्तरं नवार्णमन्त्रजपः

ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ऐं वीजम् ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीप्रीत्यर्थं श्रीदुर्गासप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः॥

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि, ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टप् छन्दोभ्यो नमः मुखे, ॐ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि, ॐ ऐं वीजाय नमः गुह्ये, ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ इति ऋष्यादीन्यस्य षडङ्गान्यसेत्॥ ॐ ऐं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुं ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्॥ एवमेव करन्यासन्तु पूर्वमेव विदध्याद्यथा ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः,ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ विच्चे कनिष्ठाभ्यां वौषट्, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलपृष्ठाभ्यां फडिति। ऋष्यादिकराङ्गन्यासोत्तरं ध्यायेत्।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible]

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ खड्गिनीत्यादि परिघायुधा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ शूलेनेत्यादि अनेन च तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ प्राच्यामित्यादि तथेश्वरि मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ सौम्यानीत्यादि भुवम् अनामिकाभ्यां हुम्, खड्गशूलगदादीनीत्यादि सर्व्वत कनिष्ठाभ्यां वौषट्, ॐ सर्वस्वरूपे इत्यादि नमोऽस्तुते करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिषडङ्गन्यासङ्कृत्वा श्रीदुर्गान्ध्यात्वाऽध्यायान्ते तमामोल्लेखादिविरामवर्ज्जितमन्त्रादेवाचैक्यभावनया मन्त्रानुसन्धानपूर्व्वकङ्कण्ठपाठाशक्ते आधारपुस्तकं स्थाप्य सम्पूज्य प्रणम्य कम्पादिवर्जितः कृताञ्जलिः प्रणवमुच्चार्य्य मन्त्रान् पठेत्। ध्यानन्तु—

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापङ्गुणं तर्ज्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्राम्भजे।।1।।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ওঁ খড়্গ চক্র গদেষু চাপ পরিঘান্ শূলং ভুশুণ্ডীং শিরঃ। শঙ্খং সন্দধতীং করৈস্ত্রিনয়নাং
সর্বাঙ্গ ভূষাবৃতাম্। নীলাশ্মদ্যুতি মাস্য পাদ দশকাং সেবে মহাকালিকাম্। যামস্তৌৎস্ব-
পিতে হরৌ কমলজো হন্তুং মধুং কৈটভম্ ॥১॥ ওঁ অক্ষস্রক্ পরশুং গদেষু কুলিশং পদ্মং ধনুঃ কুণ্ডিকাং
দণ্ডং শক্তিমসিং চ চর্ম জলজং ঘণ্টাং সুরাভাজনম্ ॥ শূলং পাশসুদর্শনে চ
দধতীং হস্তৈঃ প্রসন্নাননাং সেবে সৈরিভমর্দিনীমিহ মহালক্ষ্মীং সরোজস্থিতাম্ ॥২॥
ওঁ ঘণ্টাশূল হলানি শঙ্খ মুসলে চক্রং ধনুঃ সায়কং হস্তাব্জৈর্দধতীং ঘনান্তবিলসচ্ছীতাংশুতুল্য-
প্রভাম্। গৌরীদেহ সমুদ্ভবাং ত্রিজগতামাধারভূতাং মহাপূর্বামত্র সরস্বতীমনুভজে শুম্ভাদি-
দৈত্যার্দিনীম্ ॥৩॥ ইতি ধ্যাত্বা ওঁ ঐং হ্রীং ক্লীং চামুণ্ডায়ৈ বিচ্চে ইতি নবার্ণমন্ত্র মানসপূজ-
য়া জপ্ত্বা সপ্তশতী ন্যাসাদিকং কুর্য্যাদ্যথা —
প্রথম মধ্যমোত্তম চরিত্রাণাং ব্রহ্মা বিষ্ণু রুদ্রা ঋষয়ঃ, শ্রীমহাকালী মহালক্ষ্মী মহাসরস্বত্যো
দেবতাঃ, গায়ত্র্যুষ্ণিগনুষ্টুভশ্ছন্দাংসি, নন্দা শাকম্ভরী ভীমাঃ শক্তয়ঃ, রক্তদন্তিকা দুর্গা
ভ্রামর্য্যো বীজানি, অগ্নি বায়ু সূর্যাস্তত্ত্বানি, ঋগ্যজুঃসামবেদা ধ্যানানি, সকল কামনা-
সিদ্ধয়ে শ্রীমহাকালী মহালক্ষ্মী মহাসরস্বতী প্রীত্যর্থে পাঠে বিনিয়োগঃ।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ खड्गञ्चक्रगदेषुचापपरिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्व पिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।१।। ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्। दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्। सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।२।। ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकम्। हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।३।। इति ध्यात्वा ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति नवाक्षरमन्त्रमष्टोत्तरशतं जप्त्वा सप्तशतीन्यासादिकङ्कुर्याद्यथा-

प्रथममध्यमोत्तरचरितत्रयाणां ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः गायत्र्यनुष्टुभश्छन्दांसि नन्दाशाकम्भरीभीमाशक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि ऋग्यजुःसामवेदाः ध्यानानि सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ওঁ নমশ্চণ্ডিকায়ৈ ॥ ওঁ অস্য শ্রীচণ্ডিকাশাপবিমোচ
নমন্ত্রস্য বশিষ্ঠনারদসম্বাদাধিপতিব্রহ্মঋষয়ঃ স
র্ব্বৈশ্বর্য্যকারিণী শ্রীদুর্গাদেবতা চরিত্রত্রয়বীজং হ্রীঁ
শক্তিস্বরূপিণী কল্পিতকার্য্যসিদ্ধয়ে জপে বিনিয়ো
গঃ ॥ ওঁ হ্রীঁ রক্তস্বরূপায়ৈ কৈটভমর্দ্দিন্যৈ ব্রহ্মশ

শাপবিমুক্তা ভব ॥ ওঁ শ্রীঁ বুদ্ধিস্বরূপিণ্যৈ মহিষাসুরম
র্দ্দিন্যৈ ব্রহ্মশাপ ॥ ওঁ রক্তস্বরূপিণ্যৈ মহিষাসুর
মর্দ্দিন্যৈ ব্রহ্মশাপ ॥ ওঁ ক্ষুং ক্ষুধাস্বরূপিণ্যৈ দেববন্দি
তায়ৈ ব্রহ্মশাপবি ॥ ওঁ ছাঁ ছায়াস্বরূপিণ্যৈ দূতসম্বাদি
ন্যৈ ব্রহ্মশাপবি ॥ ওঁ শং শক্তিস্বরূপিণ্যৈ ধূম্রলোচন

ঘাতিন্যৈ ব্রহ্মশাপবি ॥ ওঁ হ্রূঁ তৃষ্ণাস্বরূপিণ্যৈ চণ্ডমুণ্ড
বধকারিণ্যৈ ব্রহ্মশাপ ॥ ওঁ ক্ষাং ক্ষান্তিস্বরূপিণ্যৈ রক্তবী
জবধকারিণ্যৈ ব্রহ্মশাপ ॥ ওঁ জাঁ জাতিস্বরূপিণ্যৈ নিশুম্ভ
বধকারিণ্যৈ ব্রহ্মশাপ ॥ ওঁ লং লজ্জাস্বরূপিণ্যৈ শুম্ভব
ধকারিণ্যৈ ব্রহ্মশাপ ॥ ওঁ শাং শান্তিস্বরূপিণ্যৈ দেবস্তু

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

# चण्डिकाशापविमोचनम्

ॐ नमश्चण्डिकायै। ॐ अस्य श्रीचण्डिकाशापविमोचनमन्त्रस्य वशिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्मऋषयः सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गादेवता चरितत्रयं बीजं ह्रीं शक्तिरूपिणी कल्पितकार्यसिद्धये विनियोगः ॥ ॐ रीं रेतस्स्वरूपायै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव॥ ॐ श्रीं बुद्धिरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ रँ रक्तरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ क्षँ क्षुधारूपिण्यै देववन्दिन्यै ब्रह्मशापवि०। ॐ छाँ छायारूपिण्यै दूतसँवादिन्यै ब्रह्मशापवि०॥ ॐ शँ शक्तिरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्माशापवि०॥ ॐ तृँ तृष्णारूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ क्षाँ क्षान्तिरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ जाँ जातिरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ लँ लज्जारूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मशाप०॥ ॐ शाँ शान्तिरूपिण्यै देवस्तु

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

মৈত্রস্য শাপ॰ ॥ ওঁ শ্রীঁ শ্রীহ্লা রূপিণ্যৈ ফনদাত্রৈ ব্রহ্ম শা
প॰ ॥ ওঁ ক্লীঁ কান্তি রূপিণ্যৈ রাজবরদাত্রৈ ব্রহ্ম শাপ॰ ॥
ওঁ মাঁ মাহ রূপিণ্যৈ শুম্ভনমহিতায়ৈ ব্রহ্মশাপ বিমু॰ ॥
ওঁ ক্রীঁ শ্রীঁ হ্রাঁ রুশীয়ৈ সাংর্দ্ধিপ্ত্রিকা রূপিণ্যৈ ব্রহ্ম শাপ বি॰ ॥
ওঁ ক্লীঁ ক্রীঁ ওঁ নমঃ শিরায়ৈ শুভদকরঠ রূপিণ্যৈ ব্রহ্ম॰ ॥

ওঁ কাল্যৈ কালি ক্রীঁ ফট্ স্বাহায়ৈ স্বাহা রূপিণ্যৈ ব্রহ্ম
শাপ বিমুক্তা ভব॰ ॥ এই মন্ত্র ন জানাতি চণ্ডীপাঠং কা
রাতি যঃ ॥ আত্মানং চৈব দাতারং ক্ষয়ং নির্যাতি সংশ
য়ঃ ॥ ॥ ইতি রুদ্রযামলে চণ্ডিকা শাপ বিমোচ
নং সম্পূর্ণং॰ ॥ ॥ ওঁ যদক্ষরমাত্রাদি॰ ॥ ॥ ৭ ॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

त्यै ब्रह्मशाप०।। ॐ श्रँ श्रद्धारूपिण्यै फलदात्र्यै ब्रह्मशाप०।। ॐ काँ कान्तिरूपिण्यै राजवरदात्र्यै ब्रह्मशाप०।। ॐ माँ मातृरूपिण्यै अर्गलसहितायै ब्रह्मशापविमु०।। ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ दुर्गायै सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मशापवि०।। ॐ क्लीँ ह्रीँ ॐ नमः शिवायै अभेदकवचरूपिण्यै ब्रह्म०।।

ॐ काल्यै कालि ह्रीँ फट् स्वाहायै ऋग्वेदरूपिण्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव।। एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठँ करोति यः । आत्मनश्चैव दातारं क्षयं कुर्यान्न सँशयः।। ।। इति रुद्रजामले चण्डिकाशापविमोचनँ सम्पूर्णम्।। ।। ॐ यदक्षरेत्यादि०।। ।। ।।

---

१ एतय पाण्डुलिपिमे स्पष्ट रूप सँ 'समाराधिपति' अछि। प्रचलित पाठमे 'सामवेदाधिपति' भेटैछ। मार अर्थात् कामदेवक संग सभक अधिपति' ई अर्थ संगत अछि। एहि पाठान्तरक परम्परा अन्वेष्टव्य अछि।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ওঁনমশ্চণ্ডিকায়ৈ॥মার্কণ্ডেয় উবাচ॥ ১ ॥সাবর্ণিঃ সূর্য্য
তনয়ো যো মনুঃ কথ্যতেঽষ্টমঃ॥নিশাময় তদুৎপত্তিং বি
স্তরাদ্ গদতো মম॥ ২ ॥মহামায়ানুভাবেন যথা মন্বন্তরা
ধিপঃ॥স বভূব মহাভাগঃ সাবর্ণিস্তনয়ো রবেঃ॥ ৩ ॥
স্থারোচিষেঽন্তরে পূর্ব্বং চৈত্রবংশসমুদ্ভবঃ॥সুরথো নাম রা
জা সমভূৎ সমস্তে ক্ষিতিমণ্ডলে॥ ৪ ॥তস্য পালয়তঃ সম্যক্ প্রজা
ঃ পুত্রানিবৌরসান্॥বভূবুঃ শত্রবো ভূপাঃ কোনারিধ্বংসি
নস্তথা॥ ৫ ॥তস্য তৈরভবদ্ যুদ্ধমতিপ্রবলদণ্ডিনঃ॥
ন্যূনৈরপি স তৈর্যুদ্ধে কোনারিধ্বংসিভির্জ্জিতঃ॥ ৬ ॥তত
স্বপুরমায়াতো নিজদেশাধিপোঽভবৎ॥আক্রান্তঃ স মহা
ভাগস্তৈস্তদা প্রবলারিভিঃ॥ ৭ ॥অমাত্যৈর্বলিভির্দুষ্টৈর্দুর্ব্বল
স্য দুরাত্মভিঃ॥কোষো বলঞ্চাপহৃতং তত্রাপি স্বপুরে ত
তঃ॥ ৮ ॥ততো মৃগয়াব্যাজেন হৃতস্বাম্যঃ স ভূপতিঃ॥
একাকী হয়মারুহ্য জগাম গহনং বনম্॥ ৯ ॥স তত্রাশ্র
মমদ্রাক্ষীদ্ দ্বিজবর্য্যস্য মেধসঃ॥প্রশান্তশ্বাপদাকীর্ণম্

# अथ दुर्गासप्तशती प्रारभ्यते

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥१॥ सावर्णिस्सूर्य
तनयो यो मनु कथ्यतेऽष्टमः। निशामय तदुत्पत्तिं वि
स्तराद् गदतो मम॥२॥ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तरा
धिपः। स बभूव महाभागस्सावर्णिस्तनयो रवेः॥३॥
स्वारोचिषेन्तरे पूर्वञ्चैत्रवंशसमुद्भवः। सुरथो नाम रा
जाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले॥४॥ तस्य पालयतस्सम्यक्प्रजा
पुत्रानिवौरसान्। बभूवुश्शत्रवो भूपा कोलाविध्वंसि
नस्तथा ॥५॥ तस्य तैरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः॥
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्ज्जितः॥६॥ ततः
स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोभवत्। आक्रान्तस्समहा
भागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः॥७॥ अमात्यैर्ब्बलिभिर्द्दुष्टैर्द्दुर्ब्बल
स्य दुरात्मभिः। कोषोबलञ्चापहृतन्तत्रापि स्वपुरे त
तः ॥८॥ ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यस्सभूपतिः॥
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्॥९॥ स तत्राश्र
ममद्राक्षीद्द्विजवर्य्यस्य मेधसः। प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मु

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

নিশিষ্যোপশোভিতম্ ॥ ১০ ॥ তস্থৌ কঞ্চিৎ স কালঞ্চ মুনি
না তেন সৎকৃতঃ ॥ ইতশ্চেতশ্চ বিচৰংস্তস্মিন্ মুনিবৰাশ্র
মে ॥ ১১ ॥ সোঽচিন্তয়ৎ তদা তত্র মমত্বাকৃষ্টচেতনঃ ॥ মৎপূ
ৰ্ব্বৈঃ পালিতং পূৰ্ব্বং ময়া হীনং পুৰং হি তৎ ॥ ১২ ॥ মদ্ভৃত্যৈস্তৈৰ
সদ্বৃত্তৈৰ্ধৰ্মতঃ পাল্যতে ন বা ॥ ন জানে স প্ৰধানো মে শূ
ৰহস্তী সদামদঃ ॥ ১৩ ॥ মম বৈৰিবশং যাতঃ কান্ ভোগানুপল
প্স্যতে ॥ যে মমানুগতা নিত্যং প্ৰসাদধনভোজনৈঃ ॥ ১৪ ॥
অনুবৃত্তিং ধ্ৰুবং তেঽদ্য কুৰ্ব্বন্ত্যন্যমহীভৃতাম্ ॥ অসম্যগ্ব্যয়শী
লৈস্তৈঃ কুৰ্ব্বদ্ভিঃ সততং ব্যয়ম্ ॥ ১৫ ॥ সঞ্চিতঃ সোঽতিদুঃখে
ন ক্ষয়ং কোষো গমিষ্যতি ॥ এতচ্চান্যচ্চ সততং চিন্তয়ামাস
পাৰ্থিৱঃ ॥ ১৬ ॥ তত্ৰ বিপ্ৰাশ্ৰমাভ্যাসে বৈশ্যমেকং দদৰ্শ সঃ ॥
স পৃষ্টস্তেন কস্ত্বং ভো হেতুশ্চাগমনেঽত্ৰ কঃ ॥ ১৭ ॥ সশোক ই
ৱ কস্মাত্ত্বং দুৰ্ম্মনা ইৱ লক্ষ্যসে ॥ ইত্যাকৰ্ণ্য ৱচস্তস্য ভূপ
তেঃ প্ৰণয়োদিতম্ ॥ ১৮ ॥ প্ৰত্যুৱাচ স তং বৈশ্যঃ প্ৰশ্ৰয়া
ৱনতো নৃপম্ ॥ ১৯ ॥ বৈশ্য উৱাচ ॥ ২০ ॥ সমাধিৰ্না
ম বৈশ্যোঽহমুৎপন্নো ধনিনাং কুলে ॥ ২১ ॥ পুত্ৰদাৰৈৰ্নিৰস্ত
শ্চ ধনলোভাদসাধুভিঃ ॥ বিহীনশ্চ ধনৈৰ্দাৰৈঃ পুত্ৰৈ
ৰাদায় মে ধনম্ ॥ ২২ ॥ ৱনমভ্যাগতো দুঃখী নিৰস্তশ্চা
প্তবন্ধুভিঃ ॥ সোঽহং ন বেদ্মি পুত্ৰাণাং কুশলাকুশলাত্মি
কাম্ ॥ ২৩ ॥ প্ৰৱৃত্তিং স্বজনানাঞ্চ দাৰাণাঞ্চাত্ৰ সংস্থিতঃ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

निशिष्योपशोभितम् ॥१०॥ तंस्थौ कञ्चित्सकालञ्च मुनि
ना तेन सत्कृतः । इतश्चेतश्च विचरँस्तस्मिन्मुनिवराश्र
मे॥११॥ सोचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः। मत्पू
र्वै पालितं पूर्व्वम्मया हीनम्पुरं हि तत्।१२॥ मद्भृत्यैस्तैर
सद्वृत्तैर्धर्म्मत पाल्यते न वा। न जाने स प्रधानो मे शू

रहस्ती सदामदः ॥१३॥ मम वैरिवशय्याँत कान्भोगानुपल
प्स्यते। ये ममानुगतानित्यम्प्रसादधनभोजनैः। । १ ४ । ।
अनुवृत्तिं ध्रुवन्तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्। असम्यग्व्ययशी
लैस्तै कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥१५॥ सञ्चितस्सोऽतिदुःखे
न क्षयङ्कोषो गमिष्यति। एतच्चान्यच्च सततञ्चिन्तयामास

पार्थिवः॥१६॥ तत्र विप्राश्रमाभ्यासे वैश्यमेकन्ददर्श सः
स पृष्टस्तेन कस्त्वम्भो हेतुश्चागमनेत्र कः ॥१७॥ सशोक
इव कस्मात्त्वन्दुर्म्मना इव लक्ष्यसे। इत्याकर्ण्य वचस्तस्य
भूपतेः प्रणयोदितम् ॥१८॥ प्रत्युवाच स तं वैश्य प्रश्रया
वनतो नृपम्॥१९॥ वैश्य उवाच॥२०॥ समाधिर्न्ना

म वैश्योहमुत्पन्नो धनिनाङ्कुले॥२१॥ पुत्रदारैर्न्निरस्त
श्च धनलोभादसाधुभिः। विहीनश्च धनैर्द्दारै पुत्रै
रादाय मे धनम्॥२२॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चा
प्तबन्धुभिः। सोहन्न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मि
काम्॥२३॥ प्रवृत्तिं स्वजनानाञ्च दाराणाञ्चात्र संस्थितः।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

কিন্নুতেষাং গৃহেক্ষেমমক্ষেমং কিন্নুসাম্প্রতম্ ॥২৪॥ কথান্তে
কিন্নুসদ্বৃত্তা দুৰ্বৃত্তাঃ কিন্নুমেসুতাঃ ॥ ২৫ ॥ ৰাজোবাচ ॥২৬॥
যৈৰ্নিৰস্তোভবাঁল্লুব্ধৈঃ পুত্ৰদাৰাদিভিৰ্ধনৈঃ ॥২৭ ॥ তে
ষুকিংভবতঃস্নেহমনুবধ্নাতিমানসম্ ॥ ২৮ ॥ বৈশ্যউবা
চ ॥ ২৯ ॥ এবমেতদ্যথাপ্ৰাহভবানস্মদ্গতংবচঃ ॥ ৩০ ॥

কিংকৰোমিনবধ্নাতিমমনিষ্ঠুৰতাংমনঃ ॥ যৈঃসন্ত্যজ্যপিতৃ
স্নেহংধনলুব্ধৈৰ্নিৰাকৃতঃ ॥ ৩১ ॥ পতিস্বজনহাৰ্দঞ্চহাৰ্দি
তেষ্বেৱমেমনঃ ॥ কিমেতন্নাভিজানামিজানন্নপিমহাম
তে ॥ ৩২ ॥ যৎপ্ৰেমপ্ৰৱণংচিত্তংবিগুণেষ্বপিবন্ধুষু ॥
তেষাংকৃতেমেনিঃশ্বাসোদৌৰ্ম্মনস্যঞ্চজায়তে ॥ ৩৩ ॥

কৰোমিকিংযন্নমনস্তেষ্বপ্ৰীতিষুনিষ্ঠুৰম্ ॥ ৩৪ ॥ মাৰ্কণ্ডে
য়উৱাচ ॥ ৩৫ ॥ ততস্তৌসহিতৌবিপ্ৰতম্মুনিংসমুপস্থি
তৌ ॥ ৩৬ ॥ সমাধিৰ্নামবৈশ্যোঽসৌসচপাৰ্থিৱসত্তমঃ ॥
কৃত্বাতুতৌযথান্যায়ংযথাৰ্হন্তেনসংবিদম্ ॥ ৩৭ ॥ উপবি
ষ্টৌকথাঃকাশ্চিচ্চক্ৰতুৰ্বৈশ্যপাৰ্থিৱৌ ॥ ৩৮ ॥ ৰাজোবা

চ ॥ ৩৯ ॥ ভগৱংস্ত্বামহংপ্ৰষ্টুমিচ্ছাম্যেকংবদস্বতৎ ॥ ৪০ ॥
দুঃখায়যন্মেমনসঃস্বচিত্তায়ত্ততাংবিনা ॥ মমত্বংগতৰাজ্য
স্যৰাজ্যাঙ্গেষ্বখিলেষ্বপি ॥ ৪১ ॥ জানতোঽপিযথাজ্ঞস্য
কিমেতন্মুনিসত্তম ॥ অয়ঞ্চনিকৃতঃপুত্ৰৈৰ্দাৰৈৰ্ভৃত্যৈস্তথোজ্ঝি
তঃ ॥ ৪২ ॥ স্বজনেনচসন্ত্যক্তস্তেষুহাৰ্দীতথাপ্যতি

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

किन्नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमङ्किन्नु साम्प्रतम् ॥२४॥ कथन्ते
किन्नु सद्वृत्ता दुर्व्वृत्ताः किन्नु मे सुताः ।२५॥ राजोवाच ॥२६॥
यैर्निरस्तो भवान् लुब्धै पुत्रदारादिभिर्धनैः॥२७॥ ते
षु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्॥२८॥ वैश्य उवा
च॥२९॥ एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः॥३०॥

किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरताम्मनः॥ यैस्सन्त्यज्य पितृ
स्नेहन्धनलुब्धैर्न्निराकृतः॥३१॥ पतिस्वजनहार्दञ्च हार्दि
तेष्वेव मे मनः। किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महाम
ते ॥३२॥ यत्प्रेमप्रवणञ्चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासादौर्म्मनस्यञ्च जायते॥३३॥

करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥३४॥ मार्क्कण्डे
य उवाच ॥३५॥ ततस्तौ सहितौ विप्र तम्मुनिं समुपस्थि
तौ ॥३६॥ समाधिर्न्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायय्यँथार्हन्तेन संविदम् ॥३७॥ उपवि
ष्टौ कथा काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥३८॥ राजोवा

च ॥३९॥ भगवंस्त्वामहम्प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥४०॥
दुःखाय यन्मे मनसस्स्वचित्तायत्तताम्विना । ममत्वम्मम राज्य
स्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ॥४१॥ जानतोपि यथाज्ञस्य
किमेतन्मुनिसत्तम॥ अयञ्च निकृत पुत्रैर्द्दारैर्भृत्यै
स्तथोज्झितः ॥४२॥ स्वजनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी तथा

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ষ্যতি॥এবমেষতথাহঞ্চদ্বাবপ্যত্যন্তদুঃখিতৌ॥ ৪৩ ॥দৃষ্ট
দোষেঽপিবিষয়েমমত্বাকৃষ্টমানসৌ॥তৎকেনৈতন্মহাভাগয
ন্মোহোজ্ঞানিনোরপি॥ ৪৪ ॥মমাস্যচভবত্যেষাবিবেকান্ধ
স্যমূঢ়তা॥ ৪৫ ॥ঋষিরুবাচ॥ ৪৬ ॥জ্ঞানমস্তিসমস্ত
স্যজন্তোর্বিষয়গোচরে॥ ৪৭ ॥বিষয়শ্চমহাভাগজাতি
চৈবংপৃথক্পৃথক্॥দিবান্ধাঃপ্রাণিনঃকেচিদ্রাত্রাবন্ধাস্তথা
পরে॥ ৪৮ ॥কেচিদ্দিবাতথারাত্রৌপ্রাণিনস্তুল্যদৃষ্টয়ঃ॥
জ্ঞানিনোমনুজাঃসত্যংকিন্তুতেনহিকেবলম্॥ ৪৯ ॥যতোহি
জ্ঞানিনঃসর্ব্বেপশুপক্ষিমৃগাদয়ঃ॥জ্ঞানঞ্চতন্মনুষ্যাণাংযৎ
তেষাংমৃগপক্ষিণাম্॥ ৫০ ॥মনুষ্যাণাঞ্চযত্তেষাংতুল্যমন্য
ত্তথোভয়োঃ॥জ্ঞানেঽপিসতিপশ্যৈতান্পতগাঞ্ছাবচঞ্চুষু॥ ৫১ ॥
কণমোক্ষাদৃতান্মোহাৎপীড্যমানানপিক্ষুধা॥মানুষামনুজ
ব্যাঘ্রসাভিলাষাঃসুতান্প্রতি॥ ৫২ ॥লোভাৎপ্রত্যুপকারায়ন
ন্বেতান্কিংনপশ্যসি॥তথাপিমমতাবর্ত্তেমোহগর্ত্তেনিপাতি
তাঃ॥ ৫৩ ॥মহামায়াপ্রভাবেণসংসারস্থিতিকারিণা॥
তন্নাত্রবিস্ময়ঃকার্য্যোযোগনিদ্রাজগৎপতেঃ॥ ৫৪ ॥মহামা
য়াহরেশ্চৈষাতয়াসম্মোহ্যতেজগৎ॥জ্ঞানিনামপিচেতাং
সিদেবীভগবতীহিসা॥ ৫৫ ॥বলাদাকৃষ্যমোহায়মহামা
য়াপ্রযচ্ছতি॥তয়াবিসৃজ্যতেবিশ্বংজগদেতচ্চরাচরম্॥
৫৬ ॥সৈষাপ্রসন্নাবরদানৃণাংভবতিমুক্তয়ে॥সাবিদ্যাপ

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

प्यति। एवमेष तथाहञ्च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥४३॥ दृष्ट दोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ । तत्केनैतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥४४॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥४५॥ ऋषिरुवाच ॥४६॥ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्व्विषयगोचरे ॥४७॥ विषयश्च महाभाग जातिश्चैवं पृथक् पृथक्। दिवान्धा प्राणिन केचिद्रात्रावन्धास्तथा परे ॥४८॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः। ज्ञानिनो मनुजास्सत्यङ्किन्तु ते नहि केवलम्॥४९॥ यतो हि ज्ञानिनस्सर्व्वे पशुपक्षिमृगादयः॥ ज्ञानञ्च तन्मनुष्याणां यत्तेषाम्मृगपक्षिणाम् ॥५०॥ मनुष्याणाञ्च यत्तेषान्तुल्यमन्यत्तथोभयोः॥ ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतगाञ्छावचञ्चुषु॥५१॥ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा॥ मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषास्सुतान्प्रति॥५२॥ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेते किन्न पश्यसि॥ तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्त्ते निपातिताः ॥५३॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणः। तन्नात्र विस्मय कार्य्यो योगनिद्रा जगत्पतेः॥५४॥ महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्। ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा॥५५॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति। तया विसृज्यते विश्वञ्जगदेतच्चराचरम् ॥५६॥ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणाम्भवति मुक्तये॥ सा विद्या प

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ৰমামুক্তেৰ্হেতুভূতাসনাতনী॥৬৭॥সংসারবন্ধহেতুশ্চৈৰসৈ
ৰসর্ব্বেশ্বরেশ্বরী॥৬৮॥ৰাজোৱাচ॥৬৯॥ভগৱন্কাহি
সাদেৰীমহামায়েতিযাম্ভৱান্॥৬০॥ব্রৰীতিকথমুৎপন্নাসা
কর্ম্মাস্যাশ্চকিংদ্বিজ॥যৎস্বভাৱাচসাদেৰীযৎস্বৰূপাযদুদ্ভৱা॥
৬১॥তৎসর্ব্বংশ্রোতুমিচ্ছামিত্বত্তোব্রহ্মবিদাম্বৰ॥৬২॥

ঋষিৰুৱাচ॥৬৩॥নিত্যৈৰসাজগন্মূর্ত্তিস্তয়াসর্ব্বমিদন্ততম্॥
৬৪॥তথাপিতৎসমুৎপত্তির্বহুধাশ্রূয়তাম্মম॥দেৰানাংকা
র্য্যসিদ্ধ্যর্থমাৱির্ভৱতিসাযদা॥৬৫॥উৎপন্নেতিতদালো
কেসানিত্যাপ্যভিধীয়তে॥যোগনিদ্রাংযদাবিষ্ণুর্জ্জগত্যেকা
র্ণৱীকৃতে॥৬৬॥আস্তীর্য্যশেষমভজৎকল্পান্তেভগৱান্

প্রভুঃ॥তদাদ্বাৱসুরৌঘোরৌৱিখ্যাতৌমধুকৈটভৌ॥৬৭॥ৱি
ষ্ণুকর্ণমলোদ্ভূতৌহন্তুংব্রহ্মাণমুদ্যতৌ॥সনাভিকমলেৱিষ্ণোঃ
স্থিতোব্রহ্মাপ্রজাপতিঃ॥৬৮॥দৃষ্ট্বাতাৱসুরৌচোগ্রৌপ্রসু
প্তঞ্চজনার্দ্দনম্॥তুষ্টাৱযোগনিদ্রান্তামেকাগ্রহৃদয়স্থি
তঃ॥৬৯॥ৱিবোধনার্থায়হরের্হরিনেত্রকৃতালয়াম্॥৭০॥

ব্রহ্মোৱাচ॥৭১॥ৱিশ্বেশ্বরীঞ্জগদ্ধাত্রীংস্থিতিসংহারকারি
ণীম্॥নিদ্রাম্ভগৱতীংৱিষ্ণোরতুলান্তেজসঃপ্রভুঃ॥৭২॥ত্বংস্বা
হাত্বংস্বধাত্বংহিৱষট্কারঃস্বরাত্মিকা॥৭৩॥সুধাত্বমক্ষরেনি
ত্যেত্রিধামাত্রাত্মিকাস্থিতা॥অর্দ্ধমাত্রাস্থিতানিত্যাযানুচ্চার্য্যা
ৱিশেষতঃ॥৭৪॥ত্বমেৱসন্ধ্যাসাৱিত্রীত্বন্দেৱিজননীপরা৷

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

रमामुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥५७॥ संसारबन्धहेतुश्च सै
व सर्वेश्वरेश्वरी॥५८॥ राजोवाच ॥५९॥ भगवन् का हि
सा देवी महामायेति याम्भवान्॥६०॥ व्रवीति कथमुत्पन्ना सा
कर्मास्याश्च किन्द्विज॥ यत्स्वभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा
॥६१॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदाम्बँर॥६२॥

ऋषिरुवाच ॥६३॥ नित्यैव सा जगन्मूर्त्तिस्तया सर्व्वमिदन्ततम्
॥६४॥ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयताम्मम। देवानाङ्का
र्य्य सिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा॥६५॥ उत्पन्नेति तदा लो
के सा नित्याप्यभिधीयते। योगनिद्राय्यँदा विष्णुर्ज्जगत्येका
र्णवीकृते ॥६६॥ आस्तीर्य्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवा

न्प्रभुः। तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ॥६७॥ वि
ष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ। स नाभिकमले विष्णोः
स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः॥६८॥ दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसु
प्तञ्च जनार्द्दनम्। तुष्टाव योगनिद्रान्तामेकाग्रहृदयस्थि
तः॥६९॥ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्॥७०॥

ब्रह्मोवाच ॥७१॥ विश्वेश्वरीञ्जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणी
म्। स्तौमि निद्राम्भगवतीं विष्णोरतुलतेजसः ॥७२॥ त्वं स्वा
हा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारस्वरात्मिका॥७३॥ सुधा त्वमक्षरे नि
त्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता। अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्य्या
विशेषतः ॥७४॥ त्वमेव सा त्वं सावित्री त्वन्देवि जननी परा।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ত্বয়ৈতদ্ধাৰ্য্যতে বিশ্বং ত্বয়ৈতৎ সৃজ্যতে জগৎ ॥ ৭৫ ॥ ত্বয়ৈতৎ পা
ল্যতে দেবি ত্বমৎস্যন্তে চ সৰ্ব্বদা ॥ বিসৃষ্টৌ সৃষ্টিৰূপা ত্বং স্থিতি
ৰূপা চ পালনে ॥ ৭৬ ॥ তথা সংহৃতিৰূপান্তে জগতোঽস্য জগন্ম
য়ে ॥ মহাবিদ্যা মহামায়া মহামেধা মহাস্মৃতিঃ ॥ ৭৭ ॥ মহা
মোহা চ ভৱতী মহাদেবী মহাসুৰী ॥ প্ৰকৃতিস্ত্বঞ্চ সৰ্ব্বস্য গুণ
ত্ৰয়বিভাৱিনী ॥ ৭৮ ॥ কালৰাত্ৰিৰ্মহাৰাত্ৰিৰ্মোহৰাত্ৰিশ্চ দা
ৰুণা ॥ ত্বং শ্ৰীস্ত্বমীশ্বৰী ত্বং হ্ৰীস্ত্বং বুদ্ধিৰ্বোধলক্ষণা ॥ ৭৯ ॥ ল
জ্জা পুষ্টিস্তথা তুষ্টিস্ত্বং শান্তিঃ ক্ষান্তিৰেৱ চ ॥ খড়্গিনী শূলি
নী ঘোৰা গদিনী চক্ৰিণী তথা ॥ ৮০ ॥ শঙ্খিনী চাপিনী বাণ
ভুশুণ্ডী পৰিঘায়ুধা ॥ সৌম্যা সৌম্যতৰাশেষসৌম্যেভ্যস্ত্বতিসু
ন্দৰী ॥ ৮১ ॥ পৰাপৰাণাং পৰমা ত্বমেৱ পৰমেশ্বৰী ॥ যচ্চ কি
ঞ্চিৎ ক্বচিদ্বস্তু সদসদ্বাখিলাত্মিকে ॥ ৮২ ॥ তস্য সৰ্ব্বস্য যা শ
ক্তিঃ সা ত্বং কিং স্তূয়সে তদা ॥ যয়া ত্বয়া জগৎস্ৰষ্টা জগৎপাত্যত্তি
যো জগৎ ॥ ৮৩ ॥ সোঽপি নিদ্ৰাৱশং নীতঃ কস্ত্বাং স্তোতুমিহে
শ্বৰঃ ॥ বিষ্ণুঃ শৰীৰগ্ৰহণমহমীশান এৱ চ ॥ ৮৪ ॥ কাৰি
তাস্তে যতোঽতস্ত্বাং কঃ স্তোতুং শক্তিমান্ ভৱেৎ ॥ সা ত্বমিত্থং প্ৰভাৱৈঃ
স্বৈৰুদাৰৈৰ্দেবি সংস্তুতা ॥ ৮৫ ॥ মোহয়ৈতৌ দুৰাধৰ্ষাৱসুৰৌ
মধুকৈটভৌ ॥ প্ৰবোধঞ্চ জগৎস্বামী নীয়তামচ্যুতো লঘু ॥
৮৬ ॥ বোধশ্চ ক্ৰিয়তামস্য হন্তুমেতৌ মহাসুৰৌ ॥ ৮৭ ॥
ঋষিৰুৱাচ ॥ ৮৮ ॥ এৱং স্তুতা তদা দেবী তামসী তত্ৰ বেধ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

त्वयैतद्धार्य्यते विश्वन्त्वयैतत्सृज्यते जगत्॥७५॥ त्वयैतत्पा
ल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्व्वदा। विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थिति
रूपा च पालने॥७६॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्म
ये। महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः॥७७॥ महा
मोहा च भवती महादेवी महासुरी। प्रकृतिस्त्वञ्च सर्वस्य गुण
त्रयविभाविनी॥७८॥ कालरात्रिर्म्महारात्रिर्म्मोहरात्रिश्च दा
रुणा। त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वम्बुद्धिर्ब्बोधलक्षणा॥७९॥ ल
ज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च। खड्गिनी शूलि
नी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥८०॥ शङ्खिनी चापिनी बाणा
भुशुण्डी परिघायुधा। सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्व
तिसुन्दरी॥८१॥ परापराणाम्परमा त्वमेव परमेश्वरी। यच्च कि
ञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥८२॥ तस्य सर्व्वस्य या श
क्तिस्सा त्वं किं स्तूयसे तदा। यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पातात्ति
यो जगत् ॥८३॥ सोपि निद्रावशन्नीत कस्त्वां स्तोतुमिहे
श्वरः । विष्णुश्शरीरग्रहणमहमीशान एव च॥८४॥ कारि
तास्ते यतोतस्त्वाङ्कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत्। सा त्वमित्थम्प्रभावै
स्स्वैरुदारैर्द्देवि संस्तुता ॥८५॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ
मधुकैटभौ। प्रबोधञ्च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु
॥८६॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥८७॥
ऋषिरुवाच ॥८८॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेध

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

সা ॥ ৮৯ ॥ বিষ্ণোঃ প্রবোধনার্থায় নিহন্তুং মধুকৈটভৌ ॥ নেত্রা
স্যনাসিকাবাহুহৃদয়েভ্যস্তথোরসঃ ॥ ৯০ ॥ নির্গম্য দর্শ
নে তস্থৌ ব্রহ্মণোঽব্যক্তজন্মনঃ ॥ উত্তস্থৌ চ জগন্নাথস্ত
য়া মুক্তো জনার্দনঃ ॥ ৯১ ॥ একার্ণবেঽহিশয়নাত্ততঃ স
দদৃশে চ তৌ ॥ মধুকৈটভৌ দুরাত্মানাবতিবীর্যপরা

ক্রমৌ ॥ ৯২ ॥ ক্রোধরক্তেক্ষণাবত্তুং ব্রহ্মাণং জনিতোদ্য
মৌ ॥ সমুত্থায় ততস্তাভ্যাং যুযুধে ভগবান্ হরিঃ ॥ ৯৩ ॥
পঞ্চবর্ষসহস্রাণি বাহুপ্রহরণো বিভুঃ ॥ তাবপ্যতির
লোন্মত্তৌ মহামায়াবিমোহিতৌ ॥ ৯৪ ॥ উক্তবন্তৌ ব
রোঽস্মত্তো ব্রিয়তামিতি কেশবম্ ॥ ৯৫ ॥ শ্রীভগবানু

বাচ ॥ ৯৬ ॥ ভবেতামদ্য মে তুষ্টৌ মম বধ্যাবুভাবপি ॥ ৯৭ ॥
কিমন্যেন বরেণাত্র এতাবদ্ধি বৃতং ময়া ॥ ৯৮ ॥ ঋষিরু
বাচ ॥ ৯৯ ॥ বঞ্চিতাভ্যামিতি তদা সর্বমাপোময়ং জগৎ ॥
১০০ ॥ বিলোক্য তাভ্যাং গদিতো ভগবান্ কমলেক্ষণঃ ॥ প্রীতৌ
স্বস্তব যুদ্ধেন শ্লাঘ্যস্ত্বং মৃত্যুরাবয়োঃ ॥ আবাং জহি ন যত্রো

র্বী সলিলেন পরিপ্লুতা ॥ ১০১ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ১০২ ॥ তথেত্যু
ক্ত্বা ভগবতা শঙ্খচক্রগদাভৃতা ॥ কৃত্বা চক্রেণ বৈ ছিন্নে জ
ঘনে শিরসী তয়োঃ ॥ ১০৩ ॥ এবমেষা সমুৎপন্না ব্রহ্মণা সং
স্তুতা স্বয়ম্ ॥ প্রভাবমস্যা দেব্যাস্তু ভূয়ঃ শৃণু বদামি তে ॥
১০৪ ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবীমা

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

सा ।।८९।। विष्णोप्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ। नेत्रा
स्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः।।९०।। निर्गम्य दर्श
ने तस्थौ ब्रह्मणोव्यक्तजन्मनः । उत्तस्थौ च जगन्नाथस्त
या मुक्तो जनार्द्दनः ।।९१।। एकार्णवेहिशयनात्ततस्स
ददृशे च तौ। मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्य्यपरा
क्रमौ।।९२।। क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणञ्जनितोद्य
मौ। समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान्हरिः ।।९३।।
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः। तावप्यतिब
लोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ।।९४।। उक्तवन्तौ व
रोस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्।।९५।। श्रीभगवानु
वाच ।।९६।। भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि।।९७।।
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतम्मया।।९८।। ऋषिरुवा
च ।।९९।। वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्व्वमापोमयञ्जगत्।।
१००।। विलोक्य ताभ्याङ्गदितो भगवान्कमलेक्षणः।। प्रीतौ
स्वस्तव युद्धेन श्लाघ्यस्त्वन्मृत्युरावयोः।। आवाञ्जहि न यत्रो
र्व्वी सलिलेन परिप्लुता ।।१०१।। ऋषिरुवाच।।१०२।। तथेत्यु
क्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता। कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने ज
घने शिरसी तयोः ।। १०३।। एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा सं
स्तुता स्वयम् । प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते
।।१०४।। इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी मा

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

গা॥গ্‌মধ্যমচৰিত্ৰস্য॥১॥ॐ॥ঋষিৰুৱাচ॥১॥দেৱাসু
ৰমভূদ্যুদ্ধংপূৰ্ণমব্দশতংপুৰা।মহিষেঽসুৰাণামধিপে
দেৱানাঞ্চপুৰন্দৰে॥২॥তত্ৰাসুৰৈৰ্মহাৱীৰ্য্যৈৰ্দেৱ
সৈন্যংপৰাজিতম্।জিত্বাচসকলান্দেৱানিন্দ্ৰোঽভূন্মহি
ষাসুৰঃ॥৩॥ততঃপৰাজিতাদেৱাঃপদ্মযোনিংপ্ৰজা
পতিম্।পুৰস্কৃত্যগতাস্তত্ৰযত্ৰেশগৰুড়ধ্বজৌ॥৪॥যথা
বৃত্তংতয়োস্তদ্বন্মহিষাসুৰচেষ্টিতম্।ত্ৰিদশাঃকথয়ামা
সুৰ্দেৱাভিভৱৱিস্তৰম্॥৫॥সূৰ্য্যেন্দ্ৰাগ্ন্যনিলেন্দূনাংয
মস্যৱৰুণস্যচ।অন্যেষাঞ্চাধিকাৰান্সস্বয়মেৱাধি
তিষ্ঠতি॥৬॥স্বৰ্গান্নিৰাকৃতাঃসৰ্ব্বেতেনদেৱগণাভু
ৱি।ৱিচৰন্তিযথামৰ্ত্ত্যামহিষেণদুৰাত্মনা॥৭॥এতদ্বঃক
থিতংসৰ্ব্বমমৰাৰিৱিচেষ্টিতম্।শৰণংৱঃপ্ৰপন্নাঃস্মোৱধস্ত
স্যৱিচিন্ত্যতাম্॥৮॥ইত্থংনিশম্যদেৱানাংৱচাংসিমধু
সূদনঃ।চকাৰকোপংশম্ভুশ্চভ্ৰুকুটীকুটিলাননৌ॥৯॥
ততোঽতিকোপপূৰ্ণস্যচক্ৰিণোৱদনাত্ততঃ।নিশ্চক্ৰামম
হত্তেজোব্ৰহ্মণঃশঙ্কৰস্যচ॥১০॥অন্যেষাঞ্চৈৱদেৱানাং
শক্ৰাদীনাংশৰীৰতঃ।নিৰ্গতংসুমহত্তেজস্তচ্চৈক্যংসমগচ্ছ
ত॥১১॥অতীৱতেজসঃকূটংজ্বলন্তমিৱপৰ্ব্বতম্॥
দদৃশুস্তেসুৰাস্তত্ৰজ্বালাৱ্যাপ্তদিগন্তৰম্॥১২॥অতুলন্ত
ত্ৰতত্তেজঃসৰ্ব্বদেৱশৰীৰজম্।একস্থংতদভূন্নাৰী

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

हात्म्ये मधुकैटभवधः॥१॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥१॥ देवासु
रमभूद्युद्धम्पूर्णमब्दशतम्पुरा। महिषेसुराणामधिपे
देवानाञ्च पुरन्दरे॥२॥ तत्रासुरैर्म्महावीर्य्यैर्द्देव
सैन्यम्पराजितम्। जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोभून्महि
षासुरः ॥३॥ तत पराजिता देवा पद्मयोनिम्प्रजा
पतिम्। पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुड़ध्वजौ॥४॥ यथा
वृत्तन्तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्। त्रिदशा कथया
मासुर्द्देवाभिभवविस्तरम् ॥५॥ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां य
मस्य वरुणस्य च। अन्येषाञ्चाधिकारान्स स्वयमेवाधि
तिष्ठति॥६॥ स्वर्गान्निराकृतास्सर्वे तेन देवगणाभु
वि। विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना॥७॥ एतद्व क
थितं सर्वममरारिविचेष्टितम्। शरणञ्च प्रपन्नाः स्मो वध
स्तस्य विचिन्त्यताम्॥८। इत्थन्निशम्य देवानां वचांसि मधु
सूदनः। चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ॥९॥
ततोतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः। निश्चक्राम म
हत्तेजो ब्रह्मणः श्शङ्करस्य च॥१०॥ अन्येषाञ्चैव देवानां
शक्रादीनां शरीरतः। निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समग
च्छत॥११॥ अतीव तेजस कूटञ्ज्वलन्तमिव पर्व्वतम् ।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥१२॥ अतुलन्त
त्र तत्तेजस्सर्व्वदेवशरीरजम्॥ एकस्थन्तदभून्नारी

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ব্যাপ্তলোকত্রয়ং ত্বিষা ॥ ১৩ ॥ যদভূচ্ছাম্ভবং তেজস্তেনাজায়ত
তন্মুখম্ । যাম্যেন চাভবন্ কেশা বাহবো বিষ্ণুতেজসা ॥ ১৪ ॥
সৌম্যেন স্তনয়োর্যুগ্মং মধ্যং চৈন্দ্রেণ চাভবৎ । বারুণেন চ জ
ঙ্ঘোরূ নিতম্বস্তেজসা ভুবঃ ॥ ১৫ ॥ ব্রহ্মণস্তেজসা পাদৌ তদ
ঙ্গুল্যোঽর্কতেজসা । বসূনাঞ্চ করাঙ্গুল্যঃ কৌবেরেণ চ নাসি
কা ॥ ১৬ ॥ তস্যাস্তু দন্তাঃ সম্ভূতাঃ প্রাজাপত্যেন তেজসা । নয়ন
ত্রিতয়ং জজ্ঞে তথা পাবকতেজসা ॥ ১৭ ॥ ভ্রুবৌ চ সন্ধ্যয়োস্তে
জঃ শ্রবণাবনিলস্য চ । অন্যেষাঞ্চৈব দেবানাং সম্ভবস্তেজ
সাং শিবা ॥ ১৮ ॥ ততঃ সমস্তদেবানাং তেজোরাশিসমুদ্ভব
াম্ । তাং বিলোক্য মুদং প্রাপুরমরা মহিষার্দিতাঃ ॥ ১৯ ॥ শূলং
শূলাদ্বিনিষ্কৃষ্য দদৌ তস্মৈ পিনাকধৃক্ । চক্রঞ্চ দত্তবান্ কৃষ্ণ
ঃ সমুৎপাদ্য স্বচক্রতঃ ॥ ২০ ॥ শঙ্খঞ্চ বরুণঃ শক্তিং দদৌ তস্মৈ
হুতাশনঃ । মারুতো দত্তবাংশ্চাপং বাণপূর্ণে তথেষুধী ॥ ২১ ॥
বজ্রমিন্দ্রঃ সমুৎপাদ্য কুলিশাদমরাধিপঃ । দদৌ তস্মৈ
সহস্রাক্ষো ঘণ্টামৈরাবতাদ্গজাৎ ॥ ২২ ॥ কালদণ্ডাদ্য
মো দণ্ডং পাশঞ্চাম্বুপতির্দদৌ । প্রজাপতিশ্চাক্ষমালাং দদৌ ব্র
হ্মা কমণ্ডলুম্ ॥ ২৩ ॥ সমস্তরোমকূপেষু নিজরশ্মীন্ দিবাক
রঃ । কালশ্চ দত্তবান্ খড়্গং তস্যাশ্চর্ম্ম চ নির্ম্মলম্ ॥ ২৪ ॥
ক্ষীরোদশ্চামলং হারমজরে চ তথাম্বরে । চূড়ামণিং তথা
দিব্যং কুণ্ডলে কটকানি চ ॥ ২৫ ॥ অর্দ্ধচন্দ্রং তথা শুভ্রং কেয়ূ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

व्याप्तलोकत्रयन्त्विषा॥१३॥ यद्भूच्छाम्भवन्तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्॥ याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥१४॥ सौम्येन स्तनयोर्युग्मम्मध्यञ्चैन्द्रेण चाभवत्। वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः॥१५॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योर्क्कतेजसा। वसूनां च कराङ्गुल्य कौवेरेण च नासिका ॥१६॥ तस्यास्तु दन्तास्सम्भूता प्राजापत्येन तेजसा। नयनत्रितयञ्जज्ञे तथा पावकतेजसा॥१७॥ भ्रूवौ च सन्ध्ययोस्तेजश्रवणावनिलस्य च। अन्येषाञ्चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥१८॥ ततस्समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्। तां विलोक्य मुदम्प्रापुरमरामहिषार्द्दिताः॥१९॥ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्। चक्रञ्च दत्तवान्कृष्णस्समुत्पाट्य स्वचक्रतः॥२०॥ शङ्खञ्च वरुणश्शक्तिन्ददौ तस्यै हुताशनः। मारुतो दत्तवाँश्चापम्बाणपूर्णे तथेषुधी ॥२१॥ वज्रमिन्द्रस्समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः । ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद्गजात्॥२२॥ कालदण्डाद्यमोदण्डं पाशञ्चाम्बुपतिर्द्ददौ। प्रजापतिश्चाक्षमालान्ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥२३॥ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन्दिवाकरः। कालश्च दत्तवान्खड्गन्तस्यै चर्म्म च निर्म्मलम्॥२४॥ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे। चूडामणिन्तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च॥२५॥ अर्धचन्द्रन्तथा शुभ्रङ्केयू

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

বাহুষু।। নূপুরৌ বিমলৌ তদ্বদ্গ্রৈবেয়কমনুত্ত
মং।। ২৬ ।।অঙ্গুরীয়করত্নানি সমস্তাস্বঙ্গুলীষু চ ।।বি
শ্বকর্ম্মা দদৌ তস্যৈ পরশুঞ্চাতিনির্ম্মলং।। ২৭ ।। অ
স্ত্রাণ্যনেকরূপাণি তথাভেদ্যঞ্চ দংশনং।। অম্লানপঙ্ক
জাং মালাং শিরস্যুরসি চাপরাং।। ২৮ ।।অদদজ্জলধিস্ত
স্যৈ পঙ্কজঞ্চাতিশোভনং।। হিমবান্বাহনং সিংহং রত্নানি বিবি
ধানি চ।। ২৯ ।।দদাবশূন্যং সুরয়া পানপাত্রং ধনাধিপঃ।।শে
ষশ্চ সর্ব্বনাগেশো মহামণিবিভূষিতং।। ৩০ ।।নাগহারং
দদৌ তস্যৈ ধত্তে যঃ পৃথিবীমিমাং।। অন্যৈরপি সুরৈর্দে
বী ভূষণৈরায়ুধৈস্তথা।। ৩১ ।। সম্মানিতা ননাদোচ্চৈ
সাট্টহাসং মুহুর্ম্মুহুঃ। তস্যা নাদেন ঘোরেণ কৃৎস্নমাপূরিতং
নভঃ।। ৩২ ।। অমায়তাতিমহতা প্রতিশব্দো মহানভূৎ।।
চুক্ষুভুঃ সকলা লোকাঃ সমুদ্রাশ্চ চকম্পিরে।। ৩৩ ।। চচাল
বসুধা চেলুঃ সকলাশ্চ মহীধরাঃ। জয়েতি দেবাশ্চ মুদা তা
মূচুঃ সিংহবাহিনীং।। ৩৪ ।। তুষ্টুবুর্ম্মুনয়শ্চৈনাং ভক্তিন
ম্রাত্মমূর্ত্তয়ঃ।। দৃষ্ট্বা সমস্তং সংক্ষুব্ধং ত্রৈলোক্যমমরারয়ঃ।। ৩৫ স
ন্নদ্ধাখিলসৈন্যাস্তে সমুত্তস্থুরুদায়ুধাঃ। আঃ কিমেতদি
তি ক্রোধাদাভাষ্য মহিষাসুরঃ।। ৩৬ ।।অভ্যধাবত তং শব্দম
শেষৈরসুরৈর্বৃতঃ।। স দদর্শ ততো দেবীং ব্যাপ্তলোকত্র
য়াং ত্বিষা।। ৩৭ ।।পাদাক্রান্ত্যা নতভুবং কিরীটোল্লিখিতা

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

रान्त्सर्वबाहुषु। नूपुरौ विमलौ तद्वद्ग्रैवेयकमनुत्तम
म् ॥२६॥ अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वाङ्गुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुञ्चातिनिर्म्मलम्॥२७॥ अ
स्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यञ्च दंशनम्। अम्लानपङ्क
जां मालां शिरस्युरसि चापराम्॥२८॥ अददज्जलधिस्त

स्यै पङ्कजञ्चातिशोभनम्। हिमवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विवि
धानि च॥२९॥ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः। शे
षश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्॥३०॥ नागहारं
ददौ तस्यै धत्ते य पृथिवीमिमाम्। अन्यैरपि सुरै
र्देवी भूषणैरायुधैस्तथा॥३१॥ सम्मानिता ननादोच्चै

स्साट्टहासं मुहुर्म्मुहुः। तस्यानादेन घोरेण कृत्स्नमापूरित
न्नभः ॥३२॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुस्सकला लोकास्समुद्राश्च चकम्पिरे॥३३॥ चचाल
वसुधा चेलुस्सकलाश्च महीधराः। जयेति देवाश्च मुदा ता
मूचुस्सिंहवाहिनीम्॥३४॥ तुष्टुवुर्म्मुनयश्चैनाम्भक्तिन

म्रात्ममूर्त्तयः। दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धन्त्रैलोक्यममरारयः॥३५॥
सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः। आ किमेतदि
ति क्रोधादाकृष्य महिषासुरः॥३६॥ अभ्यधावत तं शब्दम
शेषैरसुरैर्व्वृतः। स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्र
यान्त्विषा॥३६॥ पादाक्रान्त्या नतभुवङ्किरीटोल्लिखिता

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

মুখাম্॥ক্ষোভিতাশেষপাতালাংধনুর্জ্যানিস্বনেনতাম্॥৩৮
দিশোভুজসহস্রেণসমন্তাদ্ব্যাপ্যসংস্থিতাম্॥ততঃপ্রববৃ
তেযুদ্ধংতয়াদেব্যাসুরদ্বিষাম্॥ ৩৯ ॥শস্ত্রাস্ত্রৈর্বহুধামু
ক্তৈরাদীপিতদিগন্তরম্॥মহিষাসুরসেনানীশ্চিক্ষুরা
খ্যোমহাসুরঃ॥ ৪০ ॥যুযুধেচামরশ্চান্যৈশ্চতুরঙ্গব
লান্বিতঃ॥রথানামযুতৈঃষড্ভিরুদগ্রাখ্যোমহাসুরঃ॥ ৪১ ॥
অযুধ্যতাযুতানাঞ্চসহস্রেণমহাহনুঃ॥পঞ্চাশদ্ভিশ্চনিযু
তৈরসিলোমামহাসুরঃ॥ ৪২ ॥অযুতানাংশতৈঃষড্ভির্বাষ্
কলোযুযুধেরণে॥গজবাজিসহস্রৌঘৈরনেকৈঃপ
রিবারিতঃ॥ ৪৩ ॥বৃতোরথানাংকোট্যাচযুদ্ধেতস্মি
ন্নযুধ্যত॥বিড়ালাখ্যোঽযুতানাঞ্চপঞ্চাশদ্ভিরথাযু
তৈঃ॥ ৪৪ ॥যুযুধেসংযুগেতত্ররথানাংপরিবারিতঃ॥
অন্যেচতত্রাযুতশোরথনাগহয়ৈর্বৃতাঃ॥ ৪৫ ॥যুযু
ধুঃসংযুগেদেব্যাসহতত্রমহাসুরাঃ॥কোটিকোটিস
হস্রৈস্তুরথানাংদন্তিনাংতথা॥ ৪৬ ॥হয়ানাঞ্চবৃতো
যুদ্ধেতত্রাভূন্মহিষাসুরঃ॥তোমরৈর্ভিন্দিপালৈশ্চশক্তি
ভির্মুষলৈস্তথা॥ ৪৭ ॥যুযুধুঃসংযুগেদেব্যাখড্গৈঃপ
রশুপট্টিশৈঃ॥কেচিচ্চচিক্ষিপুঃশক্তীঃকেচিৎপাশাং
স্তথাপরে॥ ৪৮ ॥দেবীংখড্গপ্রহারৈস্তুতেতাংহন্তুংপ্র
চক্রমুঃ॥সাপিদেবীততস্তানিশস্ত্রাণ্যস্ত্রাণিচণ্ডিকা॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

म्बराम्॥ क्षोभिताशेषपातालान्धनुर्ज्ज्यानिस्वनेन ताम्॥३८॥
दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद्व्याप्य संस्थिताम्। तत प्रववृ
ते युद्धन्तया देव्या सुरद्विषाम्॥३९॥ शस्त्रास्त्रैर्ब्बहुधा मु
क्तैरादीपितदिगन्तरम्। महिषासुरसेनानीश्चिक्षुरा
ख्यो महासुरः॥४०॥ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गब
लान्वितः। रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्योमहासुरः॥४१॥
अयुध्यतायुतानाञ्च सहस्रेण महाहनुः। पञ्चाशद्भिश्च नियु
तैरसिलोमा महासुरः॥४२॥ अयुतानां शतैः षड्भिर्ब्बा
ष्कलो युयुधे रणे। गजवाजिसहस्रौघैरनेकै प
रिवारितः॥४३॥ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मि
न्नयुध्यत। विडालाख्यो युतानाञ्च पञ्चाशद्भिरथायु
तैः॥४४॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानाम्परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्व्वृताः॥४५॥ युयु
धुस्संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः। कोटिकोटिस
हस्रैस्तु रथानान्दन्तिनान्तथा॥४६॥ हयानाञ्च वृतो
युद्धे तत्राभून्महिषासुरः । तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्ति
भिर्म्मुसलैस्तथा॥४७॥ युयुधुः संयुगे देव्याष्खड्गै प
रशुपट्टिशैः। केचिच्च चिक्षिपुश्शक्तीष्केचित्पाशाँ
स्तथापरे॥४८॥ देवीङ्खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुम्प्र
चक्रमुः। सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

৪৯ ॥ লীলয়ৈৱপ্ৰচিচ্ছেদনিজশস্ত্ৰাস্ত্ৰবৰ্ষিণী ॥ অনায়স্তা
ননাদেৱীস্তূয়মানাসুৰৰ্ষিভিঃ ॥ ৫০ ॥ মুমোচাসুৰদেহেষু
শস্ত্ৰাণ্যস্ত্ৰাণিচেশ্বৰী ॥ সোপিক্ৰুদ্ধোধুতসটোদেৱ্যাবাহ
নকেসৰী ॥ ৫১ ॥ চচাৰাসুৰসৈন্যেষুৱনেষ্বিৱহুতাশ
নঃ ॥ নিশ্বাসান্মুমুচেয়াংশ্চযুধ্যমানাৰণেম্বিকা ॥ ৫২ ॥
তএৱসদ্যঃসম্ভূতাগণাঃশতসহস্ৰশঃ ॥ যুযুধুস্তেপৰ
শুভির্ভিন্দিপালাসিপট্টিশৈঃ ॥ ৫৩ ॥ নাশয়ন্তোসুৰগ
ণান্দেৱীশক্ত্যুপবৃংহিতাঃ ॥ অৱাদয়ন্তপটহান্গণাঃ
শঙ্খাংস্তথাপৰে ॥ ৫৪ ॥ মৃদঙ্গাংশ্চতথৈৱান্যেত
স্মিন্যুদ্ধমহোৎসৱে ॥ ততোদেৱীত্ৰিশূলেনগদয়া
শক্তিবৃষ্টিভিঃ ॥ ৫৫ ॥ খড়্গাদিভিশ্চশতশোনিজঘা
নমহাসুৰান্ ॥ পাতয়ামাসচৈৱান্যান্ঘণ্টাস্বনবিমো
হিতান্ ॥ ৫৬ ॥ অসুৰান্ভুৱিপাশেনবদ্ধ্বাচান্যানকৰ্ষ
য়ত ॥ কেচিদ্দ্বিধাকৃতাস্তীক্ষ্ণৈঃখড়্গপাতৈস্তথাপৰে ॥
৫৭ ॥ বিপোথিতানিপাতেনগদয়াভুৱিশেৰতে ॥ বেমু
শ্চকেচিদ্ৰুধিৰংমুষলেনভৃশংহতাঃ ॥ ৫৮ ॥ কেচিন্নিপ
তিতাভূমৌভিন্নাঃশূলেনৱক্ষসি ॥ নিৰন্তৰাঃশৰৌ
ঘেণকৃতাঃকেচিদ্ৰণাজিৰে ॥ ৫৯ ॥ শ্যেনানুকাৰি
ণঃপ্ৰাণান্মুমুচুস্ত্ৰিদশাৰ্দনাঃ ॥ কেষাঞ্চিদ্বাহৱশ্ছি
ন্নাশ্ছিন্নগ্ৰীৱাস্তথাপৰে ॥ ৬০ ॥ শিৰাংসিপেতুৰন্যে

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

४९॥ लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी । अनायस्ता
नना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः॥५०॥ मुमोचासुरदेहेषु
शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी। सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाह
नकेसरी॥५१॥ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताश
नः। निःश्वासान्मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेम्बिका॥५२॥

त एव सद्यस्सम्भूतागणाश्शतसहस्रशः ॥ युयुधुस्ते पर
शुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः॥५३॥ नाशयन्तोसुरग
णान्देवीशक्त्युपबृंहिताः । अवादयन्त पटहान् गणा
श्शङ्खाँस्तथा परे॥५४॥ मृदङ्गाँश्च तथैवान्ये त
स्मिन्युद्धमहोत्सवे। ततो देवी त्रिशूलेन गदया

शक्तिवृष्टिभिः॥५५॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघा
न महासुरान्। पातयामास चैवान्यान्घण्टास्वनविमो
हितान्॥५६॥ असुरान्भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्ष
यत्। केचिद्द्विधा कृतास्तीक्ष्णैष्खड्गपातैस्तथापरे
॥५७॥ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते। वेमु

श्च केचिद्रुधिरम्मुसलेन भृशं हताः॥५८॥ केचिन्निप
तिता भूमौ भिन्नाशूलेन वक्षसि। निरन्तराश्शरौ
घेण कृता केचिद्रणाजिरे॥५९॥ श्येनानुकारि
ण प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्द्दनाः। केषाञ्चिद्बाहवश्छि
न्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे॥६०॥ शिरांसि पेतुरन्ये

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

সামন্যে মধ্যে বিদারিতাঃ ॥ বিচ্ছিন্নজঙ্ঘাস্ত্বপরে পেতু
রুর্ব্যাম্মহাসুরাঃ ॥ ৬১ ॥ একবাহ্বক্ষিচরণাঃ কেচিদ্দে
ব্যা দ্বিধাকৃতাঃ ॥ ছিন্নেপি চান্যে শিরসি পতিতাঃ পু
নরুত্থিতাঃ ॥ ৬২ ॥ কবন্ধা যুযুধুর্দ্দেব্যা গৃহীতপর
মায়ুধাঃ ॥ ননৃতুশ্চাপরে তত্র যুদ্ধে তূর্য্যলয়াশ্রিতাঃ
৬৩ ॥ কবন্ধাশ্ছিন্নশিরসঃ খড়্গশক্ত্যৃষ্টিপাণয়ঃ ॥ তিষ্ঠ
তিষ্ঠেতি ভাষন্তো দেবীমন্যে মহাসুরাঃ ॥ ৬৪ ॥ পাতিতৈ রথ
নাগাশ্বৈরসুরৈশ্চ বসুন্ধরা ॥ অগম্যা সাভবত্তত্র যত্রাভূৎস
মহারণঃ ॥ ৬৫ ॥ শোণিতৌঘা মহানদ্যঃ সদ্যস্তত্র প্রসু
স্রুবুঃ ॥ মধ্যে চাসুরসৈন্যস্য বারণাসুরবাজিনাং ॥ ৬৬ ॥
ক্ষণেন তন্মহাসৈন্যমসুরাণাং তথাম্বিকা ॥ নিন্যে ক্ষয়ং যথা ব
হ্নিস্তৃণদারুমহাচয়ং ॥ ৬৭ ॥ স চ সিংহো মহানাদমুৎসৃজ
ন্ধুতকেসরঃ ॥ শরীরেভ্যোমরারীণামসূনিব বিচিন্বতি ॥
৬৮ ॥ দেব্যা গণৈশ্চ তৈস্তত্র কৃতং যুদ্ধং মহাসুরৈঃ ॥ যথৈষাং
তুতুষুর্দ্দেবাঃ পুষ্পবৃষ্টিমুচো দিবি ॥ ৬৯ ॥ ইতি মার্ক
ণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যে মহিষাসু
রসৈন্যবধঃ ॥ ২ ॥ ❁ ॥ ঋষিরুবাচ ॥ ১ ॥ নিহন্যমানং
তৎসৈন্যমবলোক্য মহাসুরঃ ॥ সেনানীশ্চিক্ষুরঃ কোপা
দ্যযৌ যোদ্ধুমথাম্বিকাং ॥ ২ ॥ স দেবীং শরবর্ষেণ ববর্ষ
সমরেঽসুরঃ ॥ যথা মেরুগিরেঃ শৃঙ্গং তোয়বর্ষেণ তোয়দঃ

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

षामन्ये मध्ये विदारिताः। विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतु
रुर्व्याम्महासुराः॥६१॥ एकबाह्वक्षिचरणा केचिद्दे
व्या द्विधा कृताः। छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिता पु
नरुत्थिताः॥६२॥ कबन्धा युयुधुर्द्देव्यागृहीतपर
मायुधाः। ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्य्यलयाश्रिताः
६३॥ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः। तिष्ठ
तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः॥६४॥ पातितैरथ
नागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा। अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स
महारणः॥६५॥ शोणितौघा महानद्यस्सद्यस्तत्र विसु
स्रुवुः। मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्॥६६॥
क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणान्तथाम्बिका। निन्ये क्षयय्यँथा व
ह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥६७॥ स च सिंहो महानादमुत्सृज
न्धुतकेसरः। शरीरेभ्योमरारीणामसूनिव विचिन्वति
॥६८॥ देव्यागणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथासुरैः॥ यथैषां
न्तुष्टुवुर्द्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥६९॥ इति मार्क्क
ण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासु
रसैन्यवधः॥२॥ ऋषिरुवाच ॥१॥ निहन्यमान
न्तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः। सेनानीश्चिक्षुरः कोपा
द्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥२॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष
समरेऽसुरः॥ यथा मेरुगिरेश्शृंगन्तोयवर्षेण तोय

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

দঃ॥৩ ॥তস্য চ্ছিত্বা ততো দেৱী লীলয়ৈৱ শৰোৎকৰান্।
জঘান তুৰগান্বাণৈৰ্যন্তাৰঞ্চৈৱ ৱাজিনাম্॥৪॥ চিচ্ছে
দ চ ধনুঃ সদ্যো ধ্বজঞ্চাতিসমুচ্ছ্ৰিতম্। বিৱ্যাধ চৈৱ গা
ত্ৰেষু ছিন্নধন্বানমাশুগৈঃ॥৫॥ সচ্ছিন্নধন্বা বিৰথো
হতাশ্বো হতসাৰথিঃ। অভ্যধাৱত তাং দেৱীং খড়্গচৰ্মধ

ৰোঽসুৰঃ॥৬॥ সিংহমাহত্য খড়্গেন তীক্ষ্ণধাৰেণ মূৰ্দ্ধনি।
আজঘান ভুজে সব্যে দেৱীমপ্যতিৱেগৱান্॥৭॥ ত
স্যাঃ খড়্গো ভুজং প্ৰাপ্য পফাল নৃপনন্দন। ততো জ
গ্ৰাহ শূলং স কোপাদৰুণলোচনঃ॥৮॥ চিক্ষেপ চ
ততস্তত্তু ভদ্ৰকাল্যাং মহাসুৰঃ। জাজ্বল্যমানং তেজো

ভী ৰবিবিম্বমিৱাম্বৰাৎ॥৯॥ দৃষ্ট্বা তদাপতচ্ছূলং দে
ৱী শূলমমুঞ্চত। তচ্ছূলং শতধা তেন নীতং স চ মহা
সুৰঃ॥১০॥ হতে তস্মিন্মহাৱীৰ্য্যে মহিষস্য চমূপতৌ।
আজগাম গজাৰূঢ়শ্চামৰস্ত্ৰিদশাৰ্দ্দনঃ॥১১॥
সোঽপি শক্তিং মুমোচাথ দেৱ্যাস্তামম্বিকা দ্ৰুতম্।

হুঙ্কাৰাভিহতাং ভূমৌ পাতয়ামাস নিষ্প্ৰভাম্॥১২॥ ভগ্নাং শ
ক্তিং নিপতিতাং দৃষ্ট্বা ক্ৰোধসমন্বিতঃ। চিক্ষেপ চামৰঃ শূ
লং বাণৈস্তদপি সাচ্ছিনৎ॥১৩॥ ততঃ সিংহঃ সমুৎপত্য গ
জকুম্ভান্তৰে স্থিতঃ। বাহুযুদ্ধেন যুযুধে তেনোচ্চৈস্ত্ৰি
দশাৰিণা॥১৪॥ যুধ্যমানৌ ততস্তৌ তু তস্মান্নাগা

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

दः।।३।। तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान्बाणैर्य्यन्तारं चैव वाजिनाम् ।।४। चिच्छे
द च धनुस्सद्यो ध्वजञ्चातिसमुच्छ्रितम्। विव्याध चैव गा
त्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः।।५।। स च्छिन्नधन्वा विरथो
हताश्वो हतसारथिः । अभ्यधावत तान्देवीङ्खड्गचर्मध
रोसुरः।।६।। सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्द्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्।।७।। त
स्याष्खड्गो भुजम्प्राप्य पफाल नृपनन्दन। ततो ज
ग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः।।८।। चिक्षेप च
ततस्तत्तु भद्रकाल्याम्महासुरः। जाज्वल्यमानन्तेजो
भीरविबिम्बमिवाम्बरात्।।९।। दृष्ट्वा तदापतच्छूलं दे
वी शूलममुञ्चत। तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महा
सुरः।।१०।। हते तस्मिन्महावीर्य्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः।।११।।
सोपि शक्तिम्मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुङ्काराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ।।१२।। भग्नां श
क्तिन्निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः। चिक्षेप चामरः शू
लम्बाणैस्तदपि साच्छिनत्।।१३।। ततस्सिंहस्समुत्पत्य ग
जकुम्भान्तरस्थितः। बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रि
दशारिणा।।१४।। युध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागा

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

মহীং ক্ষিপ্তো৽॥ মমধাতেতি সংৰুদ্ধো প্ৰহাৰৈৰতি দাৰুণৈঃ
১৫॥ ততো ৰণে খস্যাপি নিপতন্ত মৃগাৰিণা৽॥ কৰপ্ৰ
হাৰেণ শিৰস্তাম ৰস্য পৃথক্ কৃতম্৽॥১৬ ॥উদগ্ৰশ্চ ৰণে
দেব্যা শিলাবৃক্ষাদিভিৰ্হতঃ॥ দন্তমুষ্টিতলৈশ্চৈৱ ক
ৰালশ্চ নিপাতিতঃ॥১৭ ॥দেবী ক্ৰুদ্ধা গদাপাতৈশ্চূ
ৰ্ণয়ামাস চোদ্ধতম্৽॥ বাষ্কলং ভিন্দিপালেন বাণৈস্তাম্ৰন্ত
থান্ধকম্৽॥১৮ ॥উগ্ৰাস্যমুগ্ৰবীৰ্যঞ্চ তথৈৱ চ মহাহনু
ম্৽॥ ত্ৰিনেত্ৰা চ ত্ৰিশূলেন জঘান পৰমেশ্বৰী৽॥১৯॥
বিড়ালস্যাসিনা কায়াৎ পাতয়ামাস বৈ শিৰঃ॥ দুৰ্ধৰ
দুৰ্মুখঞ্চোভৌ শৰৈৰ্নিন্যে যমক্ষয়ম্৽॥২০ ॥এবং সংক্ষী
য়মাণে তু স্বসৈন্যে মহিষাসুৰঃ॥ মাহিষেণ স্বৰূপেণ ত্ৰা
সয়ামাস তান্ গণান্॥২১ ॥কাংশ্চিৎ তুণ্ডপ্ৰহাৰেণ খুৰক্ষে
পৈস্তথাপৰান্৽॥ লাঙ্গূলতাড়িতাংশ্চান্যান্ শৃঙ্গাভ্যাঞ্চ
বিদাৰিতান্৽॥২২ ॥বেগেন কাংশ্চিদপৰান্নাদেন ভ্ৰ
মণেন চ৽॥ নিঃশ্বাসপৱনেনান্যান্ পাতয়ামাস ভূত
লে৽॥২৩ ॥নিপাত্য প্ৰমথানীকমভ্যধাৱত সোঽসুৰঃ॥
সিংহং হন্তুং মহাদেব্যাঃ কোপঞ্চক্ৰে ততোঽম্বিকা৽॥২৪॥
সোঽপি কোপান্মহাবীৰ্য্যঃ খুৰক্ষুণ্ণমহীতলঃ॥ শৃঙ্গা
ভ্যাং পৰ্বতানুচ্চাংশ্চিক্ষেপ চ ননাদ চ৽॥২৫॥ বেগভ্ৰ
মণবিক্ষুণ্ণা মহী তস্য ব্যশীৰ্য্যত৽॥ লাঙ্গূলেনাহত

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

न्महीङ्गतौ। युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः
।।१५।। ततो वेगात्खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा। करप्र
हारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्।।१६।। उदग्रश्च रणे
देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः। दन्तमुष्टितलैश्चैव क
रालश्च निपातितः।।१७।। देवी क्रुद्धा गदापातैश्चू
र्णयामास चोद्धतम्। बाष्कलम्भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रन्त-
थान्धकम्।।१८। उग्रास्यमुग्रवीर्य्यञ्च तथैव च महाहनु
म्। त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी।।१९।।
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः। दुर्धरं
न्दुर्म्मुखञ्चोभौ शरैर्न्निन्ये यमक्षयम् ।।२०।। एवं संक्षी
यमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः। माहिषेण स्वरूपेण त्रा-
सयामास तान् गणान्।।२१।। काँश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षे
पैस्तथापरान्। लाङ्गूलताडिताँश्चान्याञ्छृङ्गाभ्याञ्च
विदारितान्।।२२।। वेगेन काँश्चिदपरान्नादेन भ्र
मणेन च। निश्श्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूत
ले ।।२३।। निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोसुरः।
सिंहं हन्तुं महादेव्या कोपं चक्रे ततोऽम्बिका।।२४।।
सोऽपि कोपान्महावीर्य्यः खुरक्षुण्णमहीतलः। शृङ्गा
भ्याम्पर्वतानुच्चाँश्चिक्षेप च ननाद च।।२५।। वेगभ्र
मणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्य्यत। लाङ्गूलेनाहत

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ব্ধিঃপ্লাৱয়ামাসসৰ্ব্বতঃ॥২৬॥ধুতশৃঙ্গবিভিন্নাশ্চখ
ণ্ডংখণ্ডংযযুৰ্ঘনাঃ॥শ্বাসানিলাস্তাঃশতশোনিপেতুৰ্নভ
সোঽচলাঃ॥২৭॥ইতিক্ৰোধসমাধ্মাতমাপতন্তংমহাসু
ৰং॥দৃষ্ট্বাসাচণ্ডিকাকোপংতদ্বধায়তদাকৰোৎ॥২৮॥
সাক্ষিপ্ত্বাতস্যবৈপাশংতংববন্ধমহাসুৰং॥তত্যাজমাহি
ষংৰূপংসোঽপিবদ্ধোমহামৃধে॥২৯॥ততঃসিংহোঽভবৎসদ্যো
যাবত্তস্যাম্বিকাশিৰঃ॥ছিনত্তিতাৱৎপুৰুষঃখড়্গপা
ণিৰদৃশ্যত॥৩০॥ততএৱাশুপুৰুষংদেৱীচিচ্ছেদসা
য়কৈঃ॥তংখড়্গচৰ্ম্মণাসাৰ্দ্ধংততঃসোঽভূন্মহাগজঃ॥৩১॥
কৰেণচমহাসিংহংতংচকৰ্ষজগৰ্জ্জচ॥কৰ্ষতস্তুকৰংদে
ৱীখড়্গেননিৰকৃন্তত॥৩২॥ততোমহাসুৰোভূয়োমা
হিষংবপুৰাস্থিতঃ॥তথৈৱক্ষোভয়ামাসত্ৰৈলোক্যংসচ
ৰাচৰং॥৩৩॥ততঃক্ৰুদ্ধাজগন্মাতাচণ্ডিকাপানমুত্ত
মং॥পপৌপুনঃপুনশ্চৈৱজহাসাৰুণলোচনা॥৩৪॥
ননৰ্দ্দচাসুৰঃসোঽপিবলৱীৰ্য্যমদোদ্ধতঃ॥বিষাণাভ্যাঞ্চ
চিক্ষেপচণ্ডিকাংপ্ৰতিভূধৰান্॥সাচতান্প্ৰহিতাংস্তেনচূ
ৰ্ণয়ন্তীশৰোৎকৰৈঃ॥উৱাচতংমদোদ্ধূতমুখৰাগাকু
লাক্ষৰং॥৩৫॥দেৱ্যুৱাচ॥৩৬॥গৰ্জ্জগৰ্জ্জক্ষণংমূ
ঢ়মধুযাৱৎপিবাম্যহং॥ময়াত্বয়িহতেঽত্ৰৈৱগৰ্জ্জি
ষ্যন্ত্যাশুদেৱতাঃ॥৩৭॥ঋষিৰুৱাচ॥৩৮॥এৱমুক্ত্বা

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

श्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः॥२६॥ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च ख
ण्डखण्डं ययुर्घनाः। श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्न
भसोऽचलाः ॥२७॥ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुर
म्। दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपन्तद्वधाय तदाऽकरोत्॥२८॥
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तम्बबन्ध महासुरम्। तत्याज माहि
षं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे॥२९॥ ततः सिंहोऽभवत्स
द्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः। छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपा
णिरदृश्यत॥३०॥ तत एवाशु पुरुषन्देवी चिच्छेद सा
यकैः। तङ्खड्गचर्मणा सार्द्धन्ततस्सोभून्महागजः॥३१॥
करेण च महासिंहन्तञ्चकर्ष जगर्ज्ज च। कर्षतस्तु करन्दे
वी खड्गेन निरकृन्तत॥३२॥ ततो महासुरो भूयो माहि
षं वपुरास्थितः । तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सच
राचरम्॥३३॥ ततष्क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्त
मम्। पपौ पुन पुनश्चैव जहासारुणलोचना॥३४॥
ननर्द्द चासुरस्सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः। विषाणाभ्याञ्च
चिक्षेप चण्डिकाम्प्रति भूधरान्॥३५॥ सा च तान् प्रहिताँस्तेन चू
र्णयन्ती शरोत्करैः। उवाच तम्मदोद्धूतमुखरागाकु
लाक्षरम्॥३६॥ देव्युवाच ॥३७॥ गर्ज गर्ज क्षणं मू
ढ मधु यावत्पिबाम्यहम्। मया त्वयि हतेत्रैव गर्ज्जि
ष्यन्त्याशु देवताः॥३८॥ ऋषिरुवाच॥३९॥ एवमुक्ता

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

সমুৎপত্যসারূঢ়াতম্মহাসুরম্॥পাদেনাক্রম্যকণ্ঠেচশূ
লেনৈনমতাড়য়ৎ॥৪০॥ততঃসোঽপিপদাক্রান্তস্তয়া
নিজমুখাত্ততঃ॥অর্দ্ধনিষ্ক্রান্তএবাতিদেব্যাবীর্য্যে
ণসম্বৃতঃ॥৪১॥অর্দ্ধনিষ্ক্রান্তএবাসৌযুধ্যমানোম
হাসুরঃ॥তয়ামহাসিনাদেব্যাশিরশ্ছিত্ত্বানিপাতিতঃ

৪২॥ততোহাহাকৃতংসর্ব্বংদৈত্যসৈন্যংননাশতৎ॥প্রহ
র্ষঞ্চপরংজগ্মুঃসকলাদেবতাগণাঃ॥৪৩॥তুষ্টুবু
স্তাংসুরাদেবীংসহদিব্যৈর্ম্মহর্ষিভিঃ॥জগুর্গন্ধর্ব্বপ
তয়োননৃতুশ্চাপ্সরোগণাঃ॥৪৪॥ইতিমার্কণ্ডে
য়পুরাণেসাবর্ণিকেমন্বন্তরেদেবীমাহাত্ম্যেমহি

ষাসুরবধঃ॥৩॥ ❀ ॥ঋষিরুবাচ॥শক্রাদয়ঃসু
রগণানিহতেঽতিবীর্য্যেতস্মিন্দুরাত্মনিসুরারিবলে
চদেব্যাঃ॥তাংতুষ্টুবুঃপ্রণতিনম্রশিরোধরাংসা
বাগ্ভিঃপ্রহর্ষপুলকোদ্গমচারুদেহাঃ॥১॥দেবাঊ
চুঃ॥দেব্যাযয়াততমিদংজগদাত্মশক্ত্যানিঃশে

ষদেবগণশক্তিসমূহমূর্ত্ত্যা॥তামম্বিকামখিলদেবমহ
র্ষিপূজ্যাংভক্ত্যানতাঃস্মবিদধাতুশুভানিসানঃ॥২॥যস্যাঃ
প্রভাবমতুলংভগবাননন্তোব্রহ্মাহরশ্চনহিবক্তুমলং
বলঞ্চ॥সাচণ্ডিকাখিলজগৎপরিপালনায়নাশায়
চাশুভভয়স্যমতিংকরোতু॥৩॥যাশ্রীঃস্বয়ংসুকৃতি

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

समुत्पत्य सारूढ़ा तं महासुरम्। पादेनाक्रम्य कण्ठे च शू
लेनैनमताड़यत्।।४०।। ततस्सोपि पदाक्रान्तस्तया
निजमुखात्ततः। अर्धनिष्क्रान्त एवातिदेव्यावीर्य्यें
ण सम्वृतः।।४१।। अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो म
हासुरः। तया महासिना देव्या शिरश्छित्वा निपातितः
।।४२।। ततो हाहाकृतं सर्व्वं दैत्यसैन्यन्ननाश तत्। प्रह
षञ्च परञ्जग्मुस्सकला देवतागणाः।।४३।। तुष्टुवु
स्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्म्महर्षिभिः। जगुर्गन्धर्व्वप
तयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः।।४४।। इति मार्क्कण्डे
यपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महि
षासुरवधः।।३।।।। ।। ऋषिरुवाच ।। शक्रादयस्सु
रगणा निहतेऽतिवीर्य्यें तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले
च देव्याः। तान्तुष्टुवु प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वा
ग्भि प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ।।१।। देवा ऊ
चुः।। देव्या यया ततमिदञ्जगदात्मशक्त्या निश्शे
षदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या तामम्बिकामखिलदेवमह
र्षिपूज्याम्भक्त्या नतास्म विदधातु शुभानि सा नः।।२।। यस्या
प्रभावमखिलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलम्ब
लञ्च।। सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय
चाशुभभयस्य मतिङ्करोतु।३। या श्रीः स्वयं सुकृति

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

নাং ভবনেষ্বলক্ষ্মীঃ পাপাত্মনাং কৃতধিয়াং হৃদয়েষু বুদ্ধি
ঃ॥ শ্রদ্ধা সতাং কুলজনপ্রভবস্য লজ্জা তাং ত্বাং নতাঃ স্ম
পরিপালয় দেবি বিশ্বম্॥ ৪ ॥ কিং বর্ণয়াম তব রূ
পমচিন্ত্যমেতৎ কিঞ্চাতিবীর্যমসুরক্ষয়কারি ভূ
রি। কিঞ্চাহবেষু চরিতানি তবাতি যানি সর্ব্বে
ষু দেব্যসুরদেবগণাদিকেষু॥ ৫ ॥ হেতুঃ সমস্তজগতাং
ত্রিগুণাপি দোষৈর্ন জ্ঞায়সে হরিহরাদিভিরপ্যপারা। স
র্ব্বাশ্রয়াখিলমিদং জগদংশভূতমব্যাকৃতা হি পরমা প্রকৃতি
স্ত্বমাদ্যা॥ ৬ ॥ যস্যাঃ সমস্তসুরতা সমুদীরণেন তৃপ্তিং
প্রয়াতি সকলেষু মখেষু দেবি। স্বাহাসি বৈ পিতৃগণ
স্য চ তৃপ্তিহেতুরুচ্চার্য্যসে ত্বমত এব জনৈঃ স্বধা চ॥ ৭ ॥
যা মুক্তিহেতুরবিচিন্ত্যমহাব্রতা ত্বমভ্যস্যসে সুনিয়তে
ন্দ্রিয়তত্ত্বসারৈঃ। মোক্ষার্থিভির্মুনিভিরস্তসমস্ত
দোষৈর্বিদ্যাসি সা ভগবতী পরমা হি দেবি॥ ৮ ॥ শব্দা
ত্মিকা সুবিমলর্গ্যজুষাং নিধানমুদ্গীথরম্যপদপা
ঠবতাঞ্চ সাম্নাম্। দেবী ত্রয়ী ভগবতী ভবভাবনায় বা
র্ত্তা চ সর্ব্বজগতাং পরমার্তিহন্ত্রী॥ ৯ ॥ মেধাসি দেবি
বিদিতাখিলশাস্ত্রসারা দুর্গাসি দুর্গভবসাগরনৌ
রসঙ্গা। শ্রীঃ কৈটভারিহৃদয়ৈককৃতাধিবাসা গৌ
রী ত্বমেব শশিমৌলিকৃতপ্রতিষ্ঠা॥ ১০ ॥ ঈষৎসহাস

नां भवनेष्वलक्ष्मी पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि
:। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तान्त्वान्नतास्स्म
परिपालय देवि विश्वम्।४।। किं वर्णयाम तब रू
पमचिन्त्यमेतत्किञ्चातिवीर्य्यमसुरक्षयकारि भू
रि।। किञ्चाहवेषु चरितानि तवातियानि सर्व्वे
षु देव्यसुरदेवगणादिकेषु।।५।। हेतुस्समस्तजगता
न्त्रिगुणापि दोषैर्न्न ज्ञायते हरिहरादिभिरप्यपारा।। स
र्वाश्रयाखिलमिदञ्जगदंशभूतमव्याहृता हि परमा प्रकृति
स्त्वमाद्या।।६।। यस्यास्समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं
प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि।। स्वाहासि वै पितृगण
स्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्य्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ।।७।।
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता च अभ्यस्यसे सुनियते
न्द्रियतत्वसारैः। मोक्षार्थिभिर्म्मुनिभिरस्तसमस्त
दोषैर्व्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि।८। शब्दा
त्मिका सुविमलर्ग्यजुषान्निधानमुद्गीथरम्यपदपा
ठवताञ्च साम्नाम्। देवी त्रयी भगवती भवभावनाय वा
र्त्ता च सर्व्वजगताम्परमार्त्तिहन्त्री।।९।। मेधासि देवि वि
दिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्गभवसांगरनौ
रसङ्गा ।। श्री कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौ
रीत्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।१०।। ईषत्सहा

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

সমমলম্পূর্ণেন্দুবিম্বানুকারি কনকোত্তমকান্তিকা
ন্তম্ ॥ অত্যদ্ভুতম্প্রহৃতমাপ্তরুষা তথাপি বক্ত্রং বিলোক্য
সহসা মহিষাসুরেণ ॥ ১১ ॥ দৃষ্ট্বা তু দেবি কুপিতম্ভ্রূ
কুটীকরালমুদ্যচ্ছশাঙ্কসদৃশচ্ছবি যন্ন সদ্যঃ ॥ প্রা
ণান্মুমোচ মহিষস্তদতীব চিত্রং কৈর্জীব্যতে হি কুপি

তান্তকদর্শনেন ॥ ১২ ॥ দেবি প্রসীদ পরমা ভবতী ভবা
য় সদ্যো বিনাশয়সি কোপবতী কুলানি ॥ বিজ্ঞাতমেত
দধুনৈব যদস্তমেতন্নীতম্বলং সুবিপুলম্মহিষাসুরস্য ॥
১৩ ॥ তে সম্মতা জনপদেষু ধনানি তেষাং তেষাং যশাংসি
ন চ সীদতি ধর্ম্মবর্গঃ ॥ ধন্যাস্ত এব নিভৃতাত্মজভৃত্য

দারা যেষাং সদাভ্যুদয়দা ভবতী প্রসন্না ॥ ১৪ ॥ ধর্ম্ম্যাণি দেবি
সকলানি সদৈব কর্ম্মাণ্যত্যাদৃতঃ প্রতিদিনং সুকৃতী করো
তি ॥ স্বর্গম্প্রয়াতি চ ততো ভবতীপ্রসাদাল্লোকত্রয়েঽপি
ফলদা ননু দেবি তেন ॥ ১৫ ॥ দুর্গে স্মৃতা হরসি ভীতিম
শেষজন্তোঃ স্বস্থৈঃ স্মৃতা মতিমতীব শুভান্দদাসি ॥ দারি

দ্র্যদুঃখভয়হারিণি কা ত্বদন্যা সর্ব্বোপকারকরণায় সদার্দ্র
চিত্তা ॥ ১৬ ॥ এভির্হতৈর্জগদুপৈতি সুখং তথৈতে কুর্ব্ব
ন্তু নাম নরকায় চিরায় পাপম্ ॥ সংগ্রামমৃত্যুমধিগম্য
দিবম্প্রয়ান্তু মত্বেতি নূনমহিতান্বিনিহংসি দেবি ॥ ১৭ ॥
দৃষ্ট্বৈব কিন্ন ভবতী প্রকরোতি ভস্ম সর্ব্বাসুরানরিষু

सममलम्परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारिकनकोत्तमकान्तिका
न्तम्। अत्यद्भुतम्प्रहृतमाप्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य
सहसा महिषासुरेण ॥११॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रु
कुटीकरालमुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः॥ प्रा
णान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रङ्कैर्ज्जीव्यते हि कुपि
तान्तकदर्शनेन ॥१२॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवा
य सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि॥ विज्ञातमेत
दधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य
॥१३॥ ते सम्मताजनपदेषु धनानि तेषान्तेषां यशांसि
न च सीदति धर्म्मवर्गः॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्य
दारा येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥१४॥ धर्म्याणि देवि
सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृत प्रतिदिनं सुकृती करो
ति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेपि
फलदा ननु देवि तेन ॥१५॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम
शेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभान्ददासि ॥ दारि
द्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र
चित्ता ॥१६॥ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखन्तथैते कुर्व्व
न्तु नाम नरकाय चिराय पापम्॥ सङ्ग्राममृत्युमधिग
म्य दिवम्प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवि॥१७॥
दृष्ट्वैव किन्न भवती प्रकरोति भस्म सर्व्वासुरानरिषु

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

যৎ প্ৰহিণোষি শস্ত্ৰম্॥ লোকান্প্ৰয়ান্তু ৰিপবোঽপি হি শস্ত্ৰপূ
তা ইত্থং মতিৰ্ভৱতি তেষ্বপি তেঽতিসাধ্বী॥১৮॥ খড়্গপ্ৰভা
নিকৰবিস্ফুৰণৈস্তথোগ্ৰৈঃ শূলাগ্ৰকান্তিনিবহেন দৃশোঽসু
ৰাণাম্॥ যন্নাগতা বিলয়মংশুমদিন্দুখণ্ডযোগ্যান
নং তব বিলোকয়তাং তদেতৎ॥১৯॥ দুৰ্বৃত্তবৃত্তশমনং

তব দেবি শীলং ৰূপং তথৈতদবিচিন্ত্যমতুল্যমন্যৈঃ॥ বীৰ্য্যং
চ হন্তৃ হৃতদেবপৰাক্ৰমাণাং বৈৰিষ্বপি প্ৰকটিতৈব দয়া
ত্বয়েত্থম্॥২০॥ কেনোপমা ভৱতু তেঽস্য পৰাক্ৰমস্য
ৰূপং চ শত্ৰুভয়কাৰ্য্যতিহাৰি কুত্ৰ॥ চিত্তে কৃপা সমৰ
নিষ্ঠুৰতা চ দৃষ্টা ত্বয্যেব দেবি বৰদে ভুবনত্ৰয়েঽপি॥২১॥

ত্ৰৈলোক্যমেতদখিলং ৰিপুনাশনেন ত্ৰাতং ত্বয়া সমৰমূৰ্দ্ধ
নি তেঽপি হত্বা॥ নীতা দিবং ৰিপুগণা ভয়মপ্যপাস্তমস্মা
কমুন্মদসুৰাৰিভৱং নমস্তে॥২২॥ শূলেন পাহি নো
দেবি পাহি খড়্গেন চাম্বিকে॥ ঘণ্টাস্বনেন নঃ পাহি
চাপজ্যানিঃস্বনেন চ॥২৩॥ প্ৰাচ্যাং ৰক্ষ প্ৰতীচ্যাং চ

চণ্ডিকে ৰক্ষ দক্ষিণে॥ ভ্ৰামণেনাত্মশূলস্য উত্তৰস্যাং
তথেশ্বৰি॥২৪॥ সৌম্যানি যানি ৰূপাণি ত্ৰৈলোক্যে বিচ
ৰন্তি তে॥ যানি চাত্যৰ্থঘোৰাণি তৈ ৰক্ষাস্মাংস্তথা
ভুবম্॥২৫॥ খড়্গশূলগদাদীনি যানি চাস্ত্ৰাণি তেঽম্বি
কে॥ কৰপল্লৱসঙ্গীনি তৈৰস্মান্ৰক্ষ সৰ্ব্বতঃ॥২৬॥ ঋ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवोपि हि शस्त्रपू
ता इत्थम्मतिर्भवति तेष्वहितेषु साध्वी ॥१८॥ खड्गप्रभा
निकरविस्फुरणैस्तथोग्रैश्शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशो
ऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्यान
नन्तव विलोकयतान्तदेतत् ॥१९॥ दुर्व्वृत्तवृत्तशमन
न्तव देवि शीलं रूपन्तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः॥ वीर्य्यं
ञ्च हन्तृहतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया
त्वयेत्थम्॥२०॥ केनोपमा भवतु तेस्य पराक्रमस्य
रूपञ्च शत्रुभयकार्य्यतिहारि कुत्र॥ चित्ते कृपा समर
निष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेपि ॥२१॥
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातन्त्वया समरमूर्द्ध
नि तेपि हत्वा॥ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्मा
कमुन्मदसुरारिभवन्नमस्ते॥२२॥ शूलेन पाहि नो
देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन न पाहि
चापज्यानिःस्वनेन च॥२३॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च
चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्या
न्तथेश्वरि ॥२४॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये
विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्माँस्तथा
भुवम् ॥२५॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेम्बि
के । करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान्रक्ष सर्व्वतः॥२६॥ ऋ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

যৎপ্রহিণোষি শস্ত্রম্।। লোকান্প্রয়ান্তু ৰিপবোপি হি শস্ত্রপূ-
তা ইত্থম্মতির্ভবতি তেষ্বপি তেতিসাধ্বী।। ১৮ ।। খড্গপ্রভা-
নিকৰ বিস্ফুৰণৈস্তথোগ্রৈঃ শূলাগ্রকান্তিনিবহেন দৃশোসু-
ৰাণাম্।। যন্নাগতা বিলয়মংশুমদিন্দুখণ্ডযোগ্যান-
নন্তৱ বিলোকয়তান্তদেতৎ।। ১৯ ।। দুর্ব্বৃত্তবৃত্তশমনং

তৱ দেবি শীলং ৰূপন্তথৈতদবিচিন্ত্যমতুল্যমন্যৈঃ।। বীর্য্য-
ঞ্চ হন্তৃ হৃতদেবপৰাক্রমাণাং বৈৰিষ্বপি প্রকটিতৈৱ দয়া
ত্বয়েত্থম্।। ২০ ।। কেনোপমা ভৱতু তেস্য পৰাক্রমস্য
ৰূপঞ্চ শত্রুভয়কার্য্যতিহাৰি কুত্র।। চিত্তে কৃপা সমৰ
নিষ্ঠুৰতা চ দৃষ্টা ত্বয্যেৱ দেবি ৱৰদে ভুৱনত্রয়েপি।। ২১ ।।

ত্রৈলোক্যমেতদখিলং ৰিপুনাশনেন ত্রাতন্ত্বয়া সমৰমূর্দ্ধ-
নি তেপি হত্বা।। নীতা দিৱং ৰিপুগণা ভয়মপ্যপাস্তমস্মা-
কমুন্মদসুৰাৰিভৱন্নমস্তে।। ২২ ।। শূলেন পাহি নো
দেবি পাহি খড়্গেন চাম্বিকে।। ঘণ্টাস্বনেন নঃ পাহি
চাপজ্যানিস্বনেন চ।। ২৩ ।। প্রাচ্যাং ৰক্ষ প্রতীচ্যাঞ্চ

চণ্ডিকে ৰক্ষ দক্ষিণে।। ভ্রামণেনাত্মশূলস্য উত্তৰস্যা-
ন্তথেশ্বৰি।। ২৪ ।। সৌম্যানি যানি ৰূপাণি ত্রৈলোক্যে বি-
চৰন্তি তে।। যানি চাত্যর্থঘোৰাণি তৈ ৰক্ষাস্মাংস্তথা
ভুৱম্।। ২৫ ।। খড্গশূলগদাদীনি যানি চাস্ত্রাণি তেম্বি-
কে।। কৰপল্লৱসঙ্গীনি তৈৰস্মান্ৰক্ষ সর্ব্বতঃ।। ২৬ ।। ঋ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवोपि हि शस्त्रपू
ता इत्थम्मतिर्भवति तेष्वहितेषु साध्वी ॥१८॥ खड्गप्रभा
निकरविस्फुरणैस्तथोग्रैश्शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशो
ऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्यान
नन्तव विलोकयतान्तदेतत् ॥१९॥ दुर्व्वृत्तवृत्तशमन
न्तव देवि शीलं रूपन्तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः॥ वीर्य्य
ञ्च हन्तृहतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया
त्वयेत्थम्॥२०॥ केनोपमा भवतु तेस्य पराक्रमस्य
रूपञ्च शत्रुभयकार्य्यतिहारि कुत्र॥ चित्ते कृपा समर
निष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेपि ॥२१॥
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातन्त्वया समरमूर्द्ध
नि तेपि हत्वा॥ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्मा
कमुन्मदसुरारिभवन्नमस्ते॥२२॥ शूलेन पाहि नो
देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन न पाहि
चापज्यानिःस्वनेन च॥२३॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च
चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्या
न्तथेश्वरि ॥२४॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये
विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्माँस्तथा
भुवम् ॥२५॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्रणि तेम्बि
के । करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान्रक्ष सर्व्वतः॥२६॥ ऋ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ষিৰুৱাচ ॥ ২৭ ॥ এৱং স্তুতা সুৰৈৰ্দ্দিব্যৈঃ কুসুমৈৰ্নন্দ
নোদ্ভৱৈঃ ॥ অৰ্চ্চিতা জগতাং ধাত্ৰী তথা গন্ধানুলেপনৈঃ
২৮ ॥ ভক্ত্যা সমস্তৈস্ত্ৰিদশৈৰ্দ্দিব্যৈৰ্ধূপৈস্তু ধূপিতা ॥
প্ৰাহ প্ৰসাদসুমুখী সমস্তান্ প্ৰণতান্ সুৰান্ ॥ ২৯ ॥
দেব্যুৱাচ ॥ ৩০ ॥ ব্ৰিয়তাং ত্ৰিদশাঃ সৰ্ব্বে যদস্মত্তো ঽ
ভিৱাঞ্ছিতম্ ॥ ৩১ ॥ দদাম্যহমতিপ্ৰীত্যা স্তৱৈৰেভিঃ সুপূ
জিতা ॥ দেৱা ঊচুঃ ॥ ৩২ ॥ ভগৱত্যা কৃতং সৰ্ব্বং ন কিঞ্চিদৱশি
ষ্যতে ॥ ৩৩ ॥ যদয়ং নিহতঃ শত্ৰুৰস্মাকং মহিষাসুৰঃ ।
যদি চাপি ৱৰো দেয়স্ত্বয়াস্মাকং মহেশ্বৰি ॥ ৩৪ ॥ সংস্মৃতা
সংস্মৃতা ত্বং নো হিংসেথাঃ পৰমাপদঃ । যশ্চ মৰ্ত্ত্যঃ স্তৱৈৰেভি
স্ত্বাং স্তোষ্যত্যমলাননে ॥ ৩৫ ॥ তস্য ৱিত্তৰ্দ্ধিৱিভৱৈৰ্ধনদা
ৰাদিসম্পদাম্ ॥ বৃদ্ধয়ে ঽস্মৎপ্ৰসন্না ত্বং ভৱেথাঃ সৰ্ব্বদাম্বি
কে ॥ ৩৬ ॥ ঋষিৰুৱাচ ॥ ৩৭ ॥ ইতি প্ৰসাদিতা দেৱৈৰ্জ্জ
গতো ঽৰ্থে তথাত্মনঃ ॥ তথেত্যুক্ত্বা ভদ্ৰকালী বভূৱান্তৰ্হিতা
নৃপ ॥ ৩৮ ॥ ইত্যেতৎ কথিতং ভূপ সম্ভূতা সা যথা পুৰা ।
দেৱী দেৱশৰীৰেভ্যো জগত্ত্ৰয়হিতৈষিণী ॥ ৩৯ ॥ পুন
শ্চ গৌৰীদেহাৎসা সমুদ্ভূতা যথাভৱৎ ॥ ৱধায় দুষ্ট
দৈত্যানাং তথা শুম্ভনিশুম্ভয়োঃ ॥ ৪০ ॥ ৰক্ষণায় চ
লোকানাং দেৱানামুপকাৰিণী ॥ তচ্ছৃণুষ্ব ময়াখ্যা
তং যথাৱৎ কথয়ামি তে ॥ ৪১ ॥ ইতি মাৰ্কণ্ডেয়পু

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

षिरुवाच ।।२७।। एवं स्तुता सुरैर्द्दिव्यैष्कुसुमैर्न्नन्द
नोद्भवैः । अर्च्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः
।।२८।। भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्द्दिव्यैर्द्धूपैस्तुधूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रणतान्सुरान्।।२९।।
देव्युवाच ।।३०।। व्रियतान्त्रिदशास्सर्व्वे यदस्मत्तोऽ
भिवाञ्छितम् । ददाम्यहमतिप्रीत्या स्तवैरेभिस्सुपू
जिता ॥ देवाऊचुः ॥३२॥ भगवत्या कृतं सर्व्वन्न किञ्चिदवशि
ष्यते ।।३३।। यदयन्निहतश्शत्रुरस्माकं महिषासुरः
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि।।३४।। संस्मृता
संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ यश्च मर्त्यः स्तवैरेभि
स्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ।।३५।। तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदा
रादिसम्पदाम् ॥ वृद्धयेस्मत्प्रसन्ना त्वम्भवेथास्सर्वदाम्बि
के ।।३६।। ऋषिरुवाच ।।३७।। इति प्रसादिता देवैर्ज्ज
गतोर्थे तथात्मनः । तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता
नृप ।।३८।। इत्येतत्कथितम्भूप सम्भूता सा यथा पुरा
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी।।३९।। पुन
श्च गौरीदेहा सा समुद्भूता यथाभवत्। वधाय दुष्ट
दैत्यानान्तथा शुम्भनिशुम्भयोः ।।४०।। रक्षणाय च
लोकानान्देवानामुपकारिणी । तच्छृणुष्व मयाख्या
तं यथावत्कथयामि ते ।।४१।। इति मार्क्कण्डेयपु

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ৰাণেসাৱৰ্ণিকমন্বন্তৰেদেৱীমাহাত্ম্যেমহিষাসুৰ
ৱধপ্ৰাপ্তাদিস্তুতিঃ॥ ৪ ॥ঙ॥ঋষিৰুৱাচ॥ ১ ॥
পুৰাশুম্ভনিশুম্ভাভ্যামসুৰাভ্যাংশচীপতেঃ॥ত্ৰৈলোক্য
যজ্ঞভাগাশ্চহৃতামদবলাশ্ৰয়াত্॥ ২ ॥তাৱেৱসূৰ্য্য
তাংতদ্বদধিকাৰন্তথৈন্দৱম্॥কৌবেৰমথযাম্যঞ্চ
চক্ৰাতেৱৰুণস্যচ॥ ৩ ॥তাৱেৱপৱনৰ্দ্ধিঞ্চচক্ৰতুৰ্ব্বহ্নি
কৰ্ম্মচ॥ততোদেৱাবিনিৰ্দ্ধূতাভ্ৰষ্টৰাজ্যাঃপৰা
জিতাঃ॥ ৪ ॥হৃতাধিকাৰাস্ত্ৰিদশাস্তাভ্যাংসৰ্ব্বেনি
ৰাকৃতাঃ॥মহাসুৰাভ্যাংতাংদেৱীংসংস্মৰন্ত্যপৰাজি
তাম্॥ ৫ ॥তয়াস্মাকংৱৰোদত্তোযথাপৎসুস্মৃতা
খিলাঃ॥ভৱতাংনাশয়িষ্যামিতৎক্ষণাৎপৰমাপদঃ॥
৬ ॥ইতিকৃত্বামতিংদেৱাহিমৱন্তংনগেশ্বৰম্॥জগ্মু
স্তত্ৰততোদেৱীংৱিষ্ণুমায়াংপ্ৰতুষ্টুৱুঃ॥ ৭ ॥দেৱাঊ
চুঃ॥ + ॥নমোদেৱ্যৈমহাদেৱ্যৈশিৱায়ৈসততংনমঃ
নমঃপ্ৰকৃত্যৈভদ্ৰায়ৈনিয়তাঃপ্ৰণতাস্মতাম্॥ ৮ ॥
ৰৌদ্ৰায়ৈনমোনিত্যায়ৈগৌৰ্য্যৈধাত্ৰ্যৈনমোনমঃ॥জ্যো
ৎস্নায়ৈচেন্দুৰূপিণ্যৈসুখায়ৈসততংনমঃ॥ ১০ ॥ক
ল্যাণ্যৈপ্ৰণতাবৃদ্ধ্যৈসিদ্ধ্যৈকুৰ্ম্মোনমোনমঃ॥
নৈৰ্ঋত্যৈভূভৃতাংলক্ষ্ম্যৈশৰ্ব্বাণ্যৈতেনমোনমঃ॥
১১ ॥দুৰ্গায়ৈদুৰ্গপাৰায়ৈসাৰায়ৈসৰ্ব্বকাৰিণ্যৈ॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

राणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासु
रवधे शक्रादिस्तुतिः॥४॥॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥१॥
पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः॥ त्रैलोक्यं
यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्॥२॥ तावेव सूर्य्य
तान्तद्वदधिकारन्तथैन्दवम्। कौवेरमथ याम्यञ्च च
क्राते वरुणस्य च॥३॥ तावेव पवनर्द्धिञ्च चक्रतुर्व्वह्नि
कर्म्म च। ततो देवाविनिर्द्धूताभ्रष्टराज्या परा
जिताः॥४॥ हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्व्वे नि
राकृताः। महासुराभ्यां तान्देवीं संस्मरन्त्पराजि
ताम्॥५॥ तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृता
खिलाः। भवतान्नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः॥
६॥ इति कृत्वा मतिन्देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्। जग्मु
स्तत्र ततो देवीं विष्णुमायाम्प्रतुष्टुवुः॥७॥ देवा ऊ
चुः ॥८॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततन्नमः॥
नम प्रकृत्यै भद्रायै नियता प्रणताः स्म ताम्॥९॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्य्यै धात्र्यै नमोनमः। ज्यो
त्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततन्नमः॥१०॥ क
ल्याण्यै प्रणतावृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्म्मो नमोनमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्व्वाण्यै ते नमोनमः॥
११॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्व्वकारिण्यै।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

খ্যাতৈ তথৈব কৃষ্ণায়ৈ ধূম্রায়ৈ সততং নমঃ॥১২॥
অতিসৌম্যাতিরৌদ্রায়ৈ নতাস্তস্যৈ নমো নমঃ॥
নমো জগৎপ্রতিষ্ঠায়ৈ দেব্যৈ কৃত্যৈ নমো নমঃ॥
১৩ ॥যা দেবী সর্ব্বভূতেষু বিষ্ণুমায়েতি শব্দি
তা নমস্তস্যৈ॥১৪॥নমস্তস্যৈ॥১৫॥নমস্তস্যৈ নমো

নমঃ॥১৬ ॥যা দেবী সর্ব্বভূতেষু চেতনেত্যভিধীয়তে॥
নমস্তস্যৈ॥১৭॥নমস্তস্যৈ॥১৮ ॥নমস্তস্যৈ নমো
নমঃ॥১৯ ॥যা দেবী সর্ব্বভূতেষু বুদ্ধিরূপেণ সংস্থিতা।
নমস্তস্যৈ॥২০ ॥নমস্তস্যৈ॥২১ ॥নমস্তস্যৈ নমো
নমঃ॥২২ ॥যা দেবী সর্ব্বভূতেষু নিদ্রারূপেণ সংস্থিতা।

নমস্তস্যৈ॥২৩॥নমস্তস্যৈ॥২৪॥নমস্তস্যৈ নমো
নমঃ॥২৫ ॥যা দেবী সর্ব্বভূতেষু ক্ষুধারূপেণ সংস্থি
তা।নমস্তস্যৈ॥২৬॥নমস্তস্যৈ॥২৭॥নমস্তস্যৈ
নমো নমঃ॥২৮ ॥যা দেবী সর্ব্বভূতেষু ছায়ারূপে
ণ সংস্থিতা।নমস্তস্যৈ॥২৯ ॥নমস্তস্যৈ॥৩০॥

নমস্তস্যৈ নমো নমঃ॥৩১॥যা দেবী সর্ব্বভূতেষু শক্তি
রূপেণ সংস্থিতা নমস্তস্যৈ॥৩২॥নমস্তস্যৈ॥৩৩॥
নমস্তস্যৈ নমো নমঃ॥৩৪॥যা দেবী সর্ব্বভূতেষু
তৃষ্ণারূপেণ সংস্থিতা নমস্তস্যৈ॥৩৫॥নমস্তস্যৈ
৩৬॥নমস্তস্যৈ নমো নমঃ॥৩৭॥যা দেবী সর্ব্বভূ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततन्नमः।।१२।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमोनमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमोनमः।।
१३।। या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दि
ता नमस्तस्यै ।।१४।। नमस्तस्यै ।।१५।। नमस्तस्यै नमो

नमः।।१६।। या देवी सर्व्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।।
नमस्तस्यै।।१७।। नमस्तस्यै।।१८।। नमस्तस्यै नमो
नमः ।।१९।। या देवी सर्व्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।।
नमस्तस्यै।।२०।। नमस्तस्यै।।२१।। नमस्तस्यै नमो
नमः।।२२।। या देवी सर्व्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै।।२३।। नमस्तस्यै।।२४।। नमस्तस्यै नमो
नमः ।।२५।। या देवी सर्व्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थि
ता ।। नमस्तस्यै ।।२६।। नमस्तस्यै।।२७।। नमस्तस्यै
नमोनमः ।।२८।। या देवी सर्व्वभूतेषु छायारूपे
ण संस्थिता ।। नमस्तस्यै ।।२९।। नमस्तस्यै।।३०।।

नमस्तस्यै नमोनमः ।।३१।। या देवी सर्व्वभूतेषु शक्ति
रूपेण संस्थिता।। नमस्तस्यै ।।३२।। नमस्तस्यै ।।३३।।
नमस्तस्यै नमोनमः ।।३४।। या देवी सर्व्वभूतेषु
तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।३५।। नमस्तस्यै
।।३६।। नमस्तस्यै नमोनमः ।।३७।। या देवी सर्व्वभू

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

তেষুক্ষান্তিরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥ ৩৮ ॥ নমস্ত
স্যৈ॥ ৩৯ ॥ নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥ ৪০ ॥ যাদেবীস
র্ব্বভূতেষুজাতিরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥ ৪১॥
নমস্তস্যৈ॥ ৪২ ॥ নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥ ৪৩॥
যাদেবীসর্ব্বভূতেষুলজ্জারূপেণসংস্থিতানমস্ত
স্যৈ॥ ৪৪ ॥ নমস্তস্যৈ॥ ৪৫ ॥ নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥
৪৬ ॥ যাদেবীসর্ব্বভূতেষুশান্তিরূপেণসংস্থিতানম
স্তস্যৈ॥ ৪৭ ॥ নমস্তস্যৈ॥ ৪৮ ॥ নমস্তস্যৈনমো
নমঃ॥ ৪৯ ॥ যাদেবীসর্ব্বভূতেষুশ্রদ্ধারূপেণসং
স্থিতানমস্তস্যৈ॥ ৫০ ॥ নমস্তস্যৈ॥ ৫১ ॥ নমস্ত
স্যৈনমোনমঃ॥ ৫২ ॥ যাদেবীসর্ব্বভূতেষুকান্তি
রূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥ ৫৩ ॥ নমস্তস্যৈ॥ ৫৪
নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥ ৫৫ ॥ যাদেবীসর্ব্বভূতেষু
লক্ষ্মীরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥ ৫৬ ॥ নমস্ত
স্যৈ॥ ৫৭ ॥ নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥ ৫৮ ॥ যাদেবী
সর্ব্বভূতেষুবৃত্তিরূপেণসংস্থিতানমস্তস্যৈ॥ ৫৯॥
নমস্তস্যৈ॥ ৬০ ॥ নমস্তস্যৈনমোনমঃ॥ ৬১ ॥
যাদেবীসর্ব্বভূতেষুধৃতিরূপেণসংস্থিতানমস্ত
স্যৈ॥ ৬২ ॥ নমস্তস্যৈ॥ ৬৩ ॥ নমস্তস্যৈনমোন
মঃ॥ ৬৪ ॥ যাদেবীসর্ব্বভূতেষুস্মৃতিরূপেণসংস্থি

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

तेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।। नमस्तस्यै ।।३८।। नमस्त
स्यै।।३९।। नमस्तस्यै नमोनमः ।।४०।। या देवी स
र्व्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।४१।।
नमस्तस्यै।।४२।। नमस्तस्यै नमोनमः ।।४३।।
या देवी सर्व्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता नमस्त
स्यै ।।४४।। नमस्तस्यै ।।४५।। नमस्तस्यै नमोनमः
।।४६।। या देवी सर्व्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता नम
स्तस्यै ।।४७।। नमस्तस्यै ।।४८।। नमस्तस्यै नमो
नमः।।४९।। या देवी सर्व्वभूतेषु श्रद्धारूपेण सं
स्थिता नमस्तस्यै ।।५०।। नमस्तस्यै ।।५१।। नमस्त
स्यै नमोनमः ।।५२।। या देवी सर्व्वभूतेषु कान्ति
रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।५३।। नमस्तस्यै।।५४।।
नमस्तस्यै नमोनमः ।।५५।। या देवी सर्व्वभूतेषु
लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।५६।। नमस्त
स्यै ।।५७।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।५८।। या देवी
सर्व्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ।।५९।।
नमस्तस्यै।।५६।। नमस्तस्यै नमोनमः ।।६१।।
या देवी सर्व्वभूतेषु धृतिरूपेण संस्थिता नमस्त
स्यै ।।६२।। नमस्तस्यै ।।६३।। नमस्तस्यै नमोन
मः ।।६४।। या देवी सर्व्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थि

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

তানমস্তস্যৈ ॥ ৬৫ ॥ নমস্তস্যৈ ॥ ৬৬ ॥ নমস্তস্যৈ
নমোনমঃ ॥ ৬৭ ॥ যাদেবী সর্ব্বভূতেষু দয়ারূপেণ
সংস্থিতা নমস্তস্যৈ ॥ ৬৮ ॥ নমস্তস্যৈ ॥ ৬৯ ॥ নম
স্তস্যৈ নমোনমঃ ॥ ৭০ ॥ যাদেবী সর্ব্বভূতেষু তুষ্টি
রূপেণ সংস্থিতা নমস্তস্যৈ ॥ ৭১ ॥ নমস্তস্যৈ ॥ ৭২ ॥

নমস্তস্যৈ নমোনমঃ ॥ ৭৩ ॥ যাদেবী সর্ব্বভূতেষু
পুষ্টিরূপেণ সংস্থিতা নমস্তস্যৈ ॥ ৭৪ ॥ নমস্ত
স্যৈ ॥ ৭৫ ॥ নমস্তস্যৈ নমোনমঃ ॥ ৭৬ ॥ যাদেবী
সর্ব্বভূতেষু মাতৃরূপেণ সংস্থিতা নমস্তস্যৈ ॥ ৭৭ ॥
নমস্তস্যৈ ॥ ৭৮ ॥ নমস্তস্যৈ নমোনমঃ ॥ ৭৯ ॥

যাদেবী সর্ব্বভূতেষু ভ্রান্তিরূপেণ সংস্থিতা নমস্ত
স্যৈ ॥ ৮০ ॥ নমস্তস্যৈ ॥ ৮১ ॥ নমস্তস্যৈ নমোনমঃ
৮২ ॥ ইন্দ্রিয়াণামধিষ্ঠাত্রী ভূতানাঞ্চাখিলেষু
যা ॥ ভূতেষু সততং তস্যৈ ব্যাপ্তিদেব্যৈ নমোন
মঃ ॥ ৮৩ ॥ চিতিরূপেণ যা কৃৎস্নমেতদ্ব্যাপ্য স্থি

তা জগৎ ॥ নমস্তস্যৈ ॥ ৮৪ ॥ নমস্তস্যৈ ॥ ৮৫ ॥ ন
মস্তস্যৈ নমোনমঃ ॥ ৮৬ ॥ স্তুতা সুৰৈঃ পূর্ব্বমভীষ্টসং
শ্রয়াত্তথা সুৰেন্দ্রেণ দিনেষু সেবিতা ॥ কৰোতু সা
নঃ শুভহেতুৰীশ্বৰী শুভানি ভদ্রাণ্যভিহন্তু চাপদঃ
৮৭ ॥ যা সাম্প্রতং চোদ্ধতদৈত্যতাপিতৈৰস্মাভি

ता नमस्तस्यै ॥६५॥ नमस्तस्यै ॥६६॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥६७॥ या देवी सर्व्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥६८॥ नमस्तस्यै ॥६९॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥७०॥ या देवी सर्व्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥७१॥ नमस्तस्यै ॥७२॥

नमस्तस्यै नमोनमः ॥७३॥ या देवी सर्व्वभूतेषु पुष्टिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥७४॥ नमस्तस्यै ॥७५॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥७६॥ या देवी सर्व्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥७७॥ नमस्तस्यै ॥७८॥ नमस्तस्यै नमोनमः॥७९॥

या देवी सर्व्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥८०॥ नमस्तस्यै ॥८१॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥८२॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानाञ्चाखिलेषु या ॥ भूतेषु सततन्तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमोनमः ॥८३॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थि

ता जगत् ॥ नमस्तस्यै ॥८४॥ नमस्तस्यै ॥८५॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥८६॥ स्तुता सुरैः पूर्व्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नश्शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥८६॥ या साम्प्रतञ्चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभि

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ৰীশাঠস্যবৈৰ্ন্নমস্যাত৹॥ যাচস্মৃতাতৎক্ষণেমেৱহ
ন্তিনস্সৰ্ব্বাপদোভক্তিৱিনম্ৰমূৰ্ত্তিভিঃ॥ ৮৭॥ ঋ
ষিৰুৱাচ৹॥ ৮৮॥ এৱংস্তৱাদিযুক্তানান্দেৱানা
ন্তত্ৰপাৰ্ব্বতী৹॥ স্নাতুমভ্যাযযৌতোয়েজাহ্নৱ্যান্নৃ
পনন্দন৹॥ ৮৯॥ সাব্ৰৱীত্তান্সুৰান্সুভ্ৰূৰ্ভৱদ্ভিঃ
স্তূয়তেঽত্ৰকা৹॥ শৰীৰকোশতশ্চাস্যাস্সমুদ্ভূতাব্ৰ
ৱীচ্ছিৱা৹॥ ৯০॥ স্তোত্ৰম্মমৈতৎক্ৰিয়তেশুম্ভদৈত্য
নিৰাকৃতৈঃ॥ দেৱৈস্সমস্তৈস্সমৰেনিশুম্ভেনপৰা
জিতৈঃ॥ ৯১॥ শৰীৰকোশাদ্যত্তস্যাঃপাৰ্ব্বত্যানি
স্সৃতাম্বিকা৹॥ কৌশিকীতিসমস্তেষুততোলোকে
ষুগীয়তে৹॥ ৯২॥ তস্যাংৱিনিৰ্গতায়ান্তুকৃষ্ণাভূৎসা
পিপাৰ্ব্বতী৹॥ কালিকেতিসমাখ্যাতাহিমাচলকৃতা
শ্ৰয়া৹॥ ৯৩॥ ততোম্বিকাম্পৰংৰূপংবিভ্ৰাণাংসুমনো
হৰম্৹॥ দদৰ্শচণ্ডোমুণ্ডশ্চভৃত্যৌশুম্ভনিশুম্ভয়োঃ
৯৪॥ তাভ্যাংশুম্ভায়চাখ্যাতাঅতীৱসুমনোহৰা৹॥
কাপ্যাস্তেস্ত্ৰীমহাৰাজভাসয়ন্তীহিমাচলম্৹॥ ৯৫॥
নৈৱতাদৃক্ক্বচিদ্ৰূপংদৃষ্টংকেনচিদুত্তমম্৹॥ জ্ঞায়তা
ঙ্কাপ্যসৌদেৱীগৃহ্যতাঞ্চাসুৰেশ্বৰ৹॥ ৯৬॥ স্ত্ৰীৰ
ত্নমতিচাৰ্ৱঙ্গীদ্যোতয়ন্তীদিশস্ত্বিষা৹॥ সাতুতিষ্ঠ
তিদৈত্যেন্দ্ৰতাম্ভৱান্দ্ৰষ্টুমৰ্হতি৹॥ ৯৭॥ যানিৰত্নো

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

रीशा च सुरैर्न्नमस्यते ।। या च स्मृता तत्क्षणमेव ह
न्ति नस्सर्व्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।८७।। ऋ
षिरुवाच ।।८८।। एवं स्तवादियुक्तानान्देवाना
न्तत्र पार्व्वती।। स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृ
पनन्दन ।।८९।। साब्रवीत्तान्त्सुरान्त्सुभ्रूर्भवद्भिः

स्तूयतेऽत्र का ।। शरीरकोशतश्चास्यास्समुद्भूताब्र
वीच्छिवा ।।९०।। स्तोत्रम्ममैतत्क्रियते शुम्भदैत्य
निराकृतैः ।। देवैस्समस्तैस्समरे निशुम्भेन परा
जितैः ।।९१।। शरीरकोशाद्यत्तस्या पार्व्वत्या नि
स्सृताम्बिका ।। कौशिकी तु समस्तेषु ततो लोके

षु गीयते ।।९२।। तस्यां विनिर्गतायान्तु कृष्णाभूत्सा
पि पार्व्वती।। कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृता
श्रया।।९३।। ततोम्बिकाम्परं रूपं बिभ्राणां सुमनो
हरम् ।। ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः
।।९४।। ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीवसुमनोहरा।

काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।।९५।।
नैव तादृक्क्वचिद्रूपं दृष्टङ्केनचिदुत्तमम्। ज्ञायता
ङ्काप्यसौ देवी गृह्यताञ्चासुरेश्वर ।।९६।। स्त्रीर
त्नमतिचार्व्वंगी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ।। सा तु तिष्ठ
तु दैत्येन्द्र ताम्भवान्द्रष्टुमर्हति ।।९७।। यानि रत्ना

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

নিমগ্ণায়োগজাদ্যাদীনিবৈপ্রভো৽॥ত্রৈলোক্যেতুসম
স্তানিসাম্প্রতম্ভান্তিতেগৃহে৽॥ ৯৮ ॥ঐৰাৱতস্সমা
নীতোগজৰত্নংপুৰন্দৰাৎ৽॥পাৰিজাততৰুশ্চায়
ন্তথৈৱোচ্চৈশ্রৱাহয়ঃ॥ ৯৯ ॥ৱিমানংহংসসংযুক্তমে
তত্তিষ্ঠতিতেঙ্গণে৽॥ৰত্নভূতমিহানীতংযদাসী
দ্বেধসোদ্ভুতম্৽॥ ১০০ ॥নিধিৰেষমহাপদ্মস্সমানী
তোধনেশ্বৰাৎ৽॥কিঞ্জল্কিনিন্দদৌচাব্ধির্মালাম
ম্লানপঙ্কজাম্৽॥ ১০১ ॥ছত্রন্তেৱাৰুণংগেহেকাঞ্চ
নস্রাৱিতিষ্ঠতি৽॥তথায়ংস্যন্দনৱৰোযঃপুৰাসী
ৎপ্রজাপতেঃ॥ ১০২ ॥মৃত্যোৰুৎক্রান্তিদানামশক্তি
ৰীশত্বয়াহৃতা৽॥পাশস্সলিলৰাজস্যভ্রাতুস্তৱপ
ৰিগ্রহে৽॥ ১০৩ ॥নিশুম্ভস্যাব্ধিজাশ্চসমস্তাৰত্ন
জাতয়ঃ॥ৱহ্নিৰপিদদৌতুভ্যমগ্নিশৌচেচৱাস
সী৽॥ ১০৪ ॥এৱন্দৈত্যেন্দ্ৰৰত্নানিসমস্তান্যাহৃতানি
তে৽॥স্ত্রীৰত্নমেষাকল্যাণীত্বয়াকস্মান্নগৃহ্যতে৽
১০৫॥ঋষিৰুৱাচ৽॥ ১০৬ ॥নিশম্যেতিৱচঃশুম্ভঃসত
দাচণ্ডমুণ্ডয়োঃ॥প্রেষয়ামাসসুগ্রীৱন্দূতন্দেৱ্যামহা
সুৰং॥ ১০৭ ॥ইতিচেতিচৱক্তৱ্যাসাগত্বাৱচনান্ম
ম৽॥যথাচাভ্যেতিসম্প্রীত্যাতথাকার্য্যন্ত্বয়ালঘু৽॥
১০৮ ॥ঋষিৰুৱাচ৽॥সতত্রগত্বাযত্রাস্তেশৈলোদ্দে

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

नि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु सम
स्तानि साम्प्रतम्भ्रान्ति ते गृहे ॥९८॥ ऐरावतस्समा
नीतो गजरत्नं पुरन्दरात् । पारिजाततरुश्चाय
न्तथैवोच्चैःश्रवा हयः॥९९॥ विमानं हंससंयुक्तमे
तत्तिष्ठति तेङ्गणे । रत्नभूतमिहानीतं यदासी

द्वेधसोद्भुतम् ॥१००॥ निधिरेषमहापद्मस्समानी
तो धनेश्वरात् । किञ्जल्किनिन्ददौ चाब्धिम्मालाम
म्लानपङ्कजाम् ॥१०१॥ छत्रन्ते वारुणङ्गेहे काञ्च
नस्रावि तिष्ठति । तथायं स्यन्दनवरो य पुरासी
त्प्रजापतेः ॥१०२॥ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्ति

रीश त्वया हृता । पाशस्सलिलराजस्य भ्रातुस्तव प
रिग्रहे ॥१०३॥ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्तारत्न
जातयः। वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वास
सी ॥१०४॥ एवन्दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि
ते॥ स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते

॥१०५॥ ऋषिरुवाच ॥१०६॥ निशम्येति वचश्शुम्भः स त
दा चण्डमुण्डयोः । प्रेषयामास सुग्रीवन्दूतन्देव्या महा
सुरः ॥१०७॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्म
म ॥ यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्य्यन्त्वया लघु॥
१०८॥ ऋषिरुवाच॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्दे

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ভৌতি শোভনে॰॥ তাঞ্চ দেবীন্ততঃ প্ৰাহ শ্লক্ষ্ণং ম
ধুৰয়া গিৰা॰॥ ১০৮ ॥ দূত উৱাচ॰॥ ১০৯॥ দেৱি দৈত্যে
শ্বৰঃ শুম্ভস্ত্ৰৈলোক্যে পৰমেশ্বৰঃ॥ দূতোহং প্ৰেষি
তস্তেন ত্বৎসকাশমিহাগতঃ॥ ১১১ ॥ অব্যাহতাজ্ঞঃ স
ৰ্ব্বাসু যঃ সদা দেৱযোনিষু॰॥ নিৰ্জ্জিতাখিল দৈত্যাৰি

ৰ্বিঃ স যদাহ শৃণুষ্ব তৎ॰॥ ১১২ ॥ মম ত্ৰৈলোক্যমখিলং
মম দেৱা ৱশানুগাঃ॥ যজ্ঞভাগানহং সৰ্ব্বানুপাশ্না
মি পৃথক্ পৃথক্॰॥ ১১৩॥ ত্ৰৈলোক্যে ৱৰৰত্নানি
মম ৱশ্যান্যশেষতঃ॥ তথৈৱ গজৰত্নঞ্চ হৃত্বা দে
ৱেন্দ্ৰৱাহনম্॰॥ ১১৪ ॥ ক্ষীৰোদমথনোদ্ভূতমশ্ব

ৰত্নং মমামৰৈঃ॥ উচ্চৈঃশ্ৰৱসসংজ্ঞন্তৎ প্ৰণিপত্য সম
ৰ্পিতম্॰॥ ১১৫ ॥ যানি চান্যানি দেৱেষু গন্ধৰ্ব্বেষূৰ
গেষু চ॰ ॥ ৰত্নভূতানি ভূতানি তানি ময্যেৱ শোভ
নে॰॥ ১১৬॥ স্ত্ৰীৰত্নভূতান্ত্বান্দেৱি লোকে মন্যামহে ৱ
য়ম্॥ সা ত্বমস্মানুপাগচ্ছ যতো ৰত্নভুজো ৱয়ম্ ॥

১১৭ ॥ মাং ৱা মমানুজং ৱাপি নিশুম্ভমুৰুৱিক্ৰমম্॰ ॥
ভজ ত্বং চঞ্চলাপাঙ্গি ৰত্নভূতাসি ৱৈ যতঃ॥ ১১৮ ॥
পৰমৈশ্বৰ্য্যমতুলং প্ৰাপ্স্যসে মৎপৰিগ্ৰহাৎ॰॥ এতদ্বু
দ্ধ্যা সমালোচ্য মৎপৰিগ্ৰহতাং ৱ্ৰজ॰॥ ১১৯ ॥ ঋষিৰু
ৱাচ॰॥ ১২০ ॥ ইত্যুক্তা সা তদা দেৱী গম্ভীৰান্তঃস্মিতা

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

शेऽति शोभने । ताञ्च देवीन्तत प्राहश्लक्ष्णं म
धुरया गिरा ॥१०९॥ दूत उवाच ॥११०॥ देवि दैत्ये
श्वरश्शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः । दूतोहम्प्रेषि
तस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः॥१११॥ अव्याहताज्ञस्स
र्व्वासु यस्सदा देवयोनिषु। निर्ज्जिताखिलदैत्या
रिस्स यदाह शृणुष्व तत्॥११२॥ मम त्रैलोक्यमखिल
म्मम देवा वशानुगाः॥ यज्ञभागानहं सर्व्वानुपाश्ना
मि पृथक् पृथक्॥११३॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि
मम वश्यान्यशेषतः। तथैव गजरत्नानि हृत्वा दे
वेन्द्रवाहनम्॥११४॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्व
रत्नम्ममामरैः। उच्चैश्श्रवससंज्ञन्तत्प्रणिपत्य सम
र्प्पितम् ॥११५॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्व्वेषूर
गेषु च। रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभ
ने ॥११६। स्त्रीरत्नभूतान्त्वान्देवि लोके मन्यामहे व
यम् । सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्॥
११७॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वञ्चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः॥११८॥
परमैश्वर्य्यमतुलम्प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ॥ एतद्बु
द्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहताम्व्रज ॥११९॥ ऋषिरु
वाच॥१२०॥ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

জগতো৹॥স্তুতা ভগবতী ভদ্রা যয়েদন্ধার্য্যতে জগৎ ৹॥
১২১ ॥দেব্যুবাচ৹॥ ১২২ ॥সত্যমুক্তন্ত্বয়া নাত্র মিথ্যা
কিঞ্চিত্ত্বয়োদিতম্৹॥ত্রৈলোক্যাধিপতিঃ শুম্ভো নিশু
ম্ভশ্চাপি তাদৃশঃ॥ ১২৩ ॥কিন্ত্বত্র যৎপ্রতিজ্ঞাতম্মিথ্যা
তৎক্রিয়তে কথম্৹॥শ্রূয়তামল্পবুদ্ধিত্বাৎপ্রতিজ্ঞা যা

কৃতা পুরা৹॥ ১২৪ ॥যো মাং জয়তি সংগ্রামে যো মে দর্পং ব্য
পোহতি৹॥যো মে প্রতিবলো লোকে স মে ভর্ত্তা ভবিষ্যতি
১২৫ ॥তদাগচ্ছতু শুম্ভোঽত্র নিশুম্ভো বা মহাসুরঃ॥মাং জি
ত্বা কিঞ্চিরেণাত্র পাণিং গৃহ্ণাতু মে লঘু৹॥ ১২৬ ॥দূত উ
বাচ৹॥ ১২৭ ॥অবলিপ্তাসি মৈবন্ত্বন্দেবি ব্রূহি মমাগ্র

তঃ॥ত্রৈলোক্যে কঃ পুমাংস্তিষ্ঠেদগ্রে শুম্ভনিশুম্ভয়োঃ
১২৮ ॥অন্যেষামপি দৈত্যানাং সর্ব্বে দেবা ন বৈ যুধি৹ ॥
তিষ্ঠন্তি সম্মুখে দেবি কিং পুনঃ স্ত্রী ত্বমেকিকা॥১২৯॥
ইন্দ্রাদ্যাঃ সকলা দেবাস্তস্থুর্যেষাং ন সংযুগে৹।শুম্ভা
দীনাং কথন্তেষাং স্ত্রী প্রয়াস্যসি সম্মুখম্৹॥১৩০॥সা

ত্বং গচ্ছ ময়ৈবোক্তা পার্শ্বং শুম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥ কেশাক
র্ষণনির্ধূতগৌরবা মা গমিষ্যসি৹॥ ১৩১ ॥দেব্যুবা
চ৹॥ ১৩২ ॥এবমেতদ্বলী শুম্ভো নিশুম্ভশ্চাতিবীর্যবা
ন্৹॥কিং করোমি প্রতিজ্ঞা মে যদনালোচিতা পুরা৹॥
১৩৩॥স ত্বং গচ্ছ ময়োক্তন্তে যদেতৎসর্ব্বমাদৃতঃ ॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

जगौ। दुर्ग्गा भगवती भद्रा ययेदन्धार्य्यते जगत्॥
१२१॥ देव्युवाच ॥१२२॥ सत्यमुक्तन्त्वयानात्र मिथ्या
किञ्चित्त्वयोदितम् ॥ त्रैलोक्याधिपतिश्शुम्भो निशु
म्भश्चापि तादृशः॥१२३॥ किन्त्वत्र यत्प्रतिज्ञातम्मिथ्या
तत्क्रियते कथम् । श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या
कृता पुरा॥१२४॥ यो माञ्जयति सङ्ग्रामे यो मे दर्प्पं व्य
पोहति ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्त्ता भविष्यति
॥१२५॥ तदा गच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः। माञ्जि
त्वा किञ्चिरेणात्र पाणिङ्गृह्णातु मे लघु ॥१२६॥ दूत उ
वाच ॥१२७॥ अवलिप्तासि मैवन्त्वन्देवि ब्रूहि ममाग्र
तः॥ त्रैलोक्ये क पुमाँस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः
॥१२८॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्व्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका॥१२९॥
इन्द्राद्यास्सकलादेवास्तस्थुर्य्येषान्न संयुगे । शुम्भा
दीनाङ्कथन्तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्॥१३०॥ सा
त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः। केशाक
र्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥१३१॥देव्युवा
च ॥१३२॥ एवमेतद्बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्य्यवा
न् । किङ्करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा
॥१३३॥ स त्वङ्गच्छ मयोक्तन्ते यदेतत्सर्व्वमादृतः।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

তদাচক্ষ্বাসুরেন্দ্রায়সচযুক্তঙ্করোতুযৎ॥১২৯॥
ইতিমার্কণ্ডেয়পুরাণেসাবর্ণিকেমন্বন্তরেদেবী
মাহাত্ম্যেদূতবাক্যম্॥৫॥১॥ঋষিরুবাচ।
ইত্যাকর্ণ্যবচোদেব্যাঃসদূতোঽমর্ষপূরিতঃ॥সমা
চষ্টসমাগম্যদৈত্যরাজায়বিস্তরাৎ॥২॥তস্য
দূতস্যতদ্বাক্যমাকর্ণ্যাসুররাট্ততঃ॥সক্রোধঃপ্রাহদৈ
ত্যানামধিপন্ধূম্রলোচনম্॥৩॥হেধূম্রলোচনাশু
ত্বংস্বসৈন্যপরিবারিতঃ॥তামানয়বলাদ্দুষ্টাঙ্কে
শাকর্ষণবিহ্বলাম্॥৪॥তৎপরিত্রাণদঃকশ্চি
দ্যদিবোত্তিষ্ঠতেঽপরঃ॥সহন্তব্যোঽমরোবাপিয
ক্ষোগন্ধর্বএববা॥৫॥ঋষিরুবাচ॥৬॥তেনাজ্ঞ
প্তস্ততঃশীঘ্রংসদৈত্যোধূম্রলোচনঃ॥বৃতঃষষ্ট্যা
সহস্রাণামসুরাণান্দ্রুতংযযৌ॥৭॥সদৃষ্ট্বাতান্ত
তোদেবীন্তুহিনাচলসংস্থিতাম্॥জগাদোচ্চৈঃপ্র
যাহীতিমূলংশুম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥৮॥নচেৎপ্রীত্যাদ্য
ভবতীমদ্ভর্তারমুপৈষ্যতি॥ততোবলান্নয়াম্যেষকেশা
কর্ষণবিহ্বলাম্॥৯॥দেব্যুবাচ॥১০॥দৈত্যেশ্বরে
ণপ্রহিতোবলবান্বলসংবৃতঃ॥বলান্নয়সিমামে
বন্ততঃকিন্তেকরোম্যহম্॥১১॥ঋষিরুবাচ॥
১২॥ইত্যুক্তঃসোঽভ্যধাবত্তামসুরোধূম্রলোচনঃ॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ।।१३४।।
इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी
माहात्म्ये दूतवाक्यम्।।५।।।। ।। ऋषिरुवाच।।
इत्याकर्ण्य वचो देव्यास्स दूतोमर्षपूरितः । समा
चष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात्।।२।। तस्य
दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट्ततः । सक्रोध प्राह दै
त्यानामधिपन्धूम्रलोचनम् ।।३।। हे धूम्रलोचनाशु
त्वं स्वसैन्यपरिवारितः। तामानय बलाद्दुष्टाङ्के
शाकर्षणविह्वलाम् ।४।। तत्परित्राणद कश्चि
द्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः । स हन्तव्योऽमरोवापि य
क्षो गन्धर्व्वएव वा ।।५।। ऋषिरुवाच ।।६।। तेनाज्ञ.
प्तस्ततश्शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः। वृतः षष्ठ्या
सहस्त्राणामसुराणान्द्रुतं ययौ।।६।। स दृष्ट्वा तान्त
तो देवीन्तुहिमाचलसंस्थिताम् । जगादोच्चै प्र
याहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ।।८।। न चेत्प्रीत्याद्य
भवती मद्भर्तारमुपैष्यति । ततो बलान्नयाम्येष केशा
कर्षणविह्वलाम् ।।९।। देव्युवाच ।।१०।। दैत्येश्व
रेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः । बलान्नयसि मामे
वन्तत किन्ते करोम्यहम् ।।११।। ऋषिरुवाच ।।
१२।। इत्युक्तस्सोभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

হুঙ্কাৰেণৈৱ তং ভস্ম সা চকাৰাম্বিকা ততঃ॥ ১৩ ॥ অ
থ ক্ৰুদ্ধং মহাসৈন্যমসুৰাণাং তথাম্বিকা। ৱৱৰ্ষ সা
য়কৈস্তীক্ষ্ণৈস্তথা শক্তিপৰশ্বধৈঃ॥ ১৪ ॥ ততো ধু
তসটঃ কোপাৎকৃত্বা নাদং সুভৈৰৱং। পপাতাসু
ৰসেনায়াং সিংহো দেব্যাঃ স্ববাহনঃ॥ ১৫ ॥ কাংশ্চিৎ ক
ৰপ্ৰহাৰেণ দৈত্যানাস্যেন চাপৰান্। আক্ৰম্য চাধৰে
ণান্যান্ স জঘান মহাসুৰান্॥ ১৬ ॥ কেষাংচিৎপাট
য়ামাস নখৈঃ কোষ্ঠানি কেসৰী। তথা তলপ্ৰহাৰে
ণ শিৰাংসি কৃতবান্ পৃথক্॥ ১৭ ॥ বিচ্ছিন্নবাহু
শিৰসঃ কৃতাস্তেন তথাপৰে। পপৌ চ ৰুধিৰ
ং কোষ্ঠাদন্যেষাং ধুতকেসৰঃ॥ ১৮ ॥ ক্ষণেন তদ্বলং
সৰ্বং ক্ষয়ং নীতং মহাত্মনা। তেন কেসৰিণা দেব্যা
বাহনেনাতিকোপিনা। ॥ ১৯ ॥ শ্ৰুত্বা তমসুৰং দে
ব্যা নিহতং ধূম্ৰলোচনম্। বলং চ ক্ষয়িতং কৃৎস্নং দে
বীকেসৰিণা ততঃ॥ ২০ ॥ চুকোপ দৈত্যাধিপতিঃ
শুম্ভঃ প্ৰস্ফুৰিতাধৰঃ॥ আজ্ঞাপয়ামাস চ তৌ চণ্ডমু
ণ্ডৌ মহাসুৰৌ॥ ২১ ॥ হে চণ্ড হে মুণ্ড বলৈৰ্বহুভিঃ প
ৰিবাৰিতৌ। ॥ তত্ৰ গচ্ছত গত্বা চ সা সমানীয়তাং ল
ঘু॥ ২২ ॥ কেশেষ্বাকৃষ্য বদ্ধ্বা বা যদি বঃ সংশয়ো
যুধি। ॥ তদাশেষায়ুধৈঃ সৰ্বৈৰসুৰৈৰ্বিনিহন্যতা

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

हूङ्कारेणैव तम्भस्मसाच्चकाराम्बिका ततः ।।१३।। अ
थ क्रुद्धम्महासैन्यमसुराणान्तथाम्बिका । ववर्ष शा
यकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः।।१४।। ततो धु
तसट कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्। पपातासु
रसेनायां सिंहो देव्यास्स्ववाहनः ।।१५।। काँश्चित्क
रप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् । आक्रान्त्या चाधरे
णान्याञ्जघानाशु महासुरान्।।१६।। केषाञ्चित्पाट
यामास नखै कोष्ठानि केसरी । तथा तलप्रहारे
ण शिरांसि कृतवान्पृथक् ।।१७।। विच्छिन्नबाहु
शिरसः कृतास्तेन तथापरे । पपौ च रुधिरं
ङ्कोष्ठादन्येषान्धुतकेसरः ।।१८।। क्षणेन तद्बलं
सर्व्वं क्षयन्नीतं महात्मना । तेन केसरिणा देव्या
वाहनेनातिकोपिना ।।१९।। श्रुत्वा तमसुरन्दे
व्या निहतन्धूम्रलोचनम् । बलञ्च क्षयितं कृत्स्नन्दे
वीकेसरिणा ततः।।२०।। चुकोप दैत्याधिपति
श्शुम्भ प्रस्फुरिताधरः। आज्ञापयामास च तौ चण्डमु
ण्डौ महासुरौ ।।२१।। हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्ब्बहुलै प
रिवारितौ। तत्र गच्छतङ्गत्वा च सा समानीयतां ल
घु ।।२२।। केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो
युधि। तदाशेषायुधैस्सवैंरसुरैर्विनिहन्यता

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ম্ ॥২৩ ॥তস্মীহতায়াংদুষ্টায়াংসিংহেনবিনি
পাতিতে ॥শীঘ্রমাগম্যতাংবদ্ধ্বাগৃহীত্বাতাম
থাম্বিকাম্ ॥ ২৪ ॥ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণেসাব
র্ণিকেমন্বন্তরেদেবীমাহাত্ম্যেধূম্র
লোচনবধঃ ॥ ৬ ॥ ॥ ঋষিরুবাচ ॥১॥

আজ্ঞপ্তাস্তেততোদৈত্যাশ্চণ্ডমুণ্ডপুরোগমাঃ ॥চতু
রঙ্গবলোপেতাযযুরভ্যুদ্যতায়ুধাঃ ॥ ২ ॥দদৃশু
স্তেততোদেবীমীষদ্ধাসাংব্যবস্থিতাম্ ॥সিংহ
স্যোপরিশৈলেন্দ্রশৃঙ্গেমহতিকাঞ্চনে ॥ ৩ ॥তে
দৃষ্ট্বাতাংসমাদাতুমুদ্যমংচক্রুরুদ্যতাঃ ॥আকৃ
ষ্টচাপাসিধরাস্তথান্যেতৎসমীপগাঃ ॥ ৪ ॥ত
তঃকোপংচকারোচ্চৈরম্বিকাতানরীন্প্রতি ॥কো
পেনচাস্যাবদনংমষীবর্ণমভূত্তদা ॥ ৫ ॥ভ্রূ
কুটীকুটিলাত্তস্যাললাটফলকাদ্দ্রুতম্ ॥কা
লীকরালবদনাবিনিষ্ক্রান্তাসিপাশিনী ॥ ৬ ॥বি

চিত্রখট্বাঙ্গধরানরমালাবিভূষণা ॥দ্বীপিচ
র্মপরীধানাশুষ্কমাংসাতিভৈরবা ॥ ৭ ॥অতি
বিস্তারবদনাজিহ্বাললনভীষণা ॥নিমগ্নার
ক্তনয়নানাদাপূরিতদিঙ্মুখা ॥ ৮ ॥সাবে
গেনাভিপতিতাঘাতয়ন্তীমহাসুরান্ ॥সৈ

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

म् ॥२३॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनि
पातिते । शीघ्रमागम्यताम्बद्ध्वा गृहीत्वा ताम
थाम्बिकाम् ॥२४॥ इति मार्क्कण्डेयपुरा
णे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये धूम्र
लोचनवधः ॥ ॥६॥ ऋषिरुवाच ॥१॥

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः। चतु
रङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥२॥ ददृशु
स्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्। सिंह
स्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥३॥ ते
दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमञ्चक्रुरुद्यताः। आकृ
ष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः॥४॥ त
तः कोपञ्चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति। को
पेन चास्यावदनम्मसीवर्णमभूत्तदा॥५॥ भ्रू
कुटीकुटिलात्तस्य ललाटफलकाद्द्रुतम् । का
ली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी॥६॥ वि
चित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा। द्वीपिच
र्म्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा॥७॥ अति
विस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा । निमग्ना
रक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा॥८॥ सा वे
गेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्। सै

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ন্যত্তত্ৰাসুৰাৰীণামভক্ষয়ত্তদ্বলম্॥ ৯ ॥পা
ৰ্ষ্ণিগ্ৰাহাঙ্কুশগ্ৰাহীযোধঘণ্টাসমন্বিতান্॥
সমাদায়ৈকহস্তেনমুখেচিক্ষেপবাৰণান্॥
১০ ॥তথৈৱযোধন্তুৰগৈৰথংসাৰথিনাসহ।
নিঃক্ষিপ্যৱক্ত্ৰেদশনৈশ্চৰ্ব্বয়ন্ত্যতিভৈৰৱম্॥

একঞ্জগ্ৰাহকেশেষুগ্ৰীৱায়ামথচাপৰম্॥পাদেনা
ক্ৰম্যচৈৱান্যমুৰসান্যমপোথয়ৎ॥ ১২ ॥তৈৰ্মুক্তা
নিচশস্ত্ৰাণিমহাস্ত্ৰাণিতথাসুৰৈঃ॥মুখেনজগ্ৰা
হৰুষাদশনৈৰ্মথিতান্যপি॥ ১৩ ॥বলিনান্তদ্বলং
সৰ্ব্বমসুৰাণাম্মহাত্মনাম্॥মমৰ্দ্দাভক্ষয়চ্চান্যা

নন্যাংশ্চাতাড়য়ত্তদা॥ ১৪ ॥অসিনানিহতাঃকেচি
ৎকেচিৎখট্বাঙ্গতাড়িতাঃ জগ্মুৰ্ব্বিনাশমসুৰাদ
ন্তাগ্ৰাভিহতাস্তথা॥ ১৫ ॥ক্ষণেনতদ্বলংসৰ্ব্বমসু
ৰাণান্নিপাতিতম্॥দৃষ্ট্বাচণ্ডোভিদুদ্ৰাৱতাঙ্কা
লীমতিভীষণাম্॥ ১৬ ॥শৰৱৰ্ষৈৰ্মহাভীমৈৰ্ভী

মাক্ষীন্তাম্মহাসুৰঃ॥ছাদয়ামাসচক্ৰৈশ্চমুণ্ডঃক্ষি
প্তৈঃসহস্ৰশঃ॥ ১৭ ॥তানিচক্ৰাণ্যনেকানিৱিশ
মানানিতন্মুখম্॥বভুৰ্যথাৰ্কবিম্বানিসুবহূ
নিঘনোদৰম্॥ততোজহাসাতিৰুষাভীম
ভৈৰৱনাদিনী॥কালীকৰালৱক্ত্ৰান্তৰ্দুৰ্দ্দৰ্শদশ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

न्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम्।।९।। पा
र्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहीयोधघण्टासमन्वितान्।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्।।
१०।। तथैव योधन्तुरगैरथं सारथिना सह।
निःक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्व्वयत्यतिभैरवम्।।११।।

एकञ्जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्। पादेना
क्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ।।१२।। तैर्मुक्ता
नि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः। मुखेन जग्रा
ह रुषा दशनैर्म्मथितान्यपि।।१३।। बलिनान्तद्बलं
सर्व्वमसुराणाम्महात्मनाम्। ममर्द्दाभक्षयच्चान्या

नन्याँश्चाताडयत्तदा ।।१४।। असिना निहता केचि
त्केचित्खट्वाङ्गताडिताः। जग्मुर्व्विनाशमसुराद
न्ताग्राभिहतास्तथा ।।१५।। क्षणेन तद्बलं सर्व्वमसु
राणान्निपातितम् । दृष्ट्वा चण्डोभिदुद्राव ताङ्का
लीमतिभीषणाम् ।।१६।। शरवर्षैर्म्महाभीमैर्भी

माक्षीन्तां महासुरः । छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षि
प्तैस्सहस्रशः ।।१७।। तानि चक्राण्यनेकानि विश
मानानि तन्मुखम् । बभुर्य्यथार्क्कबिम्बानि सुबहू
नि घनोदरम् ।।१८।। ततो जहासातिरुषा भीमं
भैरवनादिनी । काली करालवक्त्रान्तर्द्दर्शदश

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

মোজ্জ্বলা॥ ১৯ ॥ওঁ অথায় চ মহাসিংহা দেবী চণ্ড
মধাবত॥ গৃহীত্বা চাস্য কেশেষু শিরস্তেনাসি
নাচ্ছিনৎ॥ ২০ ॥অথ মুণ্ডোঽভ্যধাবত্তাং দৃষ্ট্বা চ
ণ্ডং নিপাতিতম্॥ তমপ্যপাতয়দ্ভূমৌ সা খড়্গা
ভিহতং রুষা॥ ২১ ॥হতশেষং ততঃ সৈন্যং দৃষ্ট্বা

চণ্ডং নিপাতিতম্॥ মুণ্ডঞ্চ সুমহাবীর্য্যং দিশো ভেজে
ভয়াতুরম্॥২২ ॥শিরশ্চণ্ডস্য কালী চ গৃহীত্বা মুণ্ডমে
ব চ॥ প্রাহ প্রচণ্ডাট্টহাসমিশ্রমভ্যেত্য চণ্ডিকাম্॥
২৩ ॥ময়া তবাত্রোপহৃতৌ চণ্ডমুণ্ডৌ মহাপশূ॥
যুদ্ধযজ্ঞে স্বয়ং শুম্ভং নিশুম্ভঞ্চ হনিষ্যসি॥ ২৪ ॥

ঋষিরুবাচ॥২৫ ॥তাবানীতৌ ততো দৃষ্ট্বা চণ্ডমু
ণ্ডৌ মহাসুরৌ॥ উবাচ কালীং কল্যাণী ললিতং চণ্ডি
কা বচঃ॥ ২৬ ॥যস্মাচ্চণ্ডঞ্চ মুণ্ডঞ্চ গৃহীত্বা ত্বমু
পাগতা॥ চামুণ্ডেতি ততো লোকে খ্যাতা দেবি ভ
বিষ্যসি॥ ২৭ ॥ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণি

কে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্ম্যে চণ্ডমুণ্ডবধঃ॥৭॥
ঋষিরুবাচ॥ ১ ॥চণ্ডে চ নিহতে দৈত্যে মুণ্ডে
চ বিনিপাতিতে॥ বহুলেষু চ সৈন্যেষু ক্ষয়ি
তেষ্বসুরেশ্বরঃ॥ ২ ॥ততঃ কোপপরাধী
নচেতাঃ শুম্ভঃ প্রতাপবান্॥ উদ্যোগং সর্ব্ব

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

नोज्ज्वला ॥१९॥ उत्थाय च महासिंहाद्देवी चण्ड
मधावत । गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासि
नाच्छिनत् ॥२०॥ अथ मुण्डोप्यधावत्तान्दृष्ट्वा च
ण्डन्निपातितम् । तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गा
भिहतं रुषा ॥२१॥ हतशेषन्ततस्सैन्यन्दृष्ट्वा
चण्डन्निपातितम् । मुण्डञ्च सुमहावीर्य्यन्दिशो भेजे
भयातुरम् ॥२२॥ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्ड
मेव च । प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्॥
२३॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भन्निशुम्भञ्च हनिष्यसि॥२४॥
ऋषिरुवाच ॥२५॥ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमु
ण्डौ महासुरौ । उवाच कालीङ्कल्याणी ललितञ्चण्डि
का वचः ॥२६॥ यस्माच्चण्डञ्च मुण्डञ्च गृहीत्वा त्वमु
पागता । चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भ
विष्यसि ॥२७॥ इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णि
के मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्डमुण्डवधः॥२७॥
ऋषिरुवाच ॥१॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे
च विनिपातिते । बहुलेषु च सैन्येषु क्षयि
तेष्वसुरेश्वरः ॥२॥ तत कोपपराधी
नचेताश्शुम्भ प्रतापवान् । उद्योगं सर्व्वसै

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ন্যানাং দৈত্যানামাদিদেশ হ॥ ৩ ॥অদ্য সর্ব্ব
লৈর্দ্দৈত্যাঃ ষড়শীতিরুদায়ুধাঃ॥কম্বূনাঞ্চতুর
শীতির্নির্যান্তু স্ববলৈর্বৃতাঃ॥ ৪ ॥কোটিবীর্য্যা
নি পঞ্চাশদসুরাণাং কুলানি বৈ॥শতং কুলানি ধৌ
ম্রাণাং নির্গচ্ছন্তু মমাজ্ঞয়া॥ ৫ ॥কালকা দৌর্হৃ
দা মৌর্য্যাঃ কালকেয়াস্তথাসুরাঃ॥যুদ্ধায় সজ্জা
নির্যান্তু আজ্ঞয়া ত্বরিতা মম॥ ৬ ॥ইত্যাজ্ঞাপ্যা
সুরপতিঃ শুম্ভো ভৈরবশাসনঃ॥নির্জ্জগাম মহা
সৈন্যসহস্রৈর্বহুভির্বৃতঃ॥ ৭ ॥আয়ান্তং চণ্ডি
কা দৃষ্ট্বা তৎসৈন্যমতিভীষণম্॥জ্যাস্বনৈঃ পূর
য়ামাস ধরণীগগনান্তরম্॥ ৮ ॥ততঃ সিংহো ম
হানাদমতীব কৃতবান্নৃপ॥ঘণ্টাস্বনেন তন্না
দমম্বিকা চোপবৃংহয়ৎ॥ ৯ ॥ধনুর্জ্যাসিংহ
ঘণ্টানাং নাদাপূরিতদিঙ্মুখা॥নিনাদৈর্ভীষণৈঃ
কালী জিগ্যে বিস্তারিতাননা॥ ১০ ॥তন্নিনা
দমুপশ্রুত্য দৈত্যসৈন্যৈশ্চতুর্দ্দিশম্॥দেবী সিংহ
স্তথা কালী সরোষৈঃ পরিবারিতাঃ॥ ১১ ॥এতস্মি
ন্নন্তরে ভূপ বিনাশায় সুরদ্বিষাম্॥ভবায়া
মরসিংহানামতিবীর্য্যবলান্বিতাঃ॥ ১২ ॥ব্রহ্মে
শগুহবিষ্ণূনাং তথেন্দ্রস্য চ শক্তয়ঃ॥শরীর

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

न्यानान्दैत्यानामादिदेश ह ॥३॥ अद्य सर्व्वब
लैर्द्दैत्याः षड्शीतिरुदायुधाः । कम्बूनाञ्चतुर
शीतिर्न्निर्यान्तु स्वलैर्व्वृताः ॥४॥ कोटिवीर्य्या
णि पञ्चाशदसुराणाङ्कुलानि वै । शतङ्कुलानि धौ
म्राणान्निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥५॥ कालकादौ
र्हृदा मौर्य्या कालकेयास्तथासुराः ॥ युद्धाय सज्जा
निर्य्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥६॥ इत्याज्ञाप्या
सुरपतिश्शुम्भो भैरवशासनः। निर्ज्जगाम महा
सैन्य सहस्त्रैर्ब्बहुभिर्व्वृतः ॥७॥ आयातञ्चण्डि
का दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् । ज्यास्वनै पूर
यामास धरणीगगनान्तरम् ॥८॥ ततस्सिंहो म
हानादमतीव कृतवान्नृप। घण्टास्वनेन तान्ना
दानम्बिका चोपबृंहयत् ॥९॥ धनुर्ज्यासिंह
घण्टानान्नादापूरितदिङ्मुखा । निनादैर्भीषणै
ष्काली जिग्ये विस्तारिताननना ॥१०॥ तन्निना
दमुपश्रुत्यदैत्यसैन्यैश्चतुर्द्दिशम् । देवी सिंह
स्तथाकाली सरोषै परिवारिताः ॥११॥ एतस्मि
न्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् । भवाया
मरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥१२॥ ब्रह्मे
शगुहविष्णूनान्तथेन्द्रस्य च शक्तयः । शरी

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ৰভ্যো বিনিষ্ক্ৰম্য তদ্ৰূপৈশ্চণ্ডিকাং যযুঃ॥ ১৩ ॥
যস্য দেৱস্য যদ্ৰূপং যথাভূষণবাহনম্। ॥ তদ্বদেৱ
হি তচ্ছক্তিৰসুৰান্যোদ্ধুমাযযৌ ॥ ১৪ ॥ হংসযুক্ত
বিমানাগ্ৰে সাক্ষসূত্ৰকমণ্ডলুঃ ॥ আয়াতা ব্ৰহ্মণঃ
শক্তিৰ্ব্ৰহ্মাণী সাভিধীয়তে ॥ ১৫ ॥ মাহেশ্বৰী

বৃষাৰূঢ়া ত্ৰিশূলৱৰধাৰিণী ॥ মহাহিৱলয়া প্ৰাপ্তা চ
ন্দ্ৰৰেখাৱিভূষণা ॥ ১৬ ॥ কৌমাৰী শক্তিহস্তা চ ময়ূ
ৰৱৰবাহনা ॥ যোদ্ধুমভ্যাযযৌ দৈত্যানম্বিকা গুহৰূ
পিণী ॥ ১৭ ॥ তথৈৱ বৈষ্ণৱী শক্তিৰ্গৰুড়োপৰি সংস্থি
তা ॥ শঙ্খচক্ৰগদাশাৰ্ঙ্গখড্গহস্তাভ্যুপাযযৌ ॥ ১৮ ॥

যজ্ঞৱাৰাহমতুলং ৰূপং যা বিভ্ৰতো হৰেঃ ॥ শক্তিঃ সা
প্যাযযৌ তত্ৰ ৱাৰাহীং বিভ্ৰতী তনুম্ ॥ ১৯ ॥ নাৰ
সিংহী নৃসিংহস্য বিভ্ৰতী সদৃশং ৱপুঃ ॥ প্ৰাপ্তা তত্ৰ
সটাক্ষেপক্ষিপ্তনক্ষত্ৰসংহতিঃ ॥ ২০ ॥ ৱজ্ৰহস্তা ত
থৈৱৈন্দ্ৰী গজৰাজোপৰি স্থিতা ॥ প্ৰাপ্তা সহ

স্ৰনয়না যথা শক্ৰস্তথৈৱ সা ॥ ২১ ॥ ততঃ পৰিৱৃত
স্তাভিৰীশানো দেৱশক্তিভিঃ ॥ হন্যন্তামসুৰাঃ শী
ঘ্ৰং মম প্ৰীত্যাহ চণ্ডিকাম্ ॥ ২২ ॥ ততো দেৱীশৰী
ৰাত্তু বিনিষ্ক্ৰান্তাতিভীষণা ॥ চণ্ডিকাশক্তিৰত্যু
গ্ৰা শিৱাশতনিনাদিনী ॥ ২৩ ॥ সা চাহ ধূম্ৰজটিল

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

रेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकायँय्यु: ॥१३॥
यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम्। तद्वदेव
हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ ॥१४॥ हंसयुक्त
विमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलु:। आयाता ब्रह्मण
श्शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥१५॥ माहेश्वरी
वृषारूढ़ा त्रिशूलवरधारिणी। महाहिवलया प्राप्ता च
न्द्ररेखा विभूषणा ॥१६॥ कौमारी शक्तिहस्ता च मयू
रवरवाहना ॥ योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरू
पिणी ॥१७॥ तथैव वैष्णवीशक्तिर्गरुड़ोपरि संस्थि
ता । शंखचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ॥१८॥
यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरे: । शक्तिस्सा
प्यायायौ तत्र वाराहीम्बिभ्रती तनुम् ॥१९॥ नार
सिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपु: । प्राप्ता तत्र
सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहति: ॥२०॥ वज्रहस्ता त
थैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता: । प्राप्ता सह
स्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥२१॥ तत परिवृत
स्ताभिरीशानो देवशक्तिभि: । हन्यन्तामसुराश्शी
घ्रम्ममप्रीत्याह चण्डिकाम् ॥२२॥ ततो देवीशरी
रात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा । चण्डिका शक्तिरत्यु
ग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥२३॥ सा चाह धूम्रजटिल

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

মীশানমপৰাজিতাং॥ দূতস্ত্বংগচ্ছভগৱন্পার্শ্বংশু
ম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥২৪ ॥ব্রূহিশুম্ভনিশুম্ভঞ্চদান
ৱাৱতিগর্ব্বিতৌ ॥যেচান্যেদানৱাস্তত্ৰসমস্যা
য়সমুপস্থিতাঃ॥২৫ ॥ত্রৈলোক্যমিন্দ্রোলভতান্দে
ৱাস্সন্তুহৱির্ভুজঃ ॥যূয়ংপ্রয়াতপাতালংযদি
জীৱিতুমিচ্ছথ॥২৬ ॥ৱলাৱলেপাদথচেদ্ভৱন্তোযু
দ্ধকাঙ্ক্ষিণঃ ॥তদাগচ্ছততৃপ্যন্তুমচ্ছিৱাঃপিশি
তেনৱঃ॥২৭ ॥যতোনিযুক্তোদৌত্যেনতয়াদেব্যা
শিৱস্স্বয়ম্ ॥শিৱদূতীতিলোকেস্মিংস্ততস্সাখ্যাতি
মাগতা॥২৮ ॥তেপিশ্রুত্বাৱচোদেব্যাঃশর্ব্বাখ্যাতংম
হাসুৰাঃ॥অমর্ষাপূৰিতাজগ্মুর্যত্ৰকাত্যায়নীস্থিতাঃ॥
২৯ ॥ততঃপ্রথমমেৱাগ্রেশৰশক্ত্যৃষ্টিৱৃষ্টিভিঃ॥ৱৱ
র্ষুৰুদ্ধতামর্ষাস্তান্দেৱীমমৰাৰয়ঃ॥৩০ ॥সাচতান্প্র
হিতান্বাণাঞ্ছূলশক্তিপৰশ্বধান্ ॥চিচ্ছেদলীলয়া
ধ্মাতধনুর্ম্মুক্তৈর্মহেষুভিঃ॥৩১ ॥তস্যাগ্রতস্তথা
কালীশূলপাতৱিদাৰিতান্ ॥খট্বাঙ্গপোথিতাংশ্চাৰী
ন্কুর্ব্বতীৱ্যচৰত্তদা॥৩২ ॥কমণ্ডলুজলাক্ষেপহত
ৱীর্য্যান্হতৌজসঃ॥ব্ৰহ্মাণীচাকৰোচ্ছত্রূন্যেনযেন
স্মধাৱতি॥৩৩ ॥মাহেশ্বৰীত্রিশূলেনতথাচক্রেণবৈ
ষ্ণৱী॥দৈত্যাঞ্জঘানকৌমাৰীতথাশক্ত্যাতিকো

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

मीशानमपराजिता । दूतत्वं गच्छ भगवन्पार्श्वं शु
म्भनिशुम्भयोः ॥२४॥ ब्रूहि शुम्भन्निशुम्भञ्च दान
वावतिगर्व्वितौ ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धा
य समुपस्थिताः ॥२५॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतान्दे
वास्सन्तु हविर्भुजः॥ यूयं प्रयात पातालं यदि
जीवितुमिच्छथ ॥२६॥ बलाबलेपादथ चेद्भवन्तो यु
द्धकाङ्क्षिणः । तदाऽगच्छत तृप्यन्तु मच्छिवा पिशि
तेन वः ॥२७॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या
शिवस्स्वयम् । शिवदूतीति लोकेस्मिँस्ततस्सा ख्याति
मागता ॥२८॥ तेपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातम्म
हासुराः । अमर्षापूरिता जग्मुर्य्यत्र कात्यायनी स्थिताः॥
२९॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः। वव
र्षुरुद्धतामर्षास्तान्देवीममरारयः॥३०॥ सा च तत्प्र
हितान्बाणाञ्छूलचक्रपरस्वधान् । चिच्छेद लीलया
ध्मातधनुर्म्मुक्तैर्म्महेषुभिः॥३१॥ तस्याग्रतस्तथा
काली शूलपातविदारितान्॥ खट्वाङ्गपोथिताँश्चारी
न्कुर्व्वन्ती व्यचरत्तदा ॥३२॥ कमण्डलुजलाक्षेपहत
वीर्य्यान्हतौजसः। ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन
स्म धावति ॥३३॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण
वैष्णवी । दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिको

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

পনা৹॥৩৪॥ ঐন্দ্ৰীকুলিশপাতেন শতশো দৈত্যদান
ৱাঃ॥ পেতুৰ্ব্বিদাৰিতাঃ পৃথ্ব্যাং ৰুধিৰৌঘপ্ৰৱৰ্ষিণঃ॥
৩৫॥ তুণ্ডপ্ৰহাৰবিধ্বস্তা দংষ্ট্ৰাগ্ৰক্ষতৱক্ষসঃ॥ ৱৰাহ
মূৰ্ত্ত্যা ন্যপতংশ্চক্ৰেণ চ বিদাৰিতাঃ॥৩৬॥ নখৈৰ্ব্বিদা
ৰিতাংশ্চান্যান্ ভক্ষয়ন্তী মহাসুৰান্৹॥ নাৰসিংহী চচা
ৰাজৌ নাদাপূৰ্ণদিগম্বৰা৹॥৩৭॥ চণ্ডাট্টহাসৈৰসুৰা
শিৱদূত্যভিদূষিতাঃ॥ পেতুঃ পৃথিব্যাং পতিতাংস্তাংশ্চ
খাদাথ সা তদা৹॥৩৮॥ ইতি মাতৃগণং ক্ৰুদ্ধং মৰ্দ্দয়ন্তং
মহাসুৰান্৹॥ দৃষ্ট্বাভ্যুপায়ৈৰ্ব্বিবিধৈৰ্নেশুৰ্দ্দেৱাৰি
সৈনিকাঃ॥৩৯॥ পলায়নপৰান্ দৃষ্ট্বা দৈত্যান্মাতৃগণা
ৰ্দ্দিতান্৹॥ যোদ্ধুমভ্যাযযৌ ক্ৰুদ্ধো ৰক্তবীজো মহাসুৰঃ
৪০॥ ৰক্তবিন্দুৰ্যদা ভূমৌ পতত্যস্য শৰীৰতঃ॥ সমুৎপ
ততি মেদিন্যান্তৎপ্ৰমাণস্তদাসুৰঃ॥ ৪১॥ যুযুধে স গ
দাপাণিৰিন্দ্ৰশক্ত্যা মহাসুৰঃ॥ ততশ্চৈন্দ্ৰী স্ববজ্ৰেণ ৰ
ক্তবীজমতাড়য়ৎ৹॥ ৪২॥ কুলিশেনাহতস্যাশু তস্য
সুস্ৰাৱ শোণিতং৹॥ সমুত্তস্থুস্ততো যোধাস্তদ্ৰূপাস্ত
ৎপৰাক্ৰমাঃ॥৪৩॥ যাৱন্তঃ পতিতাস্তস্য শৰীৰাদ্ৰক্ত
বিন্দৱঃ॥ তাৱন্তঃ পুৰুষা জাতাস্তদ্বীৰ্য্যবলবিক্ৰমাঃ
৪৪॥ তে চাপি যুযুধুস্তত্ৰ পুৰুষা ৰক্তসম্ভৱাঃ॥ সম
মাতৃভিৰত্যুগ্ৰশস্ত্ৰপাতাতিভীষণং৹॥ ৪৫॥ পুনশ্চ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

पना ॥३४॥ ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदान
वाः । पेतुर्व्विदारिता पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥
३५॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः। वराह
मूर्त्यान्यपतँश्चक्रेण च विदारिताः ॥३६॥ नखैर्व्विदा
रिताँश्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान् । नारसिंही चचा
राजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥३७॥ चण्डाट्टहासैरसुरा
शिशवदूत्यभिदूषिताः। पेतु पृथिव्याम्पतिताँस्ताँश्च
खादाथ सा तदा ॥३८॥ इति मातृगणं क्रुद्धम्मर्द्दयन्तं
महासुरान् । दृष्ट्वाभ्युपायैर्व्विविधैर्न्नेशुर्द्देवारि
सैनिकाः ॥३९॥ पलायनपरान्दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणा
र्द्दितान् ॥ याद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः
॥४०॥ रक्तबिन्दुर्य्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः । समुत्प
तति मेदिन्यान्तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥४१॥ युयुधे स ग
दापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः। ततश्चैन्द्रीस्ववज्रेण
रक्तबीजमताडयत् ॥४२॥ कुलिशेनाहतस्याशु तस्य
सुस्राव शोणितम् । समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्त
त्पराक्रमाः ॥४३॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्त
बिन्दवः । तावन्त पुरुषाजातास्तद्वीर्य्यबलविक्रमाः
॥४४॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः । सम
म्मातृभिरत्युग्रं शस्त्रपातातिभीषणम् ॥४५॥ पुनश्च

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

৫৬ ॥ মুখেনকালীজগৃহেরক্তবীজস্যশোনিতম্ং
ততোসাবাজঘানাথগদয়াতত্রচণ্ডিকাম্ং ॥ ৫৭ ॥
নকাস্যাবেদনাঞ্চক্রেগদাপাতোল্পিকামপিং ॥ ত
স্যাহতস্যদেহাত্তুবহুসুস্রাবশোনিতম্ং ॥ ৫৮ ॥
যতস্ততস্তদ্বক্ত্রেণচামুণ্ডাসম্প্রতীচ্ছতিং ॥ মুখেসমুদ্গ
তাযেস্যারক্তপাতান্মহাসুরাঃ ॥ ৫৯ ॥ তাংশ্চখাদা
থচামুণ্ডাপপৌতস্যচশোনিতম্ং ॥ দেবীশূলেন
বজ্রেণবানৈরসিভির্ঋষ্টিভিঃ ॥ ৬০ ॥ জঘানর
ক্তবীজন্তঞ্চামুণ্ডাপীতশোনিতম্ং ॥ সপপা
তমহীপৃষ্ঠেশস্ত্রসঙ্ঘসমাহতঃ ॥ ৬১ ॥ নীরক্ত
শ্চমহীপালরক্তবীজোমহাসুরঃ ॥ ততস্তেহর্ষমতু
লমবাপুস্ত্রিদশানৃপং ॥ ৬২ ॥ তেষাম্মাতৃগণোজা
তোননর্ত্তাসৃঙ্মদোদ্ধতঃ ॥ ৬৩ ॥ ❀ ॥ ইতিমা
র্কণ্ডেয়পুরাণেসাবর্ণিকেমন্বন্তরেদেবীমাহা
ত্ম্যেরক্তবীজবধঃ ॥ ৮ ॥ রাজোবাচং ॥ ১ ॥
বিচিত্রমিদমাখ্যাতম্ভগবন্ভবতামমং ॥ দেব্যাশ্চরিত
মাহাত্ম্যেরক্তবীজবধাশ্রিতম্ং ॥ ২ ॥ ভূয়শ্চেচ্ছাম্যহং
শ্রোতুংরক্তবীজেনিপাতিতেং ॥ চকারশুম্ভোযৎকর্ম্ম
নিশুম্ভশ্চাতিকোপনঃ ॥ ৩ ॥ ঋষিরুবাচং ॥ ৪ ॥
চকারকোপমতুলংরক্তবীজেনিপাতিতেং ॥ শুম্ভা

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा। ववाह रक्तम्पुरुषा
स्ततो जातास्सहस्त्रशः ॥४६॥ वैष्णवी समरे चैनञ्च
क्रेणाभिजघान ह । गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरे
श्वरम् ॥४७॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भ
वैः । सहस्त्रशो जगद्व्याप्तन्तत्प्रमाणैर्म्महासुरैः॥४८॥

शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना। माहे
श्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजम्महासुरम् ॥४९॥ स चापि
गदया दैत्यस्सर्व्वा एवाहनत्पृथक्। मातॄ कोपसमा
विष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥५०। तस्याहतस्य बहु
धा शक्तिशूलादिभिर्ब्भुवि । पपात यो वै रक्तौघ

स्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥५१॥ तैश्चासुरासृक् सम्भू
तैरसुरैस्सकलञ्जगत् । व्याप्तमासीत्ततो देवा भ
यमाजग्मुरुत्तमम् ॥५२॥ तान्विषण्णान्सुरान्दृष्ट्वा
चण्डिकाप्राहसत्तराम् । उवाच कालीञ्चामुण्डे विस्त
रम्वदनङ्कुरु ॥५३॥ मच्छस्त्रपातसम्भूतान्रक्तबि

न्दून्महासुरान् । रक्तबिन्दो प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन
वेगिता ॥५४॥ भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महा
सुरान् ॥ एवमेषक्षयन्दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति
॥५५॥ भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा नचोत्पत्स्यन्ति चाप
रे । इत्युक्त्वा तान्ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

৫৬ ॥মুখেনকালীজগৃহেৰক্তবীজস্যশোণিতম্।
ততোসাৱাজঘানাথগদয়াতত্ৰচণ্ডিকাম্॥৫৭॥
নচাস্যাবেদনাঞ্চক্ৰেগদাপাতোল্পিকামপি।ত
স্যাহতস্যদেহাত্তুবহুসুস্ৰাৱশোণিতম্॥৫৮॥
যতস্ততস্তদ্বক্ত্ৰেণচামুণ্ডাসম্প্ৰতীচ্ছতি।মুখেসমুদ্গ
তাযেস্যাৰক্তপাতান্মহাসুৰাঃ॥৫৯॥তাংশ্চখাদা
থচামুণ্ডাপপৌতস্যচশোণিতম্॥দেৱীশূলেন
ৰজ্ৰেণবাণৈৰসিভিৰৃষ্টিভিঃ॥৬০॥জঘানৰ
ক্তবীজন্তঞ্চামুণ্ডাপীতশোণিতম্।সপপা
তমহীপৃষ্ঠেশস্ত্ৰসঙ্ঘসমাহতঃ॥৬১॥নীৰক্ত
শ্চমহীপালৰক্তবীজোমহাসুৰঃ।ততস্তেহৰ্ষমতু
লমৱাপুস্ত্ৰিদশানৃপ॥৬২॥তেষাম্মাতৃগণোজা
তোননৰ্ত্তাসৃঙ্মদোদ্ধতঃ॥৬৩॥ ॥ইতিমা
ৰ্কণ্ডেয়পুৰাণেসাৱৰ্ণিকেমন্বন্তৰেদেৱীমাহা
ত্ম্যেৰক্তবীজবধঃ॥৮॥ ॥ৰাজোৱাচ॥১॥বি
চিত্ৰমিদমাখ্যাতম্ভগৱন্ভৱতামম।দেৱ্যাশ্চৰিত
মাহাত্ম্যেৰক্তবীজবধাশ্ৰিতম্॥২॥ভূয়শ্চেচ্ছাম্যহং
শ্ৰোতুংৰক্তবীজেনিপাতিতে।চকাৰশুম্ভোযৎকৰ্ম্ম
নিশুম্ভশ্চাতিকোপনঃ॥৩॥ঋষিৰুৱাচ॥৪॥
চকাৰকোপমতুলংৰক্তবীজেনিপাতিতে।শুম্ভা

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

५६।। मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्
ततो सावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्।।५७।।
न चास्यावेदनाञ्चक्रे गदापातोल्पिकामपि । त
स्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ।।५८।।
यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा संप्रतीच्छति । मुखे समुद्गता येस्या रक्तपातान् महासुराः ।।५९।। तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् । देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ।।६०।। जघान रक्तबीजन्तं चामुण्डापीतशोणितम्। स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः ।।६१।। नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः। ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप।।६२।। तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः।।६३।। ।। इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधः।।८।। राजोवाच।।१।।
विचित्रमिदमाख्यातम्भगवन्भवता मम। देव्याश्चरितमाहात्म्ये रक्तबीजवधाश्रितम् ।।२।। भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते । चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ।।३।। ऋषिरुवाच ।।४।।
चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते। शुम्भा

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

স্মাবানিশুম্ভস্য হৃতশ্চন্যেশ্চ ঠাহবরে॥৫॥হন্যমানং
মহাসৈন্যং বিলোক্যামর্ষমুদ্বহন্॥অভ্যধাবন্নিশু
ম্ভোঽপি মুখ্যয়াসুরসেনয়া॥৬॥তস্যাগ্রতস্তথাপৃ
ষ্ঠে পার্শ্বয়োশ্চ মহাসুরাঃ॥সন্দষ্টৌষ্ঠপুটাঃ ক্রুদ্ধা
হন্তুং দেবীমুপাযযুঃ॥৭॥আজগাম মহাবীর্যঃ শু
ম্ভোঽপি স্ববলৈর্বৃতঃ॥নিহন্তুং চণ্ডিকাং কোপাৎকৃ
ত্বা যুদ্ধং তু মাতৃভিঃ॥৮॥ততো যুদ্ধমতীবাসীদ্দে
ব্যাঃ শুম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥শরবর্ষমতীবোগ্রং মেঘ
য়োরিব বর্ষতোঃ॥৯॥চিচ্ছেদাস্তাঞ্ছরাংস্তাভ্যাং চ
ণ্ডিকা স্বশরোৎকরৈঃ॥তাড়য়ামাস চাঙ্গেষু শস্ত্রৌ
ঘৈরসুরেশ্বরৌ॥১০॥নিশুম্ভো নিশিতং খড্গং চর্ম্ম
চাদায় সুপ্রভম্॥অতাড়য়ন্মূর্দ্ধ্নি সিংহং দেব্যা বাহ
নমুত্তমম্॥১১॥তাড়িতে বাহনে দেবী ক্ষুরপ্রে
ণাসিমুত্তমম্॥নিশুম্ভস্যাশু চিচ্ছেদ চর্ম্ম চাপ্য
ষ্টচন্দ্রকম্॥১২॥ছিন্নে চর্ম্মণি খড্গে চ শক্তিং
চিক্ষেপ সোঽসুরঃ॥তামপ্যস্য দ্বিধা চক্রে চক্রেণাভি
মুখাগতাম্॥১৩॥কোপাধ্মাতো নিশুম্ভোঽথ শূলং
জগ্রাহ দানবঃ॥আয়াতং মুষ্টিপাতেন দেবী তচ্চা
প্যচূর্ণয়ৎ॥১৪॥আবিধ্যাথ গদাং সোঽপি চিক্ষে
প চণ্ডিকাং প্রতি॥সাপি দেব্যা ত্রিশূলেন ভিন্না

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

सुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥५॥ हन्यमानं
महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् । अभ्यधावन्निशु
म्भोपि मुख्ययासुरसेनया ॥६॥ तस्याग्रतस्तथा पृ
ष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः । सन्दष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा
हन्तुन्देवीमुपाययुः ॥७॥ आजगाम महावीर्य्यः शु
म्भोपि स्वबलैर्वृतः । निहन्तुञ्चण्डिकाङ्कोपात्कृ
त्वा युद्धन्तु मातृभिः ॥८॥ ततो युद्धमतीवासीद्दे
व्या शुम्भनिशुम्भयोः । शरवर्षमतीवोग्रम्मेघ
योरिव वर्षतोः ॥९॥ चिच्छेदास्ताञ्छराँस्ताभ्याञ्च
ण्डिका स्वशरोत्करैः । ताडयामास चाङ्गेषु श
स्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥१०॥ निशुम्भो निशितङ्खड्गञ्च
र्म्म चादाय सुप्रभम् । अताड़यन्मूर्ध्नि सिंहन्देव्या वाह
नमुत्तमम् ॥११॥ ताड़िते वाहने देवी क्षुरप्रे
णासिमुत्तमम् । निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म्म चाप्य
ष्टचन्द्रकम् ॥१२॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिञ्चि
क्षेप सोऽसुरः । तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभि
मुखागताम् ॥१३॥ कोपाध्मातो निशुम्भोथ शूलं
जग्राह दानवः । आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चा
प्यचूर्णयत् ॥१४॥ आविध्याथ गदां सोपि चिक्षे
प चण्डिकाम्प्रति । सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ভস্মত্বমাগতা॥১৫॥ততঃপৰশুহস্তন্তমায়ান্তং দে
ত্যেশ্বৰম্ ॥আহত্য দেবী বাণৌঘৈৰপাতয়ত ভূত
লে॥১৬॥তস্মিন্নিপতিতে ভূমৌ নিশুম্ভে ভীমবিক্র
মে॥ভ্ৰাতৰ্য্যতীব সংক্ৰুদ্ধঃ প্ৰযযৌ হন্তুমম্বিকাম্॥
১৭॥সৰথস্থস্তথাত্যুচ্চৈৰ্গৃহীতপৰমায়ুধৈঃ॥
ভুজৈৰষ্টাভিৰতুলৈৰ্ব্যাপ্যাশেষং বভৌ নভঃ॥১৮॥তমা
য়ান্তং সমালোক্য দেবী শঙ্খমবাদয়ত্॥জ্যাশব্দঞ্চাপি
ধনুষশ্চকাৰাতীব দুঃসহম্॥১৯॥পূৰয়ামাস ককু
ভো নিজঘণ্টাস্বনেন চ॥সমস্তদৈত্যসৈন্যানাং তে
জোবধবিধায়িনা॥২০॥ততঃ সিংহো মহানাদৈস্ত্যাজি
তেভমহামদৈঃ॥পূৰয়ামাস গগনং গাং তথোপদিশো
দশ॥২১॥ততঃ কালী সমুৎপত্য গগনং ক্ষ্মামতাড়য়ত্॥
কৰাভ্যাং তন্নিনাদেন প্ৰাকস্বনাস্তে তিৰোহিতাঃ॥২২॥
অট্টাট্টহাসমশিবং শিবদূতী চকাৰ হ॥তৈঃ শব্দৈ
ৰসুৰাস্ত্ৰেসুঃ শুম্ভঃ কোপং পৰং যযৌ॥২৩॥দুৰাত্ম
স্তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি ব্যাজহাৰাম্বিকা যদা॥তদা জয়েত্য
ভিহিতং দেবৈৰাকাশসংস্থিতৈঃ॥২৪॥শুম্ভেনাগ
ত্য যা শক্তিৰ্মুক্তা জ্বালাতিভীষণা॥আয়ান্তী বহ্নি
কূটাভা সা নিৰস্তা মহোল্কয়া॥২৫॥সিংহনাদেন
শুম্ভস্য ব্যাপ্তং লোকত্ৰয়ান্তৰম্॥নিৰ্ঘাতনিঃস্ব

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

भस्मत्वमागता ॥१५॥ तत परशुहस्तन्तमायान्तं दै
त्यपुङ्गवम् । आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूत
ले ॥१६॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्र
मे । भ्रातर्य्यतीव सङ्क्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्
॥१७॥ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥१८॥ तमा
यान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् । ज्याशब्दञ्चापि
धनुश्चकारातीवदुस्सहम् ॥१९॥ पूरयामास ककु
भो निजघण्टास्वनेन च । समस्तदैत्यसैन्यानान्ते
जो वधविधायिना ॥२०॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजि
तेभमहामदैः । पूरयामास गगनङ्गान्तथोपदिशो
दश ॥२२॥ तत काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताड़यत्।
कराभ्यान्तन्निनादेन प्राक्स्वनास्तेतिरोहिताः । । २ २ । ।
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह । तैश्शब्दै
रसुरास्त्रेसुश्शुम्भ कोपम्परं ययौ ॥२३॥ दुरात्मँ
स्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा । तदा जयेत्य
भिहितन्देवैराकाशसंस्थितैः ॥२४॥ शुम्भेनाग
त्य या शक्तिर्मुक्ताज्वालातिभीषणा । आयान्ती वह्नि
कूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥२५॥ सिंहनादेन
शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् । निर्घातनिस्व

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

নাৰাচোৰ্জ্জিতৰানৱনীপাতঃ॥২৬॥ শুম্ভস্যাপ্য
বান্দেৱীস্তস্যপ্ৰহিতাংস্তুৱান্॥ চিচ্ছেদস্বশৰৈৰু
গ্ৰৈঃশতশোঽথসহস্ৰশঃ॥২৭॥ ততস্মাচণ্ডিকাক্ৰু
দ্ধাশূলেনাভিজঘানতম্॥ সতদাভিহতোভূমৌ
মূৰ্চ্ছিতোনিপপাতহ॥২৮॥ ততোনিশুম্ভসম্প্ৰা
প্যচেতনামাত্তকাৰ্ম্মুকঃ॥ আজঘানশৰৈৰ্দ্দেৱীঙ্কা
লীঙ্কেসৰিণন্তথা॥২৯॥ পুনশ্চকৃত্বাবাহূনামযু
তন্দনুজেশ্বৰঃ॥ চক্ৰায়ুধেনদিতিজশ্ছাদয়ামা
সচণ্ডিকাম্॥৩০॥ ততোভগৱতীক্ৰুদ্ধাদুৰ্গা
ৰ্ত্তিনাশিনী॥ চিচ্ছেদতানিচক্ৰাণিস্বশৰৈঃ
সায়কাংশ্চতান্॥৩১॥ ততোনিশুম্ভোবেগেনগ
দামাদায়চণ্ডিকাম্॥ অভ্যধাৱতবৈহন্তুন্দৈত্যসে
নাসমাবৃতঃ॥৩২॥ তস্যাপততএবাশুগদাঞ্চি
চ্ছেদচণ্ডিকা॥ খড্গেনশিতধাৰেণসচশূলংস
মাদদে॥৩৩॥ শূলহস্তংসমায়ান্তন্নিশুম্ভমমৰা
ৰ্দ্দনম্॥ হৃদিৱিব্যাধশূলেনবেগাৱিদ্ধেনচণ্ডিকা॥
৩৪॥ ভিন্নস্যতস্যশূলেনহৃদয়ান্নিঃসৃতোপৰঃ॥
মহাবলোমহাবীৰ্য্যস্তিষ্ঠেতিপুৰুষোবদন্॥৩৫॥
তস্যনিষ্ক্ৰামতোদেৱীপ্ৰহস্যস্বনৱত্ততঃ॥ শিৰ
শ্চিচ্ছেদখড্গেনততোঽসাৱপতদ্ভুৱি॥৩৬॥ তত

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

नो घोरो जितवानवनीपते ॥२६॥ शुम्भमुक्ताञ्छ
रान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् । चिच्छेद स्वशरैरु
ग्रैश्शतशोऽथ सहस्रशः ॥२७॥ ततस्सा चण्डिका क्रु
द्धा शूलेनाभिजघान तम् । स तदाभिहतो भूमौ
मूर्च्छितो निपपात ह॥२८॥ ततो निशुम्भस्सम्प्रा
प्य चेतनामात्तकार्म्मुकः। आजघान शरैर्देवीङ्का
लीङ्केसरिणन्तथा ॥२९॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयु
तन्दनुजेश्वरः । चक्रायुधेन दितिजश्छादयामा
स चण्डिकाम् ॥३०॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दु
र्गतिनाशिनी । चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः
सायकाँश्च तान् ॥३१॥ ततो निशुम्भो वेगेन ग
दामादाय चण्डिकाम् । अभ्यधावत वै हन्तुन्दैत्यसे
नासमावृतः ॥३२॥ तस्यापतत एवाशु गदाञ्चि
च्छेद चण्डिका ॥ खड्गेन शितधारेण स च शूलं स
माददे ॥३३॥ शूलहस्तन्तमायान्तन्निशुम्भममरा
र्द्दनम् । हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका
॥३४॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निस्सृतोपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्॥३५॥
तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः । शिर
श्चिच्छेद खड्गेन ततो सावपतद्भुवि॥३६॥ तत

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

সিংহস্তথাদেগ্রদংষ্ট্রাক্ষুণ্ণশিৰোধৰান্ ॥ ক্ষমবক্ত্র
মুখা কালী শিৱদূতী তথাপৰান্ ॥ ৩৭ ॥ কৌমাৰী
শক্তিনির্ভিন্নাঃ কেচিন্নেশুর্মহাসুৰাঃ ॥ ব্রহ্মাণী
মন্ত্রপূতেন তোয়েনান্যে নিৰাকৃতাঃ ॥ ৩৮ ॥ মা
হেশ্বৰী ত্রিশূলেন ভিন্নাঃ পেতুস্তথাপৰে ॥ ৱাৰা
হীতুণ্ডঘাতেন কেচিচ্চূৰ্ণীকৃতা ভুৱি ॥ খণ্ডং খণ্ডং চ
চক্রেণ ৱৈষ্ণৱ্যা দানৱাঃ কৃতাঃ ॥ ৱজ্রেণ চৈন্দ্রীহ
স্তাগ্রৱিমুক্তেন তথাপৰে ॥ ৪০ ॥ কেচিদ্বিনেশুৰ
সুৰাঃ কেচিন্নষ্টা মহাহৱাৎ ॥ ভক্ষিতাশ্চা
পৰে কালী শিৱদূতী মৃগাধিপৈঃ ॥ ৪১ ॥ ❀ ॥

ইতি মাৰ্কণ্ডেয়পুৰাণে সাৱৰ্ণিকে মন্বন্তৰে দে
ৱীমাহাত্ম্যে নিশুম্ভৱধঃ ॥ ❀ ॥ ঋষিৰুৱাচ ॥ ১
নিশুম্ভং নিহতং দৃষ্ট্বা ভ্রাতৰং প্রাণসম্মিতম্ ॥ হন্য
মানং বলঞ্চৈৱ শুম্ভঃ ক্রুদ্ধোহব্রৱীদ্বচঃ ॥ ২ ॥ বলাৱ
লেপাদ্দুষ্টে ত্বং মা দুর্গে গৰ্ৱমাৱহ ॥ অন্যাসাং বলমা
শ্রিত্য যুধ্যসে যাতিমানিনী ॥ ৩ ॥ দেৱ্যুৱাচ ॥
৪ ॥ একৈৱাহং জগত্যত্র দ্বিতীয়া কা মমাপৰা ॥
পশ্যৈতা দুষ্ট ময্যেৱ ৱিশন্ত্যো মদ্বিভূতয়ঃ ॥ ৫
ঋষিৰুৱাচ ॥ ॥ ততঃ সমস্তাস্তা দেৱ্যো ব্রহ্ম
াণীপ্রমুখা লয়ম্ ॥ তস্যা দেৱ্যাস্তনৌ জগ্মু

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

स्सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् । असुराँस्ताँ
स्तथा काली शिवदूती तथाऽपरान् ॥३७॥ कौमारी
शक्तिनिर्भिन्ना केचिन्नेशुर्महासुराः । ब्रह्माणी
मन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥३८॥ मा
हेश्वरी त्रिशूलेन भिन्ना पेतुस्तथाऽपरे । वारा
ही तुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि॥ खण्डखण्डञ्च
चक्रेण वैष्णव्या दानवा कृताः । वज्रेण चैन्द्रीह
स्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥४०॥ केचिद्विनेशुर
सुरा केचिन्नष्टा महाहवात्। भक्षिताश्चा
परे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः॥४१॥ ॥९॥
इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे दे
वीमाहात्म्ये निशुम्भवधः॥ ॥ ऋषिरुवाच॥१॥
निशुम्भन्निहतन्दृष्ट्वा भ्रातरम्प्राणसम्मितम् । हन्य
मानम्बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोब्रवीद्वचः ॥२॥ बलाव
लेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्व्वमावह । अन्यासाम्बल
माश्रित्य युध्यसे यातिमानिनी ॥३॥ देव्युवाच
॥४॥ एकैवाहञ्जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैतादुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥५॥
ऋषिरुवाच॥ ततस्समस्तास्ता देव्यो ब्र
ह्माणीप्रमुखा लयम् । तस्या देव्यास्तनौ जग्मु

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

রেকৈবাসীত্তদাম্বিকা ॥৬॥ দেব্যুবাচ ॥৭॥ অহং বি-
ভূত্যা বহুভিরিহ রূপৈর্যদাস্থিতা। তৎ সংহৃত
ময়ৈকৈব তিষ্ঠাম্যাজৌ স্থিরো ভব ॥৮॥ ঋষি
রুবাচ ॥৯॥ ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং দেব্যাঃ শুম্ভস্য
চোভয়োঃ। পশ্যতাং সর্বদেবানামসুরাণাঞ্চ দারু
ণম্ ॥১০॥ শরবর্ষৈঃ শিতৈঃ শস্ত্রৈস্তথাস্ত্রৈশ্চৈব দা
রুণৈঃ। তয়োর্যুদ্ধমভূদ্ভূয়ঃ সর্বলোকভয়ঙ্করম্ ॥১১॥
দিব্যান্যস্ত্রাণি শতশো মুমুচে যান্যথাম্বিকা।
বভঞ্জ তানি দৈত্যেন্দ্রস্তৎপ্রতীঘাতকর্তৃভিঃ ॥১২॥
মুক্তানি তেন চাস্ত্রাণি দিব্যানি পরমেশ্বরী। বভ
ঞ্জ লীলয়ৈবোগ্রহুঙ্কারোচ্চারণাদিভিঃ ॥১৩॥ ত
তঃ শরশতৈর্দেবীমাচ্ছাদয়ত সোঽসুরঃ। সাপি ত
ৎকুপিতা দেবী ধনুশ্চিচ্ছেদ চেষুভিঃ ॥১৪॥ ছিন্নে
ধনুষি দৈত্যেন্দ্রস্তথা শক্তিমথাদদে। চিচ্ছেদ
দেবী চক্রেণ তামপ্যস্য করে স্থিতাম্ ॥১৫॥ ততঃ
খড্গমুপাদায় শতচন্দ্রঞ্চ ভানুমৎ। অভ্যধাবত্ত
দা দেবীং দৈত্যানামধিপেশ্বরঃ ॥১৬॥ তস্যাপতত
এবাশু খড্গং চিচ্ছেদ চণ্ডিকা। ধনুর্মুক্তৈঃ শিতৈ
র্বাণৈশ্চর্ম চার্ককরামলম্ ॥১৭॥ হতাশ্বঃ স ত
দা দৈত্যশ্ছিন্নধন্বা বিসারথিঃ। জগ্রাহ মুদ্গরং ঘো

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

रेकैवासीत्तदाम्बिका ॥६॥ देव्युवाच ॥७॥ अहं
विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्य्यदास्थिता। सत्संहृत
म्मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥८॥ ऋषि
रुवाच ॥९॥ तत प्रववृते युद्धन्देव्याश्शुम्भस्य
चोभयोः । पश्यतां सर्व्वदेवानामसुराणाञ्च दारु
णम् ॥१०॥ शरवर्षैश्शितैश्शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दा
रुणैः । तयोर्युद्धमभूद्भूयस्सर्वलोकभयङ्करम्॥११॥
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका॥
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः॥१२॥
मुक्तानि तेन चास्त्रणि दिव्यानि परमेश्वरी । बभ
ञ्ज लीलयैवोग्रं हूङ्कारोच्चारणादिभिः॥१३॥ त
तश्शरशतैर्द्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः । सापि त
त्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥१४॥ छिन्ने
धनुषि दैत्येन्द्रस्तथाशक्तिमथाददे । चिच्छेद
देवी चक्रेण ताम्मप्यस्य करे स्थिताम् ॥१५॥ ततः
खड्गमुपादाय शतचन्द्रञ्च भानुमत् । अभ्यधावत्त
दा देवीन्दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१६॥ तस्यापतत
एवाशु खड्गञ्चिच्छेद चण्डिका । धनुर्म्मुक्तैश्शितै
र्ब्बाणैश्चर्म्म चार्क्ककरामलम् ॥१७॥ हताश्वस्स त
दा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः । जग्राह मुद्गरं घो

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

বমম্বিকানিধনায়ত ॥১৮॥ চিচ্ছেদাপততস্তস্য
মুদ্গরংনিশিতৈঃশরৈঃ॥ তথাপিসোহভ্যধাবত্তাংমু
ষ্টিমুদ্যম্যবেগবান্॥১৯॥ সমুষ্টিংপাতয়ামা
সহৃদয়েদৈত্যপুঙ্গবঃ॥ দেব্যাস্তংচাপিসাদেবী
তলেনোরস্যতাড়য়ত্॥২০॥ তলপ্রহারাভিহ
তোনিপপাতমহীতলে॥ সদৈত্যরাজঃসহসাপুনর
েবতথোত্থিতঃ॥২১॥ উৎপত্যচপ্রগৃহ্যোচ্চৈর্দেবীং
গগনমাস্থিতঃ॥ তত্রাপিসানিরাধারাযুযুধেতে
নচণ্ডিকা॥২২॥ নিযুদ্ধংখেতদাদৈত্যশ্চণ্ডিকাচ
পরস্পরম্॥ চক্রতুঃপ্রথমংসিদ্ধমুনিবিস্ময়কা
রকম্॥২৩॥ ততোনিযুদ্ধংসুচিরংকৃত্বাতেনাম্বিকা
সহ॥ উৎপাট্যভ্রাময়ামাসচিক্ষেপধরণীতলে॥
২৪॥ সক্ষিপ্তোধরণীংপ্রাপ্যমুষ্টিমুদ্যম্যবেগিতঃ
অভ্যধাবতদুষ্টাত্মাচণ্ডিকানিধনেচ্ছয়া॥২৫॥
তমায়ান্তংততোদেবীসর্বদৈত্যজনেশ্বরম্॥ জ
গত্যাংপাতয়ামাসভিত্ত্বাশূলেনবক্ষসি॥২৬॥ সগতা
সুঃপপাতোর্ব্যাংদেবীশূলাগ্রবিক্ষতঃ॥ চালয়ন্সকলাং
পৃথ্বীংসাব্ধিদ্বীপাংসপর্বতাম্॥২৭॥ ততঃপ্রস
ন্নমখিলংহতেতস্মিন্দুরাত্মনি॥ জগৎস্বাস্থ্যম
তীবাপনির্মলংচাভবন্নভঃ॥২৮॥ উৎপাতমেঘা

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

रंमम्बिकानिधनोद्यतः ॥१८॥ चिच्छेदापततस्तस्य
मुद्गरन्निशितैश्शरैः । तथापि सोभ्यधावत्ताम्मु
ष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥१९॥ समुष्टिम्पातयामा
स हृदये दैत्यपुङ्गवः । देव्यास्तञ्चापि सा देवी
तलेनोरस्यताड़यत् ॥२०॥ तलप्रहाराभिह

तो निपपात महीतले। स दैत्यराजस्सहसा पुनरे
व तथोत्थिताः ॥२१॥ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीङ्ग
गनमास्थितः । तत्रापि सा निराधारा युयुधे ते
न चण्डिका ॥२२॥ नियुद्धङ्खे तदा दैत्यश्चण्डिका च
परस्परम् । चक्रतु प्रथमं युद्धं मुनिविस्मयका

रकम् ॥२३॥ ततो नियुद्धं सुचिरङ्कृत्वा तेनाम्बिका
सह । उत्पाट्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥
२४॥ स क्षिप्तो धरणीम्प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिका निधनेच्छया॥२५॥
तमायान्तन्ततो देवी सर्व्वदैत्यजनेश्वरम्। ज

गत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥२६॥ स गता
सु पपातोर्व्व्यान्देवीशूलाग्रविक्षतः । चालयन्त्सक
लां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥२७॥ तत प्रस
न्नमखिलं हते तस्मिन्दुरात्मनि । जगत्स्वास्थ्यम
तीवाप निर्मलञ्चाभवन्नभः ॥२८॥ उत्पातमेघा

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

স্মোল্কা যে প্রাগাসংস্তে শমং যযুঃ॥ সরিতো মার্গবা
হিন্যস্তথাসংস্তত্র পাতিতে॥২৯॥ ততো দেবগণা
সর্ব্বে হর্ষনির্ভরমানসাঃ॥ বভূবুর্নিহতে তস্মি
ন্ গন্ধর্ব্বা ললিতং জগুঃ॥৩০॥ অবাদয়ংস্তথৈবা
ন্যে ননৃতুশ্চাপ্সরোগণাঃ॥ ববুঃ পুণ্যাস্তথা বা
তাঃ সুপ্রভোভূদ্দিবাকরঃ॥৩১॥ জজ্বলুশ্চাগ্নয়ঃ শা
ন্তাঃ শান্তা দিগ্জনিতস্বনাঃ॥৩২॥ ॐ॥ ইতি মা
র্কণ্ডেয়পুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবীমাহাত্
ম্যে শুম্ভবধঃ॥১০॥ ঋষিরুবাচ॥১॥ দেব্যা হতে
তত্র মহাসুরেন্দ্রে সেন্দ্রাঃ সুরা বহ্নিপুরোগমাস্তাং॥
কাত্যায়নীং তুষ্টুবুরিষ্টলাভাদ্বিকাশিবক্ত্রাব্জবিকাশি
তাশাঃ॥২॥ দেবা ঊচুঃ॥ দেবি প্রপন্নার্ত্তিহরে প্র
সীদ প্রসীদ মাতর্জ্জগতোখিলস্য॥ প্রসীদ বিশ্বে
শ্বরি পাহি বিশ্বং ত্বমীশ্বরী দেবি চরাচরস্য॥৩॥
আধারভূতা জগতস্ত্বমেকা মহীস্বরূপেণ যতঃ স্থি
তাসি॥ অপাং স্বরূপস্থিতয়া ত্বয়ৈতদাপ্যায়তে কৃৎস্নম
লঙ্ঘ্যবীর্য্যে॥৪॥ ত্বং বৈষ্ণবী শক্তিরনন্তবীর্য্যা বিশ্বস্য
বীজং পরমাসি মায়া॥ সম্মোহিতং দেবি সমস্তমেতত্
ত্বং বৈ প্রসন্না ভুবি মুক্তিহেতুঃ॥৫॥ বিদ্যাঃ সমস্তাস্তব
দেবি ভেদাঃ স্ত্রিয়ঃ সমস্তাঃ সকলা জগৎসু॥ ত্বয়ৈকয়া

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

स्सोल्का ये प्रागासँस्ते शमय्यँयुः । सरितो मार्गवा
हिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥२९॥ ततो देवगणा
स्सर्व्वे हर्षनिर्भरमानसाः । बभूवुर्न्निहते तस्मि
न् गन्धर्व्वा ललितञ्जगुः ॥३०॥ अवादयँस्तथैवा
न्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः । ववु पुण्यास्तथा वा
ताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥३१॥ जज्वलुश्चाग्नयश्शा
न्ताश्शान्तदिग्जनितस्वनाः ॥३२॥ ॥ इति मा
र्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहा
त्म्ये शुम्भवधः ॥१०॥ ऋषिरुवाच ॥१॥ देव्या हते
तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्रास्सुरावह्निपुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीन्तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकाशवक्त्राब्जविकाशि
ताशाः ॥२॥ देवा ऊचुः ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्र
सीद प्रसीद मातर्ज्जगतोखिलस्य। प्रसीद विश्वे
श्वरि पाहि विश्वन्त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥३॥
आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थि
तासि । अपां स्वरूपस्थितया त्वयेतदाप्याय्यते कृत्स्न
मलङ्घ्यवीर्य्ये॥४॥ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्य्या विश्वस्य
बीजम्परमासि माया । सम्मोहितन्देवि समस्तमेतत्त्वं
वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥५॥ विद्यास्समस्तास्तव
देवि भेदाः स्त्रियस्समस्तास्सकलाजगत्सु । त्वयैकया

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

পূৰিতমম্বয়ৈতৎকাতেস্তুতিস্তব্যপৰাপৰোক্তিঃ॥৬॥
সৰ্ব্বভূতাযদাদেৱীস্বৰ্গমুক্তিপ্ৰদায়িনী॥ত্বংস্তুতাস্তু
তয়েকাৱাভৱন্তুপৰমোক্তয়ঃ॥৭॥সৰ্ব্বস্যবুদ্ধিৰূ
পেণজনস্যহৃদিসংস্থিতে॥স্বৰ্গাপৱৰ্গদেদেৱি
নাৰায়ণিনমোস্তুতে॥৮॥কলাকাষ্ঠাদিৰূপেণ
পৰিণামপ্ৰদায়িনি॥বিশ্বস্যোপৰতৌশক্তেনাৰায়
ণিনমোস্তুতে॥৯॥সৰ্ব্বমঙ্গলমঙ্গল্যেশিৱসৰ্ব্বাৰ্থ
সাধিকে॥শৰণ্যেত্ৰ্যম্বকেগৌৰিনাৰায়ণিনমোস্তু
তে॥১০॥সৃষ্টিস্থিতিবিনাশানাংশক্তিভূতেসনা
তনি॥গুণাশ্ৰয়েগুণময়েনাৰায়ণিনমোস্তুতে॥১১॥
শৰণাগতদীনাৰ্ত্তপৰিত্ৰাণপৰায়ণে॥সৰ্ব্বস্যাৰ্ত্তি
হৰেদেৱিনাৰায়ণিনমোস্তুতে॥১২॥হংসযুক্তবিমা
নস্থেব্ৰহ্মাণীৰূপধাৰিণি॥কৌশাম্ভঃক্ষৰিকেদে
ৱিনাৰায়ণিনমোস্তুতে॥১৩॥ত্ৰিশূলচন্দ্ৰাহিধৰে
মহাবৃষভবাহিনি॥মাহেশ্বৰীস্বৰূপেণনাৰায়ণি
নমোস্তুতে॥১৪॥ময়ূৰকুক্কুটবৃতেমহাশক্তিধৰে
নঘে॥কৌমাৰীৰূপসংস্থানেনাৰায়ণিনমোস্তু
তে॥১৫॥শঙ্খচক্ৰগদাশাৰ্ঙ্গগৃহীতপৰমায়ুধে
প্ৰসীদবৈষ্ণৱীৰূপেনাৰায়ণিনমোস্তুতে॥১৬॥
গৃহীতোগ্ৰমহাচক্ৰেদংষ্ট্ৰোদ্ধৃতবসুন্ধৰে॥ৱৰাহৰূ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिस्स्तव्यपरा परोक्तिः ॥६॥ सर्व्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी। त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥७॥ सर्व्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते । स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥८॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि । विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोस्तु ते ॥९॥ सर्व्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्व्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥१०॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि । गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोस्तु ते॥११॥ शरणागतदीनार्त्तपरित्राणपरायणे । सर्व्वस्यार्त्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥१२॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि । कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोस्तुं ते ॥१३॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि । माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोस्तु ते ॥१४॥ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरे नघे । कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोस्तु ते ॥१५॥ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोस्तु ते ॥१६॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे। वराहरू

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

পিনিশিৱেনাৰায়নিনমোস্তুতে॥ ১৭ ॥নৃসিংহৰূ
পেণোগ্ৰেণহন্তুংদৈত্যান্কৃতোদ্যমে॥ত্ৰৈলোক্যত্ৰা
ণসহিতেনাৰায়নিনমোস্তুতে॥১৮॥কিৰীটিনি
মহাৱজ্ৰেসহস্ৰনয়নোজ্জ্বলে॥বৃত্ৰপ্ৰাণহৰেচৈ
ন্দ্ৰীনাৰায়নিনমোস্তুতে॥১৯॥শিৱদূতীস্বৰূপেণ
হতদৈত্যমহাবলে॥ঘোৰৰূপেমহাৰাৱেনাৰায়নি
নমোস্তুতে॥২০॥দংষ্ট্ৰাকৰালবদনেশিৰোমালাবি
ভূষণে॥চামুণ্ডেমুণ্ডমথনেনাৰায়নিনমোস্তুতে॥
২১॥লক্ষ্মিলজ্জেমহাবিদ্যেশ্ৰদ্ধেপুষ্টিস্বধেধ্ৰুৱে॥
মহাৰাত্ৰিমহাবিদ্যেনাৰায়নিনমোস্তুতে॥২২॥মে
ধেসৰস্বতিৱৰেভূতিবাভ্ৰৱিতামসি॥নিয়তেত্বংপ্ৰ
সীদেশেনাৰায়নিনমোস্তুতে॥২৩॥সৰ্বতঃপাণি
পাদান্তেসৰ্বতোক্ষিশিৰোমুখে॥সৰ্বতঃশ্ৰৱণেঘ্ৰা
ণেনাৰায়নিনমোস্তুতে॥২৪॥সৰ্বস্বৰূপেসৰ্বে
শেসৰ্বশক্তিসমন্বিতে॥ভয়েভ্যস্ত্ৰাহিনোদেৱিদু
ৰ্গেদেৱিনমোস্তুতে॥২৪॥এতত্তেবদনংসৌম্যংলোচন
ত্ৰয়ভূষিতম্॥পাতুনঃসৰ্বভীতিভ্যঃকাত্যায়নিনমো
স্তুতে॥২৫॥জ্বালাকৰাল[illegible]মত্যুগ্ৰমশেষাসুৰসূ
দনম্॥ত্ৰিশূলংপাতুনোভীতেৰ্ভদ্ৰকালিনমোস্তু
তে॥২৬॥হিনস্তিদৈত্যতেজাংসিস্বনেনাপূৰ্য্যযাজগৎ

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

पिणि शिवे नारायणि नमोस्तु ते ॥१७॥ नृसिंहरू
पेणोग्रेण हन्तुन्दैत्यान् कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्रा
णसहिते नारायणि नमोस्तु ते ॥१८॥ किरीटिनि
महावज्रे सहस्त्रनयनोज्ज्वले । वृत्रप्राणहरे चै
न्द्रि नारायणि नमोस्तु ते ॥१९॥ शिवदूतीस्वरूपेण

हतदैत्यमहाबले ॥ घोररूपे महारावे नारायणि
नमोस्तु ते ॥२०॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालावि
भूषणे । चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोस्तु ते॥
२१॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे॥
महारात्रि महामाये नारायणि नमोस्तु ते॥२२॥ मे

धे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि। नियते त्वं प्र
सीदेशे नारायणि नमोस्तु ते ॥२३॥ सर्व्वत पाणि
पादान्ते सर्व्वतोक्षिशिरोमुखि॥ सर्व्वतःश्रवणघ्रा
णे नारायणि नमोस्तु ते॥२४॥ सर्व्वस्वरूपे सर्व्वे
शे सर्व्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दु

र्गे देवि नमोस्तु ते ॥२४॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचन
त्रयभूषितम् । पातु नस्सर्व्वभीतिभ्यष्कात्यायनि नमो
स्तुते ॥२४॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसू
दनम् । त्रिशूलम्पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोस्तु
ते ॥२५॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य्य या जगत्।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

সা ঘণ্টা পাতু নো দেবি পাপেভ্যো নঃ সুতানিব ॥২৭॥
অসুরাসৃগ্বসাপঙ্কচর্চিতস্তে করোজ্জ্বলঃ ॥ শুভায় খ-
ড়্গো ভবতু চণ্ডিকে ত্বাং নতা বয়ম্ ॥২৮॥ রোগান
শেষানপহংসি তুষ্টা রুষ্টা তু কামান্ সকলানভীষ্টা-
ন্ ॥ ত্বামাশ্রিতানাং ন বিপন্নরাণাং ত্বামাশ্রিতা হ্যা-
শ্রয়তাং প্রয়ান্তি ॥ ২৯ ॥ এতৎ কৃতং যৎ কদনং ত্বয়াদ্য ধর্মদ্বি-
ষাং দেবি মহাসুরাণাম্ ॥ রূপৈরনেকৈর্বহুধাত্মমূর্তিং
কৃত্বাম্বিকে তৎ প্রকরোতি কান্যা ॥ ৩০ ॥ বিদ্যাসু শা-
স্ত্রেষু বিবেকদীপেষ্বাদ্যেষু বাক্যেষু চ কা ত্বদন্যা ॥
মমত্বগর্তেঽতিমহান্ধকারে বিভ্রাময়ত্যেতদতীব বিশ্ব-
ম্ ॥ ৩১ ॥ রক্ষাংসি যত্রোগ্রবিষাশ্চ নাগা যত্রারয়ো দস্যু-
বলানি যত্র ॥ দাবানলো যত্র তথাব্ধিমধ্যে তত্র স্থিতা ত্বং প-
রিপাসি বিশ্বম্ ॥ ৩২ ॥ বিশ্বেশ্বরি ত্বং পরিপাসি বিশ্বং বিশ্বা-
ত্মিকা ধারয়সীতি বিশ্বম্ ॥ বিশ্বেশবন্দ্যা ভবতী ভবন্তি বি-
শ্বাশ্রয়া যে ত্বয়ি ভক্তিনম্রাঃ ॥ ৩৩ ॥ দেবি প্রসীদ পরিপাল-
য় নোঽরিভীতের্নিত্যং যথাসুরবধাদধুনৈব সদ্যঃ ॥ পা-
পানি সর্বজগতাং প্রশমং নয়াশু উৎপাতপাকজনিতাং-
শ্চ মহোপসর্গান্ ॥ ৩৪ ॥ প্রণতানাং প্রসীদ ত্বং দে-
বি বিশ্বার্তিহারিণি ॥ ত্রৈলোক্যবাসিনামীড্যে লোকা-
নাং বরদা ভব ॥ ৩৫ ॥ দেব্যুবাচ ॥ ৩৬ ॥ বরদাহং

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नस्सुतानिव॥२७॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्च्चितस्ते करोज्ज्वलः। शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वान्नता वयम् ॥२८॥ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्त्सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानान्न विपन्नराणान्त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयान्ति॥२९॥ एतत्कृतं यत्कदनन्त्वयाद्य धर्मद्विषान्देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्ब्बहुधात्ममूर्त्तिङ्कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥३०॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र। दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वम्परिपासि विश्वम्॥३२॥ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् । विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥३३॥ देवि प्रसीद परिपालय नोरिभीतेर्न्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः । पापानि सर्व्वजगताम्प्रशमन्नयाशु उत्पातपाकजनिताँश्च महोपसर्गान् ॥३४॥ प्रणतानाम्प्रसीद त्वन्देवि विश्वार्त्तिहारिणी ॥ त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥३५॥ देव्युवाच॥३६॥ वरदाहं सु

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ৰগণাৰৰং যন্মনসেচ্ছথ।তং বৃণুধ্বং প্রযচ্ছামি জগতা
মুপকাৰকম্।।৩৭।।দেৱা ঊচুঃ।।৩৮।।সৰ্ব্বাবাধাপ্র
শমনং ত্রৈলোক্যস্যাখিলেশ্বৰি।এবমেৱ ত্বয়া কাৰ্য্যম
স্মদ্বৈৰিবিনাশনম্।।৩৯।।দেব্যুবাচ।।বৈৱস্বতেঽ
ন্তৰে প্রাপ্তে অষ্টাবিংশতিমে যুগে।শুম্ভো নিশুম্ভশ্চৈ
ৱান্যাবুৎপৎস্যেতে মহাসুৰৌ।।৪১।।নন্দগোপগৃহে
জাতা যশোদাগৰ্ভসম্ভৱা।ততস্তৌ নাশয়িষ্যামি
বিন্ধ্যাচলনিৱাসিনী।।৪২।।পুনৰপ্যতিৰৌদ্রেণ ৰূ
পেণ পৃথিৱীতলে।অৱতীৰ্য্য হনিষ্যামি বৈপ্রচি
ত্তাংস্তু দানৱান্।।৪৩।।ভক্ষয়ন্ত্যাশ্চ তানুগ্রান্ বৈপ্র
চিত্তান্মহাসুৰান্।ৰক্তাদন্তা ভৱিষ্যন্তি দাড়িমীকু
সুমোপমাঃ।।৪৪।।ততো মাং দেৱতাঃ স্বৰ্গে মৰ্ত্ত্যলো
কে চ মানৱাঃ।স্তুৱন্তো ব্যাহৰিষ্যন্তি সততং ৰক্তদ
ন্তিকাম্।।৪৫।।ভূয়শ্চ শতৱাৰ্ষিক্যামনাবৃষ্ট্যামন
ম্ভসি।মুনিভিঃ সংস্তুতা ভূমৌ সম্ভৱিষ্যাম্যযোনিজা
৪৬।।ততঃ শতেন নেত্রাণাং নিৰীক্ষিষ্যামি যন্মুনীন্
কীৰ্ত্তয়িষ্যন্তি মনুজাঃ শতাক্ষীমিতি মাং ততঃ।।৪৭।।
ততোঽহমখিলং লোকমাত্মদেহসমুদ্ভৱৈঃ।ভৰিষ্যামি
সুৰাঃ শাকৈৰাবৃষ্টেঃ প্রাণধাৰকৈঃ।।৪৮।।শাক
ম্ভৰীতি বিখ্যাতিং তদা যাস্যাম্যহং ভুবি।তত্ৰৈৱ চ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

रगणा वरं यन्मनसेच्छथ । तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगता
मुपकारकम् ॥३७॥ देवा ऊचुः ॥३८॥ सर्व्वबाधाप्र
शमनन्त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वयाकार्य्यम
स्मद्वैरिविनाशनम् ॥३९॥ देव्युवाच ॥४०॥ वैवस्वतेऽ
न्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे । शुम्भो निशुम्भश्चै
वान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥४१॥ नन्दगोपगृहे
जाता यशोदा गर्ब्भसम्भवा । ततस्तौ नाशयिष्यामि
विन्ध्याचलनिवासिनी ॥४२॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रू
पेण पृथिवीतले । अवतीर्य्य हनिष्यामि वैप्रचि
त्ताँस्तु दानवान् ॥४३॥ भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्वैप्र
चित्तान्महासुरान् । रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकु
सुमोपमाः ॥४४॥ ततो मान्देवताः स्वर्गे मर्त्यलो
के च मानवाः । स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तद
न्तिकाम् ॥४५॥ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामन
म्भसि । मुनिभिस्संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा
॥४६॥ ततश्शतेन नेत्राणान्निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्त्तयिष्यन्ति मनुजाश्शताक्षीमिति मान्ततः ॥४७॥
ततोहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः। भरिष्यामि
सुराश्शाकैरावृष्टे प्राणधारकैः ॥४८॥ शाक
म्भरीति विख्यातिन्तदा यास्याम्यहम्भुवि । तत्रैव च

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ৱধিষ্যামি দুৰ্গমাখ্যম্মহাসুৰম্॥ ৪৯ ॥ দুৰ্গাদেৱী
তি ৱিখ্যাতন্তন্মেনামভৱিষ্যতি॥ পুনশ্চাহং যদাভী
মং ৰূপং কৃত্বা হিমাচলে॥ ৫০ ॥ ৰক্ষাংসি ভক্ষয়িষ্যা
মি মুনীনাং ত্ৰাণকাৰণাৎ॥ তদা মাং মুনয়স্সৰ্ব্বে
স্তোষ্যন্ত্যানম্ৰমূৰ্ত্তয়ঃ॥ ৫১ ॥ ভীমাদেৱীতি ৱিখ্যাত
ন্তন্মেনামভৱিষ্যতি॥ ৫২ ॥ তদাহং ভ্ৰামৰং ৰূপং কৃত্বা
সংখ্যেয়ষট্পদম্॥ ত্ৰৈলোক্যস্য হিতাৰ্থায় ৱধিষ্যামি মহা
সুৰম্॥ ৫৩ ॥ ভ্ৰামৰীতি চ মাং লোকাস্তদা স্তোষ্যন্তি সৰ্ব্ব
তঃ॥ ইত্থং যদা যদা বাধা দানৱোত্থা ভৱিষ্যতি॥ ৫৪
তদা তদাৱতীৰ্য্যাহং কৰিষ্যাম্যৰিসংক্ষয়ম্॥ ৫৫ ॥

ইতি মাৰ্কণ্ডেয়পুৰাণে সাৱৰ্ণিকে মন্বন্তৰে দেৱীমা
হাত্ম্যে নাৰায়ণীস্তুতিঃ॥ ❀ ॥ ১১ ॥ ❀ ॥ দেৱ্যুৱা
চ॥ ১ ॥ এভিঃ স্তৱৈশ্চ মাং নিত্যং স্তোষ্যতে যঃ সমাহি
তঃ॥ তস্যাহং সকলাং বাধাং নাশয়িষ্যাম্যসংশয়ম্॥ ২ ॥
মধুকৈটভনাশঞ্চ মহিষাসুৰঘাতনম্॥ কীৰ্ত্তয়ি

ষ্যন্তি যে তদ্বদ্বধং শুম্ভনিশুম্ভয়োঃ॥ ৩ ॥ অষ্টম্যাঞ্চ চতু
ৰ্দ্দশ্যাং নৱম্যাঞ্চৈকচেতসঃ॥ শ্ৰোষ্যন্তি চৈৱ যে ভক্ত্যা
মম মাহাত্ম্যমুত্তমম্॥ ৪ ॥ ন তেষাং দুষ্কৃতং কিঞ্চি
দ্দুষ্কৃতোত্থা ন চাপদঃ॥ ভৱিষ্যতি ন দাৰিদ্ৰ্যং ন চৈ
ৱেষ্টৱিয়োজনম্॥ ৫ ॥ শত্ৰুতো ন ভয়ং তস্য দস্যু

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

वधिष्यामि दुर्गमाख्यम्महासुरम् ॥४९॥ दुर्गादेवी
ति विख्यातन्तन्मे नाम भविष्यति । पुनश्चाहं यदा भी
मं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥५०॥ रक्षांसि भक्षयिष्या
मि मुनीनान्त्राणकारणात् । तदा माम्मुनयस्सर्व्वे
स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्त्तयः ॥५१॥ भीमादेवीति विख्यात
न्तन्मे नाम भविष्यति ॥४२॥ तदाहम्भ्रामरं रूपं कृत्वा
सङ्ख्येयषट्पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महा
सुरम् ॥५३॥ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति स
र्व्वतः । इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति॥५४॥
तदा तदावतीर्य्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥५५॥

इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमा
हात्म्ये नारायणीस्तुतिः॥ ॥११॥ ॥ देव्युवा
च॥१॥ एभिः स्तवैश्च मान्नित्यं स्तोष्यते यस्समाहि
तः । तस्याहं सकलां बाधां शमयिष्याम्यसंशयम् ॥२॥
मधुकैटभनाशञ्च महिषासुरघातनम् । कीर्त्तयि
ष्यन्ति ये तद्वद्वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥३॥ अष्टम्यां च चतु
र्द्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः । श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या
मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥४॥ न तेषां दुष्कृतं किञ्चि
द्दुष्कृतोत्था न चापदः । भविष्यति न दारिद्र्यं न चै
वेष्टवियोजनम् ॥५॥ शत्रुतो न भयन्तस्य दस्यु

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

তোবানরাজতঃ॥নশস্ত্রানলতোয়োঘাৎকদাচিৎসম্ভ
বিষ্যতি॥৬॥তস্মান্মমৈতন্মাহাত্ম্যংপঠিতব্যংসমা
হিতৈঃ॥শ্রোতব্যঞ্চসদাভক্ত্যাপরংস্বস্ত্যয়নংমহৎ॥
৭॥উপসর্গানশেষাংস্তুমহামারীসমুদ্ভবান্॥ত
থাত্রিবিধমুৎপাতংমাহাত্ম্যংশময়েন্মম॥৮॥যত্রৈ
তৎপঠ্যতেসম্যঙ্নিত্যমায়তনেমম॥সদানতদ্বিমোক্ষ্যা
মিসান্নিধ্যন্তত্রমেস্থিতম্॥৯॥বলিপ্রদানেপূজা
য়ামগ্নিকার্য্যেমহোৎসবে॥সর্ব্বংমমৈতচ্চরিতমুচ্চার্য্যং
শ্রাব্যমেবচ॥১০॥জানতাজানতাবাপিবলিপূজান্ত
থাকৃতাম্॥প্রতীক্ষিষ্যাম্যহংপ্রীত্যাবহ্নিহোমন্তথাকৃ
তম্॥১১॥শরৎকালেমহাপূজাক্রিয়তেযাচবার্ষিকী॥
তস্যাম্মমৈতন্মাহাত্ম্যংশ্রুত্বাভক্তিসমন্বিতঃ॥১২॥সর্ব্বা
বাধাবিনির্ম্মুক্তোধনধান্যসুতান্বিতঃ॥মনুষ্যোমৎপ্র
সাদেনভবিষ্যতিনসংশয়ঃ॥১৩॥শ্রুত্বামমৈতন্মাহা
ত্ম্যংতথাচোৎপত্তয়ঃশুভাঃ॥পরাক্রমঞ্চযুদ্ধেষুজায়
তেনির্ভয়ঃপুমান্॥১৪॥রিপবঃসংক্ষয়ংযান্তিকল্যা
ণঞ্চোপপদ্যতে॥নন্দতেচকুলংপুংসাম্মাহাত্ম্যম্ম
মশৃণ্বতাম্॥১৫॥শান্তিকর্ম্মণিসর্ব্বত্রতথাদুঃস্বপ্ন
দর্শনে॥গ্রহপীড়াসুচোগ্রাসুমাহাত্ম্যংশৃণুয়ান্মম॥
১৬॥উপসর্গাঃশমংযান্তিগ্রহপীড়াশ্চদারুণাঃ॥দুঃস্ব

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

तो वा न राजतः । न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भ
विष्यति ॥६॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समा
हितैः । श्रोतव्यञ्च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत्॥
७॥ उपसर्गानशेषाँस्तु महामारीसमुद्भवान्। त
था त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥८॥ यत्रै
तत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम । सदा न तद्विमोक्ष्या
मि सान्निध्यन्तत्र मे स्थितम् ॥९॥ बलिप्रदाने पूजा
यामग्निकार्य्ये महोत्सवे । सर्व्वं ममैतच्चरितमुच्चार्य्यं
श्राव्यमेव च ॥१०॥ जानताजानता वापि बलिपूजान्त
थाकृताम् । प्रतीक्षिष्याम्यहम्प्रीत्या वह्निहोमन्तथा कृ
तम्॥११॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्याम्ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः॥१२॥ सर्व्वा
बाधाविनिर्म्मुक्तो धानधान्यसुतान्वितः । मनुष्यो मत्प्र
सादेन भविष्यति न संशयः ॥१३॥ श्रुत्वा ममैतन्माहा
त्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः । पराक्रमञ्च युद्धेषु जाय
ते निर्ब्भयः पुमान् ॥१४॥ रिपवस्संक्षयं यान्ति कल्या
णं चोपपद्यते । नन्दते च कुलम्पुंसाम्माहात्म्यम्म
म शृण्वताम्॥१५॥ शान्तिकर्म्मणि सर्व्वत्र तथा दुस्स्वप्न
दर्शने । ग्रहपीड़ासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम॥
१६॥ उपसर्गाश्शमय्याँन्ति ग्रहपीड़ाश्च दारुणाः । दुस्स्व

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

দুঃস্বপ্নং চ নৃভিৰ্দৃষ্টং সুস্বপ্নমুপজায়তে ॥১৭॥ বালগ্রহা
ভিভূতানাং বালানাং শান্তিকাৰকম্ ॥ সংঘাতভে
দে চ নৃণাং মৈত্রীকৰণমুত্তমম্ ॥১৮॥ দুৰ্বৃত্তা
নামশেষাণাং বলহানিকৰং পৰম্ ॥ ৰক্ষোভূতপি
শাচানাং পঠনাদেৱ নাশনম্ ॥১৯॥ সৰ্বং মমৈত
ন্মাহাত্ম্যং মম সন্নিধিকাৰকম্ ॥ পশুপুষ্পাৰ্ঘ্যধূপৈ
শ্চ গন্ধদীপৈস্তথোত্তমৈঃ ॥২০॥ বিপ্রাণাং ভোজনৈ
ৰ্হোমৈঃ প্রোক্ষণীয়ৈৰহৰ্নিশম্ ॥ অন্যৈশ্চ বিবি
ধৈৰ্ভোগৈঃ প্রদানৈৰ্বৎসৰেণ যা ॥২১॥ প্রীতিৰ্মে
ক্রিয়তে সাস্মিন্ সকৃৎসুচৰিতে শ্রুতে ॥ শ্রুতং হৰতি
পাপানি তথাৰোগ্যং প্রযচ্ছতি ॥২২॥ ৰক্ষাং কৰোতি
ভূতেভ্যো জন্মনাং কীৰ্ত্তনং মম ॥ যুদ্ধেষু চৰিতং যন্মে
দুষ্টদৈত্যনিবৰ্হণম্ ॥২৩॥ তস্মিঞ্ছ্রুতে বৈৰিকৃত
ম্ভয়ং পুংসাং ন জায়তে ॥ যুষ্মাভিঃ স্তুতয়ো যাশ্চ
যাশ্চ ব্রহ্মৰ্ষিভিঃ কৃতাঃ ॥২৪॥ ব্রহ্মণা চ কৃতাস্তা
স্তু প্রযচ্ছন্তি শুভাং মতিম্ ॥ অৰণ্যে প্রান্তৰে বাপি দাৱা
গ্নিপৰিৱাৰিতঃ ॥২৫॥ দস্যুভিৰ্বা বৃতঃ শূন্যে গৃহী
তো বাপি শত্রুভিঃ ॥ সিংহব্যাঘ্রানুযাতো বা বনে বা বন
হস্তিভিঃ ॥২৬॥ ৰাজ্ঞা ক্রুদ্ধেন চাজ্ঞপ্তো বধ্যো বন্ধগ
তোঽপি বা ॥ আঘূৰ্ণিতো বা বাতেন স্থিতঃ পোতে

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

प्नञ्च नृभिर्द्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥१७॥ बालग्रहा
भिभूतानाम्बालानां शान्तिकारकम् । संघातभे
दे च नृणाम्मैत्रीकरणमुत्तमम्॥१८॥ दुर्वृत्ता
नामशेषाणां बलहानिकरं परम् । रक्षोभूतपि
शाचानां पठनादेव नाशनम् ॥१९॥ सर्व्वम्ममैत
न्माहात्म्यम्मम सन्निधिकारकम् । पशुपुष्पार्घधूपै
श्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥२०॥ विप्राणाम्भोज
नैर्होमै प्रोक्षणीयैरहर्न्निशम् । अन्यैश्च विवि
धैर्ब्भोगै प्रदानैर्व्वत्सरेण या ॥२१॥ प्रीतिर्म्मे
क्रियते सास्मिन्त्सकृत्सुचरिते श्रुते । श्रुतं हरति
पापानि तथारोग्यं प्रयच्छति ॥२२॥ रक्षाङ्करोति
भूतेभ्यो जन्मनाङ्कीर्तनम्मम ॥ युद्धेषु चरितं यन्मे
दुष्टदैत्यनिवर्हणम्॥२३॥ तस्मिञ्छ्रुतं वैरिकृत
म्भयम्पुंसान्न जायते ॥ युष्माभिस्तुतयो याश्च
याश्च ब्रह्मर्षिभिष्कृताः ॥२४॥ ब्रह्मणा च कृतास्ता
स्तु प्रयच्छन्ति शुभाम्मतिम् । अरण्ये प्रान्तरे वापि दावा
ग्निपरिवारितः ॥२५॥ दस्युभिर्व्वा वृतश्शून्ये गृही
तो वापि शत्रुभिः । सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वन
हस्तिभिः ॥२६॥ राज्ञा क्रुद्धेन वाज्ञप्तो वध्यो बन्धग
तोपि वा । आघूर्ण्णितो वा वातेन स्थितः पोते

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

মহার্ণবে॥২৭॥ পতৎসু চাপি শস্ত্রেষু সংগ্রামে ভৃশ-
দারুণে। সর্বাবাধাসু ঘোরাসু বেদনাভ্যর্দিতো
পি বা॥২৮॥ স্মরন্মমৈতচ্চরিতং নরো মুচ্যেত স-
ঙ্কটাৎ। মম প্রভাবাৎসিংহাদ্যা দস্যবো বৈরিণস্ত-
থা॥২৯॥ দূরাদেব পলায়ন্তে স্মরতশ্চরিতং ম-
ম॥৩০॥ ঋষিরুবাচ॥৩১॥ ইত্যুক্ত্বা সা ভগবতী চণ্ডি-
কা চণ্ডবিক্রমা। পশ্যতামেব দেবানাং তত্রৈবান্তরধীয়ত।
৩২॥ তেপি দেবা নিরাতঙ্কাঃ স্বাধিকারান্যথা পুরা। য-
জ্ঞভাগভুজঃ সর্বে চক্রুর্বিনিহতারয়ঃ॥৩৩॥ দৈত্যাশ্চ দে-
ব্যা নিহতে শুম্ভে দেবরিপৌ যুধি। জগদ্বিধ্বংসিনি তস্-
মিন্মহোগ্রেতুলবিক্রমে॥৩৪॥ নিশুম্ভে চ মহাবীর্যে
শেষাঃ পাতালমাযযুঃ॥ এবং ভগবতী দেবী সা নিত্যাপি
পুনঃ পুনঃ॥৩৫॥ সম্ভূয় কুরুতে ভূপ জগতঃ পরিপা-
লনম্। তয়ৈতন্মোহ্যতে বিশ্বং সৈব বিশ্বং প্রসূয়তে।৩৬॥
সা যাচিতা চ বিজ্ঞানং তুষ্টা ঋদ্ধিং প্রযচ্ছতি। ব্যাপ্তং ত-
য়ৈতৎসকলং ব্রহ্মাণ্ডং মনুজেশ্বর॥৩৭॥ মহাকাল্যা
মহাকালে মহামারীস্বরূপয়া। সৈব কালে মহামা-
রী সৈব সৃষ্টির্ভবত্যজা॥৩৮॥ স্থিতিং করোতি ভূ-
তানাং সৈব কালে সনাতনী। ভবকালে নৃণাং সৈব
লক্ষ্মীর্বৃদ্ধিপ্রদা গৃহে॥৩৯॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

महार्णवे ॥२७॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु स ामे भृश
दारुणे। सर्व्वबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्द्दितो
पि वा ॥२८॥ स्मरन्ममैतच्चरितन्नरो मुच्येत स
ङ्कटात्। मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्त
था ॥२९॥ दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितम्म
म ॥३०॥ ऋषिरुवाच ॥३१॥ इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डि
का चण्डविक्रमा ॥ पश्यतामेव देवानान्तत्रैवान्तरधीयत
३२॥ तेपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा॥ य
ज्ञभागभुजस्सर्व्वे चक्रुर्व्विनिहतारयः॥३३॥ दैत्याश्च दे
व्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥ जगद्विध्वंसिनिस्त
स्मिन्महोग्रेतुलविक्रमे ॥३४॥ निशुम्भे च महावीर्य्ये
शेषा पातालमाययुः ॥ एवं भगवती देवी सा नित्यापि
पुनः पुनः ॥३५॥ सम्भूय कुरुते भूप जगत परिपा
लनम् ॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते॥३६॥
सा याचिता च विज्ञानन्तुष्टा ऋद्धिम्प्रयच्छति॥ व्याप्तन्त
यैतत्सकलम्ब्रह्माण्डम्मनुजेश्वर॥३७॥ महाकाल्या
महाकाले महामारीस्वरूपया ॥ सैव काले महामा
री सैव सृष्टिर्भवत्यजा॥३८॥ स्थितिङ्करोति भू
तानां सैव काले सनातनी ॥ भवकाले नृणां सै
व लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ॥३९॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

সৈবাভাবে তথালক্ষ্মীৰ্ব্বিনাশায়োপজায়তে৷৷ স্তু
তা সম্পূজিতা পুষ্পৈৰ্গন্ধধূপাদিভিস্তথা৷৷৪০৷৷ দদা
তি বিত্তং পুত্ৰাংশ্চ মতিন্ধৰ্ম্মে তথাশুভাম্‌৷৷৪১৷৷
ইতি মাৰ্কণ্ডেয়পুৰাণে সাৱৰ্ণিকে মন্বন্তৰে দেৱী
মাহাত্ম্যে দেৱীস্তৱম্‌৷৷১২৷৷ ৷৷ ঋষিৰুৱা

চ৷৷১৷৷ এতত্তে কথিতং ৰাজন্দেৱীমাহাত্ম্যমুত্তমম্‌
এৱম্প্ৰভাৱা সা দেৱী যয়েদং ধাৰ্য্যতে জগত্‌৷৷২৷৷ বি
দ্যা তথৈৱ ক্ৰিয়তে ভগৱদ্বিষ্ণুমায়য়া৷ তয়াত্বমে
ষ বৈশ্যশ্চ তথৈৱান্যে বিবেকিনঃ৷৷৩৷৷ মোহ্যন্তে
মোহিতাশ্চৈৱ মোহমেষ্যন্তি চাপৰে৷ তামুপৈহি

মহাৰাজ শৰণম্পৰমেশ্বৰীম্‌৷৷৪৷৷ আৰাধিতা সৈৱ
নৃণাং ভোগস্বৰ্গাপৱৰ্গদা৷৷৫৷৷ মাৰ্কণ্ডেয় উৱাচ৷৷
৬৷৷ ইতি তস্য ৱচঃ শ্ৰুত্বা সুৰথঃ স নৰাধিপঃ৷৷৭৷৷ প্ৰ
ণিপত্য মহাভাগন্তমৃষিং সংশিতব্ৰতম্‌৷ নিৰ্ব্বিণ্ণো
তিমমত্বেন ৰাজ্যাপহৰণেন চ৷৷৮৷৷ জগাম সদ্যস্ত

পসে স চ বৈশ্যো মহামুনে৷ সন্দৰ্শনাৰ্থমম্বায়া ন
দীপুলিনসংস্থিতঃ৷৷৯৷৷ স চ বৈশ্যস্তপস্তেপে দেৱী
সূক্তম্পৰং জপন্‌৷ তৌ তস্মিন্পুলিনে দেৱ্যাঃ কৃ
ত্বা মূৰ্ত্তিম্মহীময়ীম্‌৷৷১০৷৷ অৰ্হণাঞ্চক্ৰতুস্তস্যাঃ
পুষ্পধূপাগ্নিতৰ্পণৈঃ৷৷ নিৰাহাৰৌ যতাহাৰৌ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

सैवाभावे तथालक्ष्मीर्व्विनाशायोपजायते।। स्तु
ता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।।४०।। ददा
ति वित्तं पुत्राँश्च मतिन्धर्मे तथा शुभाम् ।।४१।। ।।
इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी
माहात्म्ये देवीवाक्यम् ।।१२।। ।। ।। ऋषिरुवा
च ।।१।। एतत्ते कथितं राजन्देवीमाहात्म्यमुत्तमम्
एवम्प्रभावा सा देवी ययेदन्धार्य्यते जगत् ।।२।। वि
द्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया। तया त्वमे
ष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ।।३।। मोह्यन्ते
मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे । तामुपैहि
महाराज शरणं परमेश्वरीम् ।।४।। आराधिता सैव
नृणाम्भोगस्वर्गापवर्गदा ।।५।। मार्कण्डेय उवाच ।।
।।६।। इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथस्स नराधिपः।।७।। प्र
णिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम् । निर्विण्णो
तिममत्वेन राज्यापहरणेन च।।८।। जगाम सद्यस्त
पसे स च वैश्यो महामुने । सन्दर्शनार्थमम्बाया न
दीपुलिनसंस्थितः ।।९।। स च वैश्यस्तपस्तेपे देवी
सूक्तम्परञ्जपन् । तौ तस्मिन्पुलिने देव्या कृ
त्वा मूर्तिं महीमयीम् ।।१०।। अर्हणाञ्चक्रतुस्तस्या
पुष्पधूपाग्नितर्पणैः । निराहारौ यताहारौ

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

তন্মনস্কৌ সমাধিস্তৌ ॥ ১১ ॥ দদতুস্তৌ বলিঞ্চৈৱ
নিজগাত্ৰাসৃগুক্ষিতম্ ॥ এৱং সমাৰাধয়তোস্ত্ৰি
ভিৰ্ব্বৰ্ষৈৰ্যতাত্মনোঃ ॥ ১২ ॥ পৰিতুষ্টা জগদ্ধাত্ৰী
প্ৰত্যক্ষং প্ৰাহ চণ্ডিকা ॥ ১৩ ॥ দেব্যুৱাচ ॥ ১৪ ॥
যৎপ্ৰাৰ্থ্যতে ত্বয়া ভূপ ত্বয়া চ কুলনন্দন ॥ মত্তস্তৎ
প্ৰাপ্যতাং সৰ্ব্বং পৰিতুষ্টা দদামি তৎ ॥ ১৫ ॥ মাৰ্কণ্ডেয় উ
ৱাচ ॥ ১৬ ॥ ততো ৱব্ৰে নৃপো ৰাজ্যমৱিভ্ৰংশ্যন্যজন্মনি ॥
অত্ৰৈৱ চ নিজং ৰাজ্যং হতশত্ৰুবলং বলাৎ ॥ ১৭ ॥ সোঽপি
ৱৈশ্যস্ততো জ্ঞানং ৱব্ৰে নিৰ্ব্বিণ্ণমানসঃ ॥ মমেত্যহমিতি
প্ৰাজ্ঞঃ সঙ্গৱিচ্যুতিকাৰকম্ ॥ ১৮ ॥ দেব্যুৱাচ ॥ ১৯ ॥
স্বল্পৈৰহোভিৰ্নৃপতে স্বং ৰাজ্যং প্ৰাপ্স্যতে ভৱান্ ॥ ২০ ॥ হ
ত্বা ৰিপূনস্খলিতং তৱ তত্ৰ ভৱিষ্যতি ॥ ২১ ॥ মৃতশ্চ ভূয়
সংপ্ৰাপ্য জন্ম দেৱাদ্বিৱস্বতঃ ॥ ২২ ॥ সাৱৰ্ণিকো মনু
ৰ্নাম ভৱান্ ভুৱি ভৱিষ্যতি ॥ ২৩ ॥ ৱৈশ্যৱৰ্য্য ত্বয়া য
শ্চ ৱৰোঽস্মত্তোঽভিৱাঞ্ছিতঃ ॥ ২৪ ॥ তং প্ৰযচ্ছামি সংসি
দ্ধ্যৈ তৱ জ্ঞানং ভৱিষ্যতি ॥ ২৫ ॥ মাৰ্কণ্ডেয় উৱাচ ॥ ২৬ ॥
ইতি দত্বা তয়োৰ্দ্দেৱী যথাভিলষিতং ৱৰম্ ॥ বভূৱান্ত
ৰ্হিতা সদ্যো ভক্ত্যা তাভ্যামভিষ্টুতা ॥ ২৭ ॥ এৱং দেৱ্যা ৱ
ৰং লব্ধ্বা সুৰথঃ ক্ষত্ৰিয়ৰ্ষভঃ ॥ সূৰ্য্যাজ্জন্ম সমাসাদ্য
সাৱৰ্ণিৰ্ভৱিতা মনুঃ ॥ ২৮ ॥ সাৱৰ্ণিৰ্ভৱিতা মনুঃ ॥ ২৯ ॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

तन्मनस्कौ समाहितौ ॥११॥ ददतुस्तौ बलिञ्चैव
निजगात्रासृगुक्षितम्॥ एवं समाराधयतोस्त्रि
भिर्व्वर्षैर्य्यतात्मनोः ॥१२॥ परितुष्टा जगद्धात्री
प्रत्यक्षम्प्राह चण्डिका ॥१३॥ देव्युवाच ॥१४॥
यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन । मत्तस्त
त्प्रार्थ्यतां सर्व्वं परितुष्टा ददामि ते ॥१५॥ मार्क्कण्डेय उ
वाच ॥१६॥ ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥१७॥ सोपि
वैश्यस्ततोज्ञानम्वव्रे निर्विण्णमानसः । ममेत्यहमिति
प्राज्ञस्सङ्गविच्युतिकारकम् ॥१८॥ देव्युवाच ॥१९॥
स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥२०॥ ह
त्वा रिपूनस्खलितन्तव तत्र भविष्यति॥२१॥ मृतश्च भूय
स्संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥२२॥ सावर्णिको मनु
र्न्नाम भवान् भुवि भविष्यति ॥२३॥ वैश्यवर्य्य त्वया य
श्च वरोस्मत्तोभिवाञ्छितः ॥२४॥ तम्प्रयच्छामि संसि
द्ध्यै तव ज्ञानम्भविष्यति ॥२५॥ मार्क्कण्डेय उवाच ॥२६॥
इति दत्वा तयोर्द्देवी यथाभिलषितं वरम् । बभूवान्त
र्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥२७॥ एवन्देव्या व
रं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः । सूर्याज्जन्म समासाद्य
सावर्णिर्भ्भविता मनुः ॥२८॥ सावर्णिर्भविता मनुः॥२९॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

(১২৮)

ইতিমার্কণ্ডেয়পুরাণেসাবর্ণিকেমন্বন্তরেদেবী
মাহাত্ম্যেসম্পূর্ণম্‌॥ ॥ ৫ ॥ ওঁযদক্ষরবর্ণা
দি॥ ॥ ৯ ॥ ॥ ৯ ॥ ॥ ৯ ॥ ॥ ৯॥
শাকেবেদদন্তুজাননাগধরণীসম্মিতেশিতেশ্রীরা
ণেনরমীমতেমক্কীনেশুভপ্রাসরে॥ ১ ॥ নিখিল্ল

প্রসাদেশীঘ্রভুবনাথেনধীমতা॥ ভ্রাতেশ্রীমণি
নাথায়দেবীমাহাত্ম্যমতমভূৎ॥ ২ ॥ ॥ ৬ ॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

इति मार्क्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्यं सम्पूर्णम् ।। ।।१३।।ॐ यदक्षरेत्या दि०[1]।। ।। ।। ।। ।। ।। ।।

शाके वेद भुजानागधरणीसम्मिते शिते।। श्राव णे नवमीयुक्ते मङ्गले शुभवासरे।।१।। लिखित्वा

प्रददे शीघ्रं भवनाथेन धीमता।। भ्रात्रे श्रीमुक्ति नाथाय देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ।।२।। ।। ।। ।।

---

१.यदक्षरपदभ्रष्टम्मात्राहीनञ्च यद्भवेत्।
तत्सर्व्वं क्षम्यतान्देवि कस्य वै निश्चलम्मनः।।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

ওঁ নমস্তস্যৈ ॥ অহং রুদ্রেভির্বসুভিশ্চরাম্যহমা
দিত্যৈরুত বিশ্বদেবৈঃ ॥ অহং মিত্রাবরুণোভা বি
ভর্ম্যহমিন্দ্রাগ্নী অহমশ্বিনোভা ॥ ১ ॥ অহং সোম
মাহনসং বিভর্ম্যহং ত্বষ্টারমুত পূষণং ভগম্ ॥ অ
হং দধামি দ্রবিণং হবিষ্মতে সুপ্রাব্যে যজমানায় সু
ন্বতে ॥ ২ ॥ অহং রাষ্ট্রী সঙ্গমনী বসূনাং চিকিতু
ষী প্রথমা যজ্ঞিয়ানাম্ ॥ তাং মা দেবা ব্যদধুঃ পু
রুত্রা ভূরিস্থাত্রাং ভূর্য্যাবেশয়ন্তীম্ ॥ ৩ ॥ ময়া সো
অন্নমত্তি যো বিপশ্যতি যঃ প্রাণিতি য ঈং শৃণো
ত্যুক্তম্ ॥ অমন্তবো মাং ত উপক্ষিয়ন্তি শ্রুধি শ্রুত
শ্রদ্ধিবং তে বদামি ॥ ৪ ॥ অহমেব স্বয়মিদং বদামি জুষ্টং দে
বেভিরুত মানুষেভিঃ ॥ যং কাময়ে তং তমুগ্রং কৃণোমি
তং ব্রহ্মাণং তমৃষিং তং সুমেধাম্ ॥ ৫ ॥ অহং রুদ্রায়
ধনুরাতনোমি ব্রহ্মদ্বিষে শরবে হন্তবা উ ॥ অহং জ
নায় সমদং কৃণোম্যহং দ্যাবাপৃথিবী আবিবেশ ॥
৬ ॥ অহং সুবে পিতরমস্য মূর্দ্ধন্মম যোনিরপ্স্বন্তঃ ॥ স
মুদ্রে ততো বিতিষ্ঠে ভুবনানি বিশ্বোতামূং দ্যাং বর্ষ্ম
ণোপস্পৃশামি ॥ ৭ ॥ অহমেব বাত ইব প্রবা
ম্যারভমাণা ভুবনানি বিশ্বা ॥ পরো দিবা পর এ
না পৃথিব্যৈতাবতী মহিনা সম্বভূব ॥ ৮ ॥

ইতি দেবীসূক্তং সম্পূর্ণম্ ॥ ❁ ॥ ওঁ যদক্ষরমাদি ॥

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

## ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम्

नमस्तस्यै।। ॐ अहं रुद्रेभिर्व्वसुभिश्चराम्यहमा
दित्यैरुत विश्वदेवैः । अहम्मित्रावरुणोभावि
भर्म्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ।।१।। अहं सोम
माहनसम्बिभर्म्यहन्त्वष्ठारमुत पूषणम्भगम् । अ
हन्दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सु
न्वते ।।२।। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनाञ्चिकितु
षी प्रथमा यज्ञियानाम् । ताम्मा देवा व्यदधुः पु
रुत्रा भूरिस्थात्रम्भूर्य्यावेशयन्तीम् ।।३।। मया सो
अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणो
त्युक्तम् । अमन्तवोमान्तउपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत
श्रद्धिवन्ते वदामि ।।४।। अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टन्देवे
भिरुतमानुषेभिः ।। यङ्कामये तन्तमुग्रङ्कृणोमि
तम्ब्रह्माणं तमृषिन्तं सुमेधाम् ।।५।। अहं रुद्राय
धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ । अहञ्ज
नाय समदङ्कृणोम्यहन्द्यावापृथिवी आविवेश
।।६।। अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वन्तः स
मुद्रे । ततो वितिष्ठे भुवनानि विश्वोतामून्द्यां वर्ष्म
णोपस्पृशामि ।।७।। अहमेव वात इव प्रवा
म्यारभमाणा भुवनानि विश्वा । परो दिवा पर ए
ना पृथिव्यै तावती महिना सम्बभूव ।।८।। इ
ति देवीसूक्तं सम्पूर्णम्।। ॐ यदक्षरेत्यादि।।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

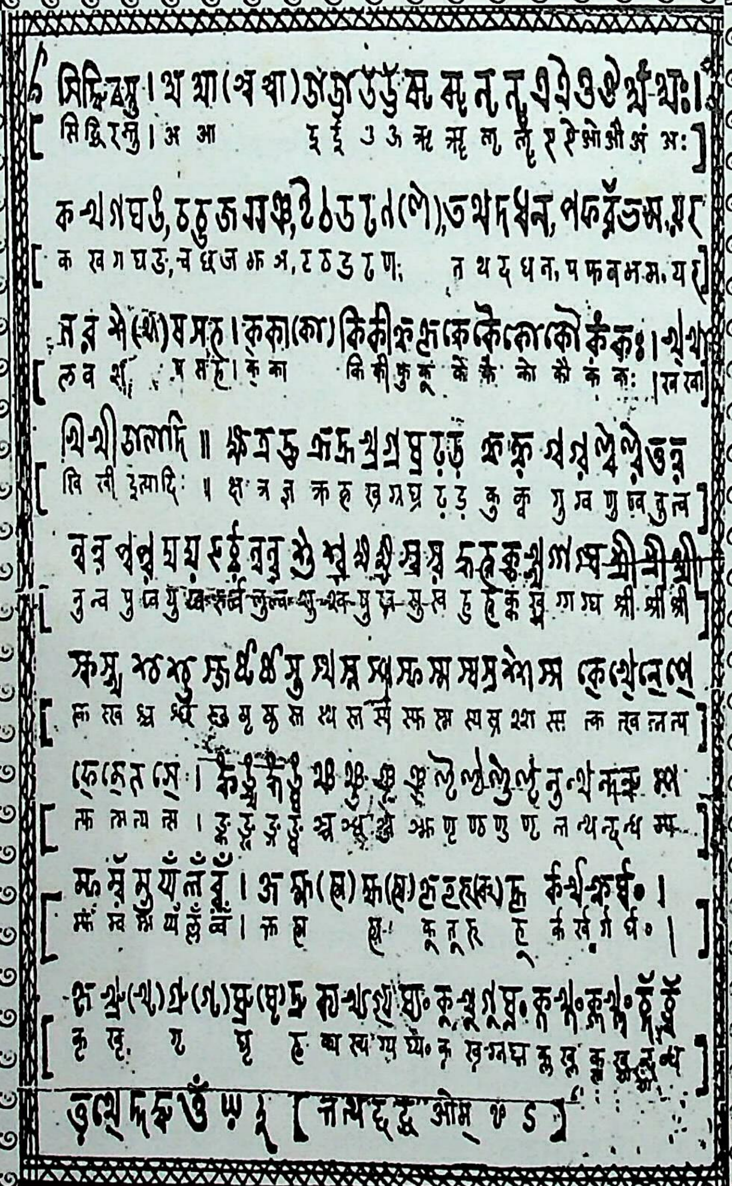


CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

शक्ति-उपासनाक परम्परामे दुर्गासप्तशतीक अनन्य महत्त्व अछि। मार्कण्डेय-पुराण सँ उद्धृत 13 अध्यायक ई देवीचरित कात्यायनी- तन्त्र आ चिदम्बर संहितामे उक्त मन्त्र विभाग सँ विलसित भए सात सए मन्त्रक रूपमे सप्तशतीक स्वरूपमे आएल।

दुर्गासप्तशतीक तीनू चरित सृष्टिक विकास सँ सम्बद्ध अछि। प्रथम चरितमे 'योगनिद्रा' कें सृष्टिक उत्प्रेरिकाक रूपमे मानि ब्रह्मा हुनक स्तुति करैत छथि। दोसर चरितमे सृष्टिक प्रारम्भिक स्थिति अछि, जतए देवी शरीरधारण कए एकसरे महिषासुर-वध कए देवता लोकनिक रक्षा करैत छथि। तेसर चरितमे सृष्टि पूर्ण विकसित भए गेल अछि। एतए अवतारवादक अवधारणा पुष्ट अछि। देवीक विभिन्न स्वरूप आ अवतार ग्रहण कए शाकम्भरी, दुर्गा, भ्रामरी, रक्तदन्तिका आदि रूपमे विभिन्न दैत्यक संहारक कथा अछि।

देवीक एहि चरितत्रय सँ गुम्फित ई दुर्गासप्तशती अपनामे समग्रके समाहित कएने अछि। 'दुर्गाभक्तितरंगिणी'मे महाकवि विद्यापतिक ई दुर्गासप्तशतीक श्रवण संकल्प वाक्य एकर महत्त्वक घोष करैत अछि-

ॐ अद्य सकलदुष्कृतनिवृत्तिदुष्कृतोत्थ-समस्तापद्रहितत्वदारिद्र्यानुष्पत्तीष्टवियो-गराहित्यसार्वदिकशत्रुदस्युराजशस्त्रानल-तोयौघहेतुकभयाभावसर्वबाधाविनिर्मुक्तत्व धनधान्यसुतान्वितत्वकामो मार्क्कण्डेय-पुराणान्तर्गतसावर्णिः सूर्य्यतनय इत्यादि सावर्णिर्भ- वितामनुरित्यन्तं दुर्गामाहात्म्यमहं श्रोष्यामि।

स्वयं पाठ करबाक स्थितिमे ''दुर्गामाहात्म्यपाठमहं करिष्ये''। ई ऊह करी।

ॐ नमश्चण्डिकायै

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

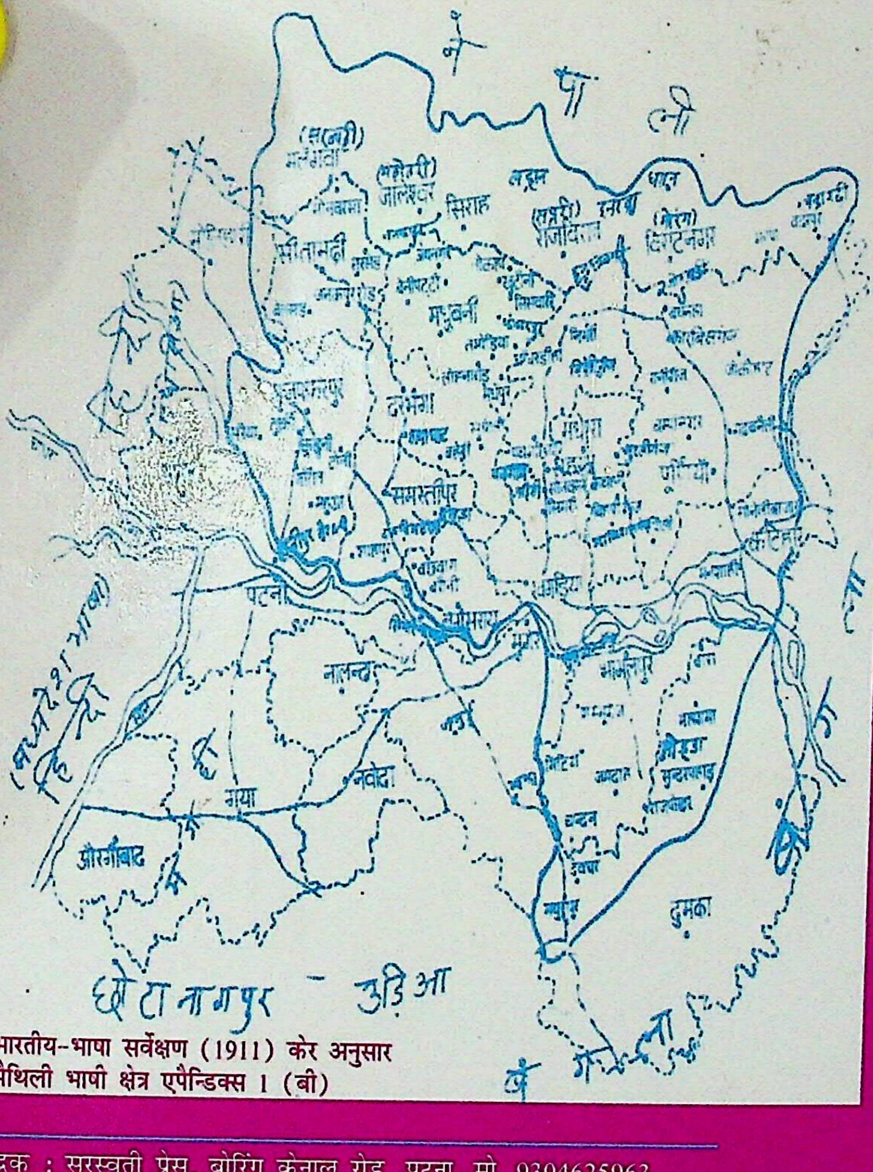


भारतीय-भाषा सर्वेक्षण (1911) केर अनुसार
मैथिली भाषी क्षेत्र एपैन्डिक्स 1 (बी)

मुद्रक : सरस्वती प्रेस, बोरिंग केनाल रोड, पटना, मो. 9304625963